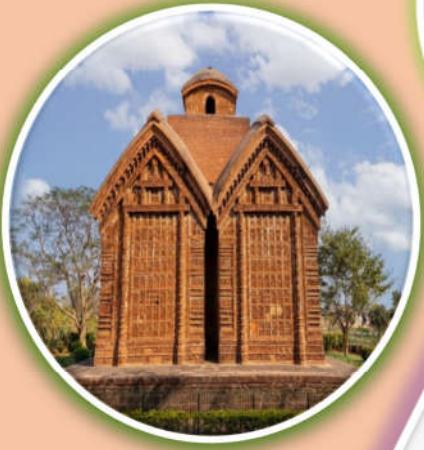




सोनार बांग्ला



राजभाषा पत्रिका



18वां अंक

वर्ष 2024-25



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2 गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाइट:- www.agwb.cag.gov.in ईमेल पता:- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in



सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका

18वां अंक

वर्ष 2024-25



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2 गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता -700 001

दूरभाष :-033 -2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाइट :- www.agwb.cag.gov.in

ई मेल पता:- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in

‘सोनार बांग्ला’ परिवार

संरक्षक

श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार

परामर्शदात्री समिति

श्री रनेन्दु सरकार, पूर्व वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)

श्री अवनीन्द्र कुमार राय, उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I एवं II)

श्री श्रीराज मधुकर वाणी, उप महालेखाकार (स्था.ले.प.विभाग एवं ए.एम.जी.-IV)

श्री शंकर लाल सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

संपादक मंडल

संपादक

श्री चंदन कुमार बढई, हिंदी अधिकारी

राजभाषा परिवार

श्रीमती प्रियदर्शिनी सिंह, हिंदी अधिकारी

श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सुकन्या दास, वरिष्ठ अनुवादक

श्री प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक

श्री रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक

श्री किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति के सदस्य

श्री प्रदीप घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विनय कुमार मेहता, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री चंदन कुमार बढई, हिंदी अधिकारी

श्रीमती प्रियदर्शिनी सिंह, हिंदी अधिकारी

डिजाइनिंग और लेआउट

ईडीपी अनुभाग

अस्वीकरण

लेखक/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति/संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा-I, पश्चिम बंगाल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदेश	पृष्ठ सं.
1	प्रधान महालेखाकार का संदेश	1
2	श्री रनेंदु सरकार पूर्व वरिष्ठ उप महालेखाकार का संदेश	2
3	श्री अवनींद्र कुमार राय उप महालेखाकार का संदेश	3
4	श्री श्रीराज मधुकर वाणी उप महालेखाकार का संदेश	4
5	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष) का संदेश	5
6	संपादकीय	6

18वां अंक में प्रकाशित की जानी वाली रचनाओं की सूची

क्र.सं.	रचनाओं के नाम	रचनाकार (सुश्री/श्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	लेखापरीक्षा की प्रक्रिया और महत्व	अवनींद्र कुमार राय, उपमहालेखाकार	7-10
2	पर्यावरण प्रदूषण: कारण और निवारण	श्रीराज मधुकर वाणी, उपमहालेखाकार	11-13
3	जैव प्रौद्योगिकी का भविष्य	शंकर लाल सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	14-17
4	वेब 3.0	गौरव कुमार मिश्रा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	18-20
5	हिंदी की बहुआयामी भूमिका	चंदन कुमार बढई, हिंदी अधिकारी	21-24
6	ई.एच.आर.एम.एस	शुभा दास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	25-27
7	तुम क्या कहोगे?	चंदन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28
8	चरनी फूल	स्मृति कुजूर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	29
9	मैं ठीक हूँ	ज़ाकी अहमद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-31
10	लिखूँ तो क्या लिखूँ	आर्य कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	32
11	वो आखिरी बार जब हम मिले	राजर्षि सामंत, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	33-36
12	सीख	प्रियदर्शिनी सिंह, हिंदी अधिकारी	37-40
13	सुनील छेत्री-एक जीवित किंवदंती	शुभाशीष दे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	41-45
14	बिष्णुपुर: कलात्मक उत्कृष्टता तथा टेराकोटा वास्तुकला का शहर	राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक	46-51
15	जल संकट	गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	52-54
16	इंसानियत की गुहार...समाज का सुधार	अरिंदम घटक, सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी	55
17	धरोहर	सुकन्या दास, वरिष्ठ अनुवादक	56-59
18	आधुनिक जीवन शैली और स्वास्थ्य समस्याएं	किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक	60-63
19	जलवायु परिवर्तन और उसका प्रभाव	राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक	64-66
20	हमें आज़ादी समझनी होगी	संदीप कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	67
21	बेटी	सुभाष प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	68
22	देश की आत्मा है हिन्दी	आशीष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	69-71
23	वाइज़ैग की डाइरी	चंदन बनर्जी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	72-76
24	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)	अस्मिता तिवारी, लेखापरीक्षक	77-80
25	केदारनाथ यात्रा का अनुभव	सुनीता शॉ, लेखापरीक्षक	81-85
26	क्रिकेट का सफर	रौनक रॉय, लेखापरीक्षक	86-88
27	जलवायु परिवर्तन	अर्जुन मंडल, लेखापरीक्षक	89-91
28	जीवन क्या है	नीरज कुमार सिन्हा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	92
29	एक नज़र में- दमकता दार्जिलिंग	शिलादित्य सिन्हा, लेखापरीक्षक	93-95
30	आधुनिक विज्ञान और मानव जीवन	प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक	96-100
31	पत्नी की अहमियत	सत्येन्द्र कुमार, आशुलिपिक	101-103
32	फैरीटेल	अर्णब पाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	104-106
33	बांग्ला लोकसंगीत एवं लोक संस्कृति	अमित कुमार घोष, लेखापरीक्षक	107-108
34	मेरी पहली पोस्टिंग	प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक	109-111
35	हिंदी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा	अमरेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	112-113
36	मृग तृष्णा	ओम प्रकाश चौधरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	114
37	हमारी माँ	सुरजीत घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	115
38	दो पल	शुभजित राय, लेखापरीक्षक	116
39	पत्रकारिता एवं संचार व्यवस्था	रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक	117-120
40	कश्मीर यात्रा	शुभजीत बनिक, लेखापरीक्षक	121-122
41	तत्काल टिकट	अमित कुजूर, लेखापरीक्षक	123-125

प्रधान महालेखाकार का संदेश



श्री विभुदत्त बसंतिया
प्रधान महालेखाकार

विभागीय पत्रिका “सोनार बांग्ला” का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति स्नेह, उत्साह एवं रुचि उत्पन्न करना है। यह पत्रिका उनकी सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति के लिए एक मंच उपलब्ध कराती है। मुझे विश्वास है कि ‘सोनार बांग्ला’ का यह अंक पाठकों के अपेक्षा के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण होगा।

मैं इस पत्रिका के रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। उनके प्रयासों से यह पत्रिका समृद्ध हुई है।

मैं “सोनार बांग्ला” के 18वें अंक प्रकाशन हेतु सभी को बधाई देता हूँ और इसकी निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।



श्री विभुदत्त बसंतिया
प्रधान महालेखाकार

संदेश



श्री रनेन्दु सरकार

पूर्व वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) से 351 के अंतर्गत भारत संघ के लिए राजभाषा का प्रावधान है। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा होने का गौरव प्राप्त है। यह भाषा देश के लगभग सभी भागों में बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इस प्रकार हिंदी भारत के सभी राज्यों, धर्मों, समुदायों, भाषाभाषियों आदि के बीच संपर्क सेतु का कार्य करती है। इस कार्यालय की राजभाषा पत्रिका “सोनार बांग्ला” का सफल प्रकाशन इसी दिशा में एक प्रयास है।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने में सक्षम सिद्ध होगी। पत्रिका के प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

आर. भगवत .

श्री रनेन्दु सरकार

पूर्व वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)



संदेश



श्री अवनीन्द्र कुमार राय
उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I एवं II)

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 18वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं हर्ष प्रकट करता हूँ। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाएँ देकर सहयोग करने वाले समस्त कार्मिक एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। अपने लेख को छपा देखना या अपने मन के भाव को अक्षरों में रूपांतरित होते देखने का आनंद ही कुछ अलग है।

इस पत्रिका का उद्देश्य लोगों के विचारों को राजभाषा में अभिव्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। यह पत्रिका कार्यालय कर्मियों का राजभाषा के प्रति न केवल लगाव अपितु उनके समर्पण को भी प्रदर्शित करती है।

आशा करता हूँ कि प्रति वर्ष इसी उत्साह एवं उपयोगी रचनाओं के साथ यह पत्रिका निरंतर प्रकाशित होती रहेगी।



अवनीन्द्र राय

श्री अवनीन्द्र कुमार राय
उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I एवं II)

संदेश



श्री श्रीराज मधुकर वाणी

उप महालेखाकार (स्था.ले.प.विभाग एवं ए.एम.जी.- IV)

कार्यालय की गृह पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 18 वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए हर्ष का विषय है। भारत सरकार द्वारा समय-समय पर राजभाषा के प्रोत्साहन कार्यक्रमों की दिशा में यह भी एक छोटा-सा प्रयास है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में इन कार्यालयीन पत्रिकाओं की अहम भूमिका है।

यह पत्रिका राजभाषा के प्रति कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के समर्पण की मनोदशा को दर्शाती है। यह कार्यालय "ग" क्षेत्र में स्थित होने के उपरांत भी प्रतिवर्ष एक नए उत्साह के साथ राजभाषा की पत्रिका का प्रकाशन करने में प्रयासरत है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्मिक राजभाषा हिन्दी में अपने अभिव्यक्ति तथा सृजनात्मकता को उजागर करने का पूरा प्रयास करते हैं।

यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में सरल हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए ताकि राजभाषा हिन्दी में काम करने में किसी कार्मिक को कठिनाई ना हो। राजभाषा की पत्रिका सभी कार्मिकों के बीच एक सेतु का काम करती है।

मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ कि उन्होंने इस पत्रिका के माध्यम से अपनी भावनाओं को राजभाषा हिन्दी में साझा किया। आप सभी से यही आशा है कि राजभाषा हिन्दी के प्रति आप अपनी निष्ठा को इसी प्रकार बनाए रखेंगे।

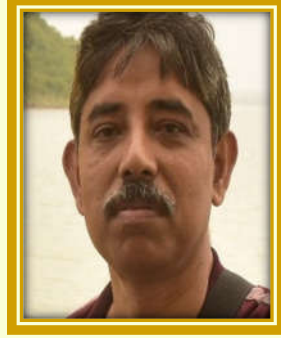


श्रीराज

श्री श्रीराज मधुकर वाणी

उप महालेखाकार (स्था.ले.प.विभाग एवं ए.एम.जी.- IV)

संदेश

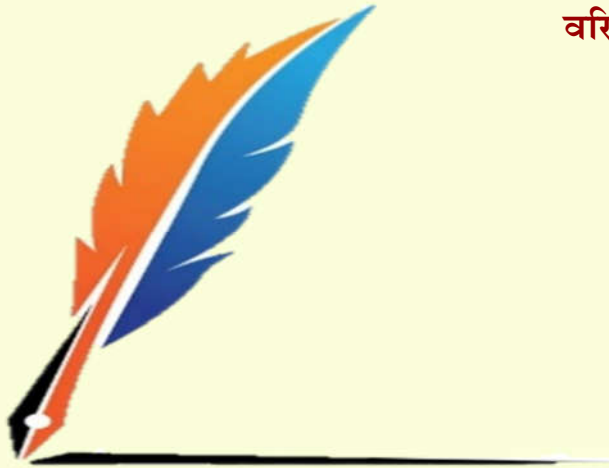


राजभाषा हिंदी के प्रति अधिकारी और कर्मचारियों में प्रेम और रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से “सोनार बांग्ला” पत्रिका के 18वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर पत्रिका प्रकाशन की मदद करने वाले सभी लोगों को हृदय से धन्यवाद। इस पत्रिक में मुख्य विषय के रूप में बंगाल के बिष्णुपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर प्रकाश डाला गया है। इस कार्यालय के उपमहालेखाकारगण तथा हिंदी प्रेमी अधिकारियों/कर्मचारियों के गुणवत्तापूर्ण रचनाएं पत्रिका में समाहित है। आशा है कि ज्ञान-विज्ञान तथा विविध विषयों पर लिखे लेख पाठकों को रुचिपूर्ण लगेगा।

मुझे विश्वास है कि पाठकों को विभिन्न रुचियों की कविताएँ, कहानियाँ, यात्रा वृत्तान्त आदि पसंद आएंगे। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

श्री शंकर लाल सरकार

श्री शंकर लाल सरकार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



संपादकीय



राजभाषा हिंदी की भूमिका केवल भाषा के स्तर तक सीमित नहीं है। हिंदी अब राष्ट्रीय सद्भाव तथा विविधता में एकता का पर्याय बन गई है। यह भाषा अपनी समरसता के कारण भारत के विविधतापूर्ण भाषायी क्षेत्रों के बीच संपर्क भाषा के रूप में दायित्व निर्वहण कर रही है।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में उठाए गए अनेक उद्यमों में एक इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सोनार बांग्ला' का प्रकाशन भी है। 'सोनार बांग्ला' का यह अंक समसामयिक विषयों पर गंभीर विमर्श तथा विविध रुचिकर, प्रेरक एवं ज्ञानप्रद लेखों के साथ आपके समक्ष उपस्थित है। लेखों के अलावा इस पत्रिका में कहानी, कविताएं, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण जैसी सभी साहित्यिक विधाओं पर रचनाएं उपलब्ध हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित हिंदीतर कार्मिकों की रचनाएं उनमें हिंदी के प्रति बढ़ती गहरी अभिरुचि को प्रतिबिंबित करती है।

यह पत्रिका निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। इसका श्रेय कार्यालय के समस्त लेखकों को दिया जाता है। उनके समर्थन और सार्थक प्रयास से ही पत्रिका का नियमित प्रकाशन संभव हो पाता है।

पुनः संपादक मंडल की ओर से मैं सभी लेखकों एवं प्रकाशन कार्य में मार्गदर्शन देने वाले अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। 'सोनार बांग्ला' के आगामी अंकों के संवर्धन हेतु आपके सुझाव एवं प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

श्री चंदन कुमार बड़ई
हिंदी अधिकारी

लेखापरीक्षा की प्रक्रिया और महत्व



श्री अवनींद्र कुमार राय
उप महालेखाकार

लेखापरीक्षा प्रक्रिया में निम्नलिखित 4 चरण शामिल हैं:

1. योजना
2. फील्डवर्क
3. रिपोर्टिंग
4. अनुपालन

योजना

- I. योजना चरण के दौरान, लेखापरीक्षा पक्षकारों के साथ संपर्क शुरू किया जाता है और ऑडिट किए गए क्षेत्र के आकार, जिम्मेदारियों और प्रक्रियाओं की समझ हासिल करने के लिए प्रासंगिक पृष्ठभूमि जानकारी एकत्र की जाती है। साथ ही इस चरण में, ऑडिट उद्देश्यों को परिभाषित किया जाता है और ऑडिट पद्धति एक ऑडिट कार्यक्रम के निर्माण के माध्यम से निर्धारित की जाती है, जो ऑडिट आयोजित करने और ऑडिट उद्देश्यों को पूरा करने का खाका है। ज्यादातर मामलों में, ऑडिट के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने के लिए विभाग और/या कार्य का जोखिम मूल्यांकन किया जाता है।
- II. ऑडिट के प्रकार और नियोजित ऑडिट कार्य की मात्रा के आधार पर, यूनिट के प्रमुख और ऑडिट में शामिल प्रशासनिक कर्मचारियों के साथ एक प्रवेश बैठक निर्धारित की जाती है। व्यक्तिगत बैठकों को प्राथमिकता दी जाती है, लेकिन यदि आवश्यक हो तो इसे टेलीफोन या अन्य तरीकों से पूरा किया जा सकता है।

प्रवेश बैठक में, निम्नलिखित होते हैं:

- क) ऑडिट के उद्देश्य और दायरे पर चर्चा की जाती है।
- ख) ऑडिट पद्धति और रिपोर्टिंग प्रक्रिया को समझाया जाता है।
- ग) अनुमानित समय और संसाधन आवश्यकताओं की पहचान की जाती है, कोई भी संभावित मुद्दे-छुट्टियाँ, समय सीमा, आदि जो ऑडिट को प्रभावित कर सकते हैं, उन्हें इस समय लाया जाता है।
- घ) ऑडिट या प्रक्रिया के बारे में किसी भी प्रश्न का उत्तर दिया जाता है।
- ङ) जोखिमों और मामलों के बारे में निविष्ट जिन्हें ऑडिट में शामिल किया जाना चाहिए, को प्रोत्साहित किया जाता है और यह इस बैठक और योजना चरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

फील्डवर्क

ऑडिट के मूल्यांकन चरण को फील्डवर्क कहा जाता है। इस चरण में आंतरिक नियंत्रण और अनुपालन की पर्याप्तता का आंकलन करना, लेनदेन, रिकॉर्ड और संसाधनों का परीक्षण करना और ऑडिट के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक अन्य प्रक्रियाएं शामिल हैं।

ऑडिट टीम को विभागीय कर्मियों के साथ साक्षात्कार आयोजित करने और विभागीय रिकॉर्ड और प्रथाओं की समीक्षा करने की आवश्यकता हो सकती है; हालाँकि, व्यवधानों को कम करने और ऑडिट प्रक्रिया को यथासंभव सुचारू बनाने के लिए ऑडिट पक्षकारों के साथ सहयोग करने के प्रयास किए जाते हैं।

किसी ऑडिट की अवधि उसके दायरे के आधार पर भिन्न-भिन्न होती है; सीमित दायरे के ऑडिट में केवल एक या दो सप्ताह लग सकते हैं जबकि व्यापक दायरे के ऑडिट में कई महीने लग सकते हैं। इसके अलावा, कर्मियों और रिकॉर्ड तक पहुंच और ऑडिट अनुरोधों के जवाबों की समयबद्धता भी ऑडिट की अवधि को प्रभावित कर सकती है।

पूरे ऑडिट के दौरान, ऑडिट पक्षकारों को नियमित स्थिति बैठकों और/या संचार के माध्यम से ऑडिट प्रक्रिया के बारे में सूचित किया जाता है। ऑडिट टीम ऑडिट टिप्पणियों, संभावित मुद्दों और प्रस्तावित सिफारिशों की पहचान होते ही उन पर चर्चा करने का हर संभव प्रयास करती है। कुछ उदाहरणों में, मूल कारण को निर्धारित करने या सत्यापित करने और मूल कारण को खत्म करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए ऑडिट पक्षकारों के साथ सीधे काम करना आवश्यक है।

रिपोर्टिंग

प्रत्येक ऑडिट का अंतिम परिणाम एक लिखित रिपोर्ट है जिसमें ऑडिट के दायरे और उद्देश्यों, परिणामों, सुधार के लिए सिफारिशों और ऑडिट क्लाइंट की प्रतिक्रियाओं और सुधारात्मक कार्य योजनाओं का विवरण होता है।

प्रारूप रिपोर्ट - ऑडिट रिपोर्ट आम तौर पर ड्राफ्ट के रूप में तैयार की जाती है और वितरण शुरू में क्षेत्र के तत्काल प्रबंधक तक सीमित होता है ताकि ऑडिट रिपोर्ट के आगे वितरण से पहले इसकी समीक्षा की जा सकती है।

यदि सिफारिशों की जाती हैं, तो ऑडिट क्लाइंट से निम्नलिखित विवरण देने वाली लिखित प्रतिक्रियाएँ मांगी जाती हैं:

समस्या और उसके मूल कारण को हल करने के लिए एक सुधारात्मक कार्य योजना, सुधारात्मक कार्रवाई को लागू करने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति, और एक अपेक्षित कार्यान्वयन तिथि।

जब अंतिम ऑडिट रिपोर्ट प्रशासन के उचित स्तर पर वितरित की जाती है तो इन प्रतिक्रियाओं को शामिल किया जाता है। प्राथमिकता स्तर के मुद्दों और सिफारिशों को लागू होने तक ऑडिट द्वारा रिपोर्ट किया जाता है और ट्रैक किया जाता है।

निर्गम बैठक - ऑडिट के समापन पर, ऑडिट क्लाइंट के ऑडिट परिणामों के बारे में किसी भी प्रश्न या समस्या को हल करने और अंतिम ऑडिट रिपोर्ट जारी होने से पहले किसी भी अन्य मुद्दे को हल करने का अवसर प्रदान करने के लिए एक निर्गम बैठक आयोजित की जाती है। भाग लेने वालों में आमतौर पर ऑडिट टीम, ऑडिट इकाई का प्रबंधन और साथ ही अन्य लोग शामिल होते हैं जिन्हें ऑडिट ग्राहक आमंत्रित करना चाहता है।

निर्गम बैठक के बाद और एक बार ऑडिट क्लाइंट द्वारा प्रतिक्रियाएँ और टिप्पणियाँ प्रदान करने के बाद, अंतिम रिपोर्ट जारी होने से पहले मसौदा रिपोर्ट समीक्षा और टिप्पणी के लिए प्रबंधन को वितरित की जाती है।

अंतिम ऑडिट रिपोर्ट - अंतिम ऑडिट रिपोर्ट ऑडिट इकाई के प्रमुख को संबोधित होती है।

अनुपालन

ऐसे मौके आएंगे जब ऑडिट मुद्दे को हल करने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई ऑडिट रिपोर्ट को अंतिम रूप दिए जाने तक पूरी नहीं की जाएगी। इन मामलों में, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या सुधारात्मक कार्य योजनाएं प्रभावी ढंग से लागू की गई हैं और अपेक्षित परिणाम प्राप्त हो रहे हैं, पहले रिपोर्ट की गई सिफारिशों का अनुपालन किया जायेगा।

लेखापरीक्षा का महत्व

1. **बेहतर प्रशासन:** ऑडिट का प्राथमिक उद्देश्य सुशासन को बढ़ावा देना है। ऑडिट प्रक्रिया का उद्देश्य उन प्रणालीगत मुद्दों की पहचान करना है जो सरकार के प्रदर्शन में बाधा डालते हैं और इसे सुधारने के लिए परामर्श प्रक्रिया में शामिल करना है।
2. **जवाबदेही और पारदर्शिता:** ऑडिट प्रक्रिया विधायिका और व्यापक जनता के लिए शासन में विभिन्न कमियों को उजागर करने में मदद करती है जिससे प्रणाली की पारदर्शिता बढ़ती है और कार्यपालिका को जनता के प्रति जवाबदेह बनाया जाता है।
3. **सामाजिक प्रभाव:** ऑडिट पर्यावरण और आर्थिक मुद्दों और किसी परियोजना या कार्यक्रम की दक्षता सहित समाज के उपेक्षित मुद्दे पर भी ध्यान केंद्रित करता है। इससे नीतियों का बेहतर कार्यान्वयन संभव हो पाता है और विभिन्न सामाजिक अक्षमताओं को दूर किया जा सकता है।
4. **जागरूकता पैदा करना:** यह लाभार्थियों के बीच जागरूकता पैदा करता है और लाभार्थी सर्वेक्षण, साक्षात्कार जैसे उपकरणों के माध्यम से उन्हें कार्यकारी को अपनी राय व्यक्त करने के लिए एक मंच देता है।
5. **विकास को बढ़ावा देना:** यह स्थानीय विकास के लिए उपलब्ध जरूरतों और संसाधनों के बीच भौतिक और वित्तीय अंतर का आंकलन करने में मदद करता है। इसलिए यह विकास कार्यक्रमों की प्रभावकारिता और प्रभावशीलता को बढ़ाने में मदद करता है।
6. **लोकतंत्र को मजबूती देना:** ऑडिट यह सुनिश्चित करता है कि लोकतंत्र में निर्णय निर्माताओं की शक्तियों का उपयोग सभी संबंधितों की सहमति और समझ से यथासंभव किया जाना चाहिए। यह स्थानीय लोकतंत्र और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
7. **भ्रष्टाचार को कम करना:** यह सार्वजनिक क्षेत्र में अनियमितताओं और कदाचारों को उजागर करता है और सरकारी कामकाज पर निगरानी रखता है, इस प्रकार रिसाव और भ्रष्टाचार को कम करता है।

इस प्रकार, ऑडिट विशेष रूप से समाज के सबसे कमजोर समूहों के सामाजिक सशक्तिकरण का एक उपकरण है। यह आर्थिक विकास के लाभों को सभी तक वितरित करने में मदद करता है। इसके अलावा यह सरकार को अपने लोगों के प्रति जवाबदेही को नियत करता है और बेहतर नीति निर्माण और कार्यान्वयन को नियत करता है।

पर्यावरण प्रदूषण: कारण और निवारण



श्री श्रीराज मधुकर वाणी
उप महालेखाकार

पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारों ओर का वातावरण जिसमें हम सब निवास करते हैं और यह हवा, पानी, भूमि आदि जैसी कई चीजों से बना है लेकिन जब इस पर्यावरण में कुछ ऐसे हानिकारक तत्व मिल जाते हैं जो हमारे पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं, जिसकी वजह से जल, वायु, मिट्टी आदि सभी प्राकृतिक तत्व दुषित होने लगते हैं और उनका प्राकृतिक स्वरूप बदल जाता है- इस स्थिति को पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार

पर्यावरण प्रदूषण कई तरह का होता है, लेकिन मुख्य रूप से वायु, जल, और ध्वनि प्रदूषण यह तीनों ही पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं।

वायु प्रदूषण- जीवाश्म ईंधन के जलने से बड़ी मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड निकलती है। जीवाश्म ईंधन के अधूरे दहन से निकलने वाली कार्बन मोनोऑक्साइड भी वायु प्रदूषण का कारण बनती है। जीप, ट्रक, कार, बस आदि वाहनों से निकलने वाली गैसों पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं। ये ग्रीनहाउस गैसों के प्रमुख स्रोत हैं- कीटनाशक और उर्वरक जैसी रसायनों का ज्यादा इस्तेमाल होना। बड़े-बड़े उद्योग-धंधे और कल कारखानों से धुएं के साथ-साथ हानिकारक गैसें भी निकलती हैं जो पूरे वातावरण को प्रदूषित करती हैं। जनसंख्या में वृद्धि भी वायु प्रदूषण का मुख्य कारण है। मनुष्यों ने अपनी सुख सुविधा के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की है, वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण ही अधिक मात्रा में वायु प्रदूषण होता है।



वायु प्रदूषण बढ़ने के साथ-साथ धरती का तापमान भी लगातार बढ़ता जा रहा है। एक रिसर्च के अनुसार अगर इसी तेजी से वायु प्रदूषण बढ़ता रहा, तो पृथ्वी का तापमान भी तेजी से बढ़ेगा, जिससे पृथ्वी के हिम ग्लेशियर पिघल सकते हैं और भयंकर बाढ़ आ सकती है। अगर ऐसा हुआ तो पृथ्वी पूरी तरह से नष्ट भी हो सकती है।

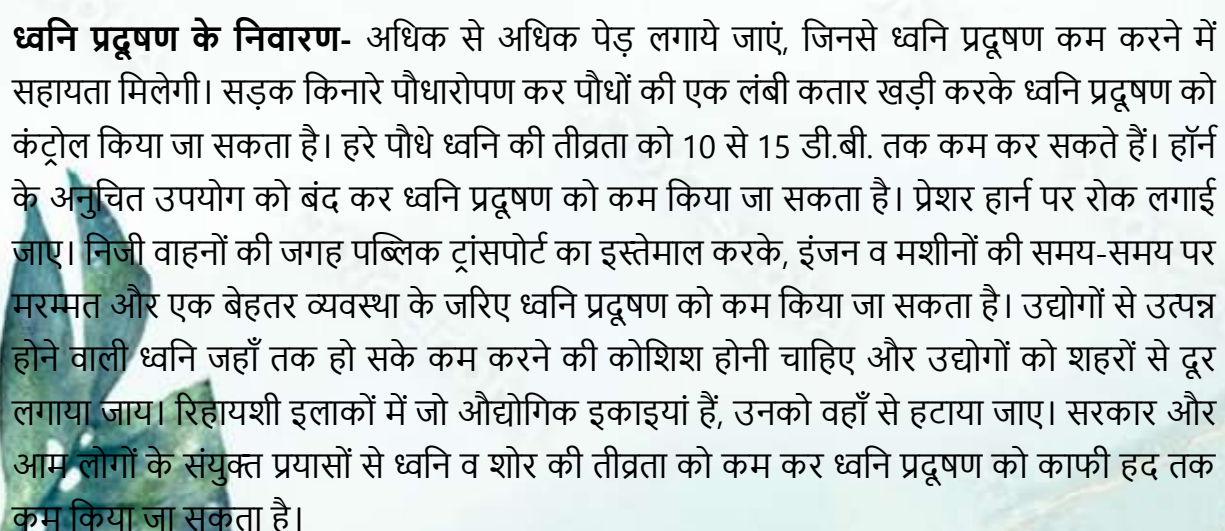
वायु प्रदूषण के निवारण के उपाय- वायु प्रदूषण को रोकने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए क्योंकि यह ऑक्सीजन का मुख्य स्रोत है। आज पूरी दुनिया जनसंख्या वृद्धि की समस्या से जूझ रही है, अगर हम इसपर नियंत्रण कर लेते हैं तो वातावरण में कार्बन-डाइ-ऑक्साइड की मात्रा में भी कमी होगी। हमें उन कल कारखानों को बंद कर देना चाहिए जिनसे अधिक मात्रा में प्रदूषण होता है और जिन कल कारखानों की हमें आवश्यकता है उनकी चिमनियों की ऊँचाई अधिक होनी चाहिए, जिससे हमारा वायुमंडल कम से कम प्रभावित हो। वायु प्रदूषण के निवारण के लिए हमारी सरकार को नए नियम बनाने चाहिए और प्रदूषण नियंत्रण संबंधी प्रमाण- पत्र की अनिवार्यता की जानी चाहिए साथ ही वायु प्रदूषण कानून में सख्ती दिखानी चाहिए।

जल प्रदूषण- जल प्रदूषण के मुख्य कारणों में से एक है- जहरीले रसायनों द्वारा जल निकायों का दूषित होना। जल में फेंकी गई प्लास्टिक की बोतलें, टिन, पानी के डिब्बे और अन्य अपशिष्ट जल निकायों को प्रदूषित करते हैं। हजारों टन सीवेज कचरे को जलाशयों में फेंक दिया जाता है। यह पर्यावरण और अन्य जंतुओं को प्रदूषित करता है। उद्योग जल प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत है- कारखानों और उद्योगों द्वारा निकला जहरीला रसायन जो जलीय जानवरों और पौधों के लिए बहुत ही हानिकारक होते हैं। कई बार परिवहन के लिए तेल ले जाने वाले जहाजों और मशीनों में तेल रिसाव भी हो जाता है जिससे जल प्रदूषण होता है। सिंचाई के दौरान जल निकायों में रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक मिलकर जल स्रोतों को प्रदूषित कर देते हैं। विभिन्न डिटरजेंट, साबुन और सैम्पू का भारी उपयोग घरों में होता है ये सब नालियों से बहकर नालों और फिर नदियों में जाते हैं और जल को प्रदूषित करते हैं। अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए विभिन्न देशों द्वारा किए गए परमाणु परीक्षण भी जल प्रदूषण का कारण बनती है। जल प्रदूषण से व्यक्ति ही नहीं अपितु पशु-पक्षी एवं मछली भी प्रभावित होती है। जल प्रदूषण से जल में ऑक्सीजन की मात्रा कम होती है जिससे जलीय जीव मरने लगते हैं।

जल प्रदूषण के निवारण- प्रत्येक घरों में सेप्टिक टैंक होना चाहिए। जल स्रोतों में जानवरों की सफाई नहीं करनी चाहिए। व्यर्थ पदार्थों को नदी, तालाब व पोखरों में नहीं बहाना चाहिए। जल प्रदूषण पर नियंत्रण हेतु नालों की नियमित रूप से साफ-सफाई करनी चाहिए। ग्रामीण इलाकों में जल निकासी हेतु पक्की नालियों को ठीक से बनाना चाहिए। विद्यालयों में जल प्रदूषण का एक पाठ होना चाहिए। जल प्रदूषण को रोकने और

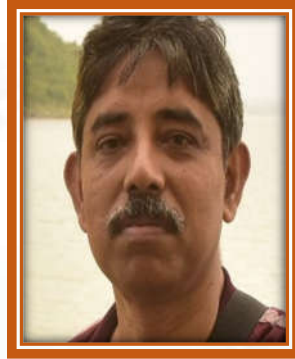


ध्वनि प्रदूषण- जब वातावरण में अत्यधिक ध्वनि हो जाती है जो मानव और अन्य जीव-जन्तुओं के लिए हानिकारक होती उसे ध्वनि प्रदूषण कहते हैं। मोटर वाहन या सड़क पर यातायात के द्वारा उत्पन्न शोर, विमान जैसे हवाई जहाज से निकलने वाला शोर, रेल यातायात या ट्रेनों से निकलने वाला शोर, औद्योगिक शोर या फैक्टरी और मशीनरी से शोर, निर्माणकार्य



ध्वनि प्रदूषण के निवारण- अधिक से अधिक पेड़ लगाये जाएं, जिनसे ध्वनि प्रदूषण कम करने में सहायता मिलेगी। सड़क किनारे पौधारोपण कर पौधों की एक लंबी कतार खड़ी करके ध्वनि प्रदूषण को कंट्रोल किया जा सकता है। हरे पौधे ध्वनि की तीव्रता को 10 से 15 डी.बी. तक कम कर सकते हैं। हॉर्न के अनुचित उपयोग को बंद कर ध्वनि प्रदूषण को कम किया जा सकता है। प्रेशर हार्न पर रोक लगाई जाए। निजी वाहनों की जगह पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करके, इंजन व मशीनों की समय-समय पर मरम्मत और एक बेहतर व्यवस्था के जरिए ध्वनि प्रदूषण को कम किया जा सकता है। उद्योगों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि जहाँ तक हो सके कम करने की कोशिश होनी चाहिए और उद्योगों को शहरों से दूर लगाया जाय। रिहायशी इलाकों में जो औद्योगिक इकाइयां हैं, उनको वहाँ से हटाया जाए। सरकार और आम लोगों के संयुक्त प्रयासों से ध्वनि व शोर की तीव्रता को कम कर ध्वनि प्रदूषण को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

जैव प्रौद्योगिकी का भविष्य



श्री शंकर लाल सरकार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जुरासिक पार्क फिल्म तो सभी ने देखा होगा?

जुरासिक पार्क जैसी फिल्मों के पीछे मुख्य विचार एक विलुप्त प्रजाति को "आनुवंशिक रूप से



पुनर्जीवित" करने के लिए प्राप्त डीएनए का उपयोग करना

है। यह जैव प्रौद्योगिकी पर आधारित एक विज्ञान कथा है।

छह मिलियन वर्ष पहले गायब हो गया डायनासोर,

टायरानोसॉरस रेक्स के विकृत डीएनए से जैव-प्रौद्योगिकी

की सहायता से नये डायनासोर का निर्माण फिलहाल अभी

तक असंभव है। लेकिन क्या यह उन मैमथों के मामले में

संभव हो सकता है जो केवल चार हजार साल पहले गायब

हो गए थे? खासकर तब जब इसके जीन आर्कटिक टुंड्रा बर्फ में संरक्षित हैं और इसका सबसे करीबी रिश्तेदार एशियाई हाथी पृथ्वी पर पाया जाता है।

एक जीनोम की कल्पना एक विशाल पुस्तक के रूप में करें। यदि आप हर दसवां शब्द खो दें, तो क्या आप फिर भी पूरी कहानी पढ़ पाएंगे? दुर्भाग्य से, जैसे ही कोई चीज़ मरती है, उसका डीएनए टूटना शुरू हो जाता है। औसतन, आधे जानवर के डीएनए को नष्ट होने में सिर्फ 521 साल लगते हैं। डीप फ्रीजिंग से मैमथ का डीएनए संरक्षण संभव हुआ है, लेकिन इनके आनुवंशिक निर्देश अभी भी अधूरे हैं।

द वाशिंगटन पोस्ट की मार्च 2024 की एक खबर ने सबका ध्यान खींचा - "डलास, अमेरिका, में स्थित एक जैव प्रौद्योगिकी कंपनी, कोलोसल बायोसाइंसेज ने घोषणा की है कि उसने एशियाई हाथी के स्टेम कोशिकाओं की एक शृंखला तैयार की है, जिन्हें विलुप्त विशालकाय मैमथ या कम से कम एक विशाल हाथी के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक अन्य प्रकार की कोशिकाओं में बदलने के लिए तैयार

किया जा सकता है। हाथी की तरह जिसे ठंड में पनपने के लिए डिज़ाइन किया गया है।" ऊनी मैमथ भ्रूण की इंजीनियरिंग करना अब कोई बड़ी चुनौती नहीं है, लेकिन एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देने में अधिक समय और मेहनत लगेगी। 2021 में स्थापित जैव प्रौद्योगिकी कंपनी कोलोसल बायोसाइंसेज ने सार्वजनिक रूप से कहा कि उसकी परियोजना एशियाई हाथी डीएनए के साथ उसके जीन को मिलाकर ऊनी मैमथ को आनुवंशिक रूप से पुनर्जीवित करना है। इसने सार्वजनिक रूप से कहा है कि वह इस परियोजना को 2027 तक पूरा करने का इरादा रखता है।

चलिए वापस वहीं चलते हैं जहां से मैंने लिखना शुरू किया था। जैव प्रौद्योगिकी क्या है? भविष्य की मानव सभ्यता में इसका क्या महत्व है?

जीव विज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों में से एक जैव प्रौद्योगिकी है। इसमें जीवित जीवों, जैव प्रक्रियाओं और कई औद्योगिक क्षेत्रों जैसे इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और जैव उत्पादों की आवश्यकता वाले अन्य क्षेत्रों में अन्य महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों का उपयोग शामिल है। जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग इतने व्यापक हैं कि लगभग हर उद्योग इस तकनीक का उपयोग कर रहा है।

जैव प्रौद्योगिकी ने कृषि में क्रांति ला दी है। घटती भूमि से बढ़ती आबादी की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए जैव प्रौद्योगिकी का कोई विकल्प नहीं है। फसल की उपज में वृद्धि, वांछनीय किस्मों का विकास, कीट रोग प्रतिरोधी किस्मों का विकास, लवणता सहनशील किस्मों का विकास, बाढ़-सूखा-शीत प्रवाह सहनशील किस्मों का विकास, बड़े आकार के फल, सब्जी-मछली-पशु-पक्षी उत्पादन, लाखों का उत्पादन मांग के अनुरूप कम समय में पौध रोपण, विविधता नवाचार सहित कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में जैव प्रौद्योगिकी की भूमिका बहुत बड़ी है। वैज्ञानिकों का मानना है कि बायोटेक फसलें ही दुनिया को भूख से मुक्ति दिला सकती हैं।



ग्लोबल वार्मिंग के कारण फसल उत्पादन घट रहा है, ऐसे में जैव प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ गया है। फसल को अधिक सहनशील बनाने के लिए फसल के बीज की आनुवंशिक गुण को संशोधित किया गया है। अत्यधिक तापमान और सूखे की स्थिति में भी अधिक मात्रा में फसलें पैदा की जा रही हैं।

विज्ञान की इस शाखा को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए उसे लगातार नए हथियार सौंपे जा रहे थे। इस क्रम में सबसे शक्तिशाली उपकरण - CRISPR (क्लस्टर्ड रेगुलरली इंटरस्पेड शॉर्ट पालिंड्रोमिक रिपीट) पाया गया है। CRISPR जीन में संशोधन का सबसे आम प्रकार है। इस नवाचार के साथ, वैज्ञानिक अब जीन को संशोधित कर सकते हैं या किसी बीमारी या चिकित्सा स्थिति का संभावित रूप से इलाज, इलाज या रोकथाम करने के लिए दोषपूर्ण जीन को स्वस्थ जीन से बदल सकते हैं। CRISPR-Cas9 जीनोम संशोधन तकनीक के विकास को 2020 में [रसायन विज्ञान के नोबेल पुरस्कार](#) से मान्यता मिली, जो [इमैनुएल चार्वेंटियर](#) और [जेनिफर डूडना](#) को दिया गया है।

जैव प्रौद्योगिकी में यह तकनीक किसी व्यक्ति के मौजूदा डीएनए के विशिष्ट टुकड़ों को सम्मिलित करती है, हटाती है, बदलती है या प्रतिस्थापित करती है। बीमारियों का इलाज करने के लिए, वैज्ञानिक जीन के साथ सटीक स्थानों पर डीएनए के टुकड़ों को संशोधित करने के तरीके खोज रहे हैं। जीन संशोधन का लक्ष्य मौजूदा जीन को बदलना और जहाँ उत्परिवर्तन होते हैं, उन्हें ठीक करना है।



हे जियानकुई मानव जीनोम संपादन पर हांगकांग कोंग में दूसरे अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मेलन में बोलते हुए।

मनुष्य अब जीन संशोधन के आसानी से उपलब्ध तरीकों से कैंसर या एचआईवी के प्रति अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकते हैं। हम शाश्वत युवाओं की तलाश में जैव प्रौद्योगिकी को अपनाने जा रहे हैं।

CRISPR-Cas9 जीनोम संशोधन तकनीक के जरिए वैज्ञानिक आने वाले बच्चों को इस तरह से विकसित कर सकते हैं कि उन्हें **जन्म संबंधी बीमारी, HIV, सिकल सेल रोग और कैंसर** जैसे रोग कभी ना हों। इस तकनीक से आने वाले समय में हम ऐसी नस्लें पैदा कर पाने में सक्षम होंगे जो कि हमसे कई गुना बेहतर हों, साथ में फसल (Crop resilience) और दूसरे जीवों में भी इस तरह बदलाव करके उन्हें अच्छा बना सकते हैं।

पश्चिमी दुनिया इस विषय पर सब शांत है लेकिन चीन के एक वैज्ञानिक हे जियानकुई ने कैलिफोर्निया के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में पोस्टडॉक्टरल शोधकर्ता के रूप में जीन-संशोधन तकनीक (CRISPR) के द्वारा तहलका मचा दिया है। नवंबर 2018 में उन्होंने घोषणा की कि उन्होंने पहले मानव आनुवंशिक रूप से संशोधित शिशुओं को बनाया है। ये जुड़वां लड़कियां हैं जिनका जन्म अक्टूबर 2018

के मध्य में हुआ था और जिन्हें उनके छद्म नाम 'लुलु' और 'नाना' से जाना जाता है। शुरुआत में इस घोषणा को प्रेस में एक प्रमुख वैज्ञानिक प्रगति के रूप में प्रशंसा प्राप्त हुई। लेकिन इस प्रयोग को निष्पादित करने की प्रक्रियाओं की जांच करने पर उन्हें व्यापक निंदा मिली। उनकी शोध गतिविधियों को चीनी अधिकारियों ने 29 नवंबर 2018 को निलंबित कर दिया था। 30 दिसंबर 2019 को, चीनी अदालत ने उन्हें तीन साल की कैद और तीन मिलियन युआन जुर्माने की सजा सुनाई।

उन्हें "पायनियर्स" अनुभाग में टाइम पत्रिका के 2019 के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। साथ ही उन्हें कई तरह से "दुष्ट वैज्ञानिक", "चीन के डॉ. फ्रेंकेंस्टीन", और एक "पागल प्रतिभा" के रूप में भी जाना जाता था।

अब डिजाइनर बेबी एक वास्तविकता है। आइंस्टीन जैसी बुद्धिमत्ता और हरक्यूलिस जैसी ताकत वाला एक डिजाइनर बच्चा पैदा किया जा सकता है। जीन-संशोधन तकनीक का उपयोग करके वांछित आनुवंशिक सामग्री को भ्रूण में ही शामिल करके आनुवंशिक रूप से परिवर्तित भ्रूण प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को जर्मलाइन इंजीनियरिंग के रूप में जाना जाता है और इसे भ्रूण पर निष्पादित करना आमतौर पर कानून द्वारा निषिद्ध है। इस तरीके से भ्रूण को संपादित करने का मतलब है कि आनुवंशिक परिवर्तनों को भविष्य की पीढ़ियों तक ले जाया जा सकता है। प्रौद्योगिकी एक अजन्मे बच्चे के जीन को संपादित करने से संबंधित है, इसे विवादास्पद माना जाता है। हालांकि कुछ वैज्ञानिक बीमारी के इलाज के लिए इस तकनीक के उपयोग की वकालत करते हैं, लेकिन चिंताएं जताई गई हैं कि इसका उपयोग कॉस्मेटिक प्रयोजनों और मानव गुणों को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

आनुवंशिक प्रौद्योगिकी में हाल की प्रगति ने वैज्ञानिकों को जीवित कोशिकाओं में बंधे डीएनए को अक्षर दर अक्षर फिर से लिखने के उपकरण दिए हैं। इस प्रक्रिया के साथ, वैज्ञानिक सैद्धांतिक रूप से शुक्राणु, अंडे और भ्रूण में आनुवंशिक कोड को बदल सकते हैं, और भविष्य में बच्चों के विकास के तरीके को नाटकीय रूप से बदल सकते हैं। डीएनए संपादन से "डिज़ाइनर बेबी" की संभावना भी बढ़ जाती है, जहां मानक आईवीएफ के माध्यम से बनाए गए भ्रूण के आनुवंशिक कोड को फिर से लिखा जाता है ताकि बच्चों में वे गुण हों जो माता-पिता को वांछनीय लगते हैं।

क्या ये किसी साइंस फिक्शन की कहानी जैसी नहीं लगती?

वेब 3.0



श्री गौरव कुमार मिश्रा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वेब 3.0 (Web 3.0) **ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी** पर आधारित इंटरनेट का तीसरा संस्करण है। वर्ल्ड वाइड वेब के आविष्कारक टिम बर्नर्स-ली ने वेब 3.0 को सिमेंटिक वेब नाम दिया, जिसका लक्ष्य अधिक स्वायत्त, स्मार्ट और ओपेन इंटरनेट बनाना था। वेब 3 विकेंद्रीकरण की अवधारणा पर आधारित है।



वेब के विभिन्न संस्करण कौन-से हैं?

वेब 1.0: इसे पहला चरण माना जाता है, जहाँ उपयोगकर्ताओं के पास सामग्री को केवल पढ़ सकने का अवसर था, वे इसके साथ अंतःक्रिया (interaction) नहीं कर सकते थे। इसमें न्यूज़ साइट, पोर्टल और सर्च इंजन जैसे कंटेंट शामिल थे।

वेब 2.0: वेब 2.0 के साथ उपयोगकर्ता केवल सामग्री देखने के बजाय उसके साथ अंतःक्रिया (interaction) कर सकते हैं। सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को विचारों, दृष्टिकोणों और राय को साझा करके एक दूसरे के साथ जुड़ने और बातचीत करने की अनुमति देता है और उपयोगकर्ता हैसटैग, शेयर, पोस्ट और लाइक कर सकते हैं। उपयोगकर्ता ऑनलाइन लेन-देन, ऑनलाइन खरीददारी, ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन माध्यम से वीडियो डाउनलोड एवं अपलोड कर सकते हैं। किन्तु ये सारे काम प्लेटफ़ॉर्म

कंपनियों के माध्यम से किया जाता है। **वेब 2.0 एक केंद्रीकृत सिस्टम है** जहाँ इंटरनेट पर कंट्रोल बड़ी-बड़ी कंपनियों के पास है, हमारे डाटा इनके सर्वर में स्टोर होते हैं।

वेब 3.0: वेब 3.0 एक विकेंद्रीकृत सिस्टम है जो ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी पर काम करती है, जहाँ हमारा डाटा किसी एक सर्वर पर स्टोर न होकर दुनियाभर में नोड्स में बंटा होता है जो ब्लॉकचेन में हमारे डाटा को स्टोर करके रखते हैं, जिसको हैक करना लगभग नामुमकिन है। वहीं केंद्रीकृत सर्वर का आसानी से हैक किया जा सकता है।

विकेंद्रीकृत सिस्टम का सबसे बड़ा फायदा ये है कि इसका कंट्रोल किसी कंपनी के पास नहीं होता, इसमें हमारे डाटा पर हमारा पूरा कंट्रोल होता है, आपका कॉन्टेंट आपका ही होगा और इसके बदले आपको टोकन मिलेगा। चाहे आप अपना कॉन्टेंट किसी भी प्लेटफॉर्म पर क्यों न पोस्ट करें, उस कॉन्टेंट का राइट आपके पास ही होगा। वर्तमान में ऐसा नहीं है। अगर आप किसी कॉन्टेंट को किसी प्लेटफॉर्म पर पोस्ट करते हैं तो वो उनका हो जाता है। वो आपके कॉन्टेंट को अपने हिसाब से यूज कर सकते हैं। लेकिन Web 3.0 में ऐसा नहीं होगा। यहां कोई कंपनी ये तय नहीं करेगी कि आपके कॉन्टेंट को हटाया जाए या रखा जाए। अगर मेटा, गूगल, अमेज़न जैसी कंपनियों को हमारा डाटा इस्तेमाल करना है तो पहले इनको हमसे इजाजत लेनी पड़ेगी। उपयोगकर्ता ऑनलाइन लेन-देन, ऑनलाइन खरीददारी बिना किसी प्लेटफॉर्म कंपनियों के माध्यम से कर सकते हैं।

वेब 3.0 का सकारात्मक पक्ष

- **खुला और पारदर्शी नेटवर्क:** वेब 3.0 एक खुला नेटवर्क है; सभी एप्लीकेशन और प्रोग्राम ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग कर विकसित किये जाते हैं। अनिवार्य रूप से डेवलपमेंट के लिये कोड (code for development), जो एक आभासी संसाधन है, समुदाय के लिये सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होता है और विकास प्रक्रिया को भी पारदर्शी रखा जाता है।
- **निर्बाध पारितंत्र:** वेब 3.0 के साथ प्लेटफॉर्म कंपनियों द्वारा डेटा पर केंद्रीकृत नियंत्रण व्यक्तियों के हाथों में चला जाता है, जहाँ ब्लॉकचेन पर स्मार्ट प्रोटोकॉल के उपयोग से थर्ड पार्टी की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। इस प्रकार, यह एक भरोसा-रहित, अनुमति-रहित और निर्बाध पारितंत्र (trust less, permission less and seamless ecosystem) को आगे बढ़ाता है।
- **विक्रेताओं और ग्राहकों के बीच प्रत्यक्ष संबंध:** वेब 3 प्रौद्योगिकी मध्यस्थों का भी उन्मूलन कर सकती है, जिससे विक्रेता और ग्राहक को प्रत्यक्ष अंतःक्रिया का अवसर मिलता है।

- **व्यक्तिकृत अनुभव:** AI-सक्षम वेब 3.0 का उपयोग करने वाले ई-कॉमर्स के मामले में विक्रेता खरीदारी की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम होंगे। वे उन उत्पादों एवं सेवाओं को खरीदारों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे जिनकी खरीद में वे रुचि रखते हैं। इसके साथ ही, खरीदारों को अधिक उपयोगी और संबंधित विज्ञापन दिखाई देंगे।
- **स्वतंत्र मुद्रीकरण:** वेब 3.0 कंटेंट क्रिएटर्स को मुद्रीकरण का बेहतर अवसर देकर उन्हें सशक्त बना सकता है। भारत में लगभग 20 लाख पेशेवर कंटेंट क्रिएटर्स इससे लाभान्वित हो सकते हैं।

वेब 3.0 से संबद्ध हानि

- **साइबर अपराधों में वृद्धि:** कुछ विशेषज्ञों के अनुसार वेब 3 को विनियमित करना कठिन होगा और विकेंद्रीकरण नए प्रकार के साइबर अपराधों को जन्म दे सकता है। इससे साइबर अपराध और ऑनलाइन दुरुपयोग (online abuse) में वृद्धि हो सकती है।
- **शिकायत निवारण तंत्र का अभाव:** इसकी विकेंद्रीकृत प्रकृति के कारण प्रश्न उठता है कि शिकायतों के मामले में किससे संपर्क किया जाए और डेटा उल्लंघन के लिये कौन जवाबदेह है।
- **सेंसरशिप तंत्र की कमी:** वेब 3.0 सेंसरशिप पर कोई विचार नहीं करता है। यह अश्लील और उत्तेजक कंटेंट्स को जन्म दे सकता है। इसके साथ ही, अश्लील या मानहानिकारी सूचना, फ़ोटो या वीडियो को हटाना राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकारों के लिये चुनौतीपूर्ण होगा।
- **स्केलेबिलिटी/मापनीयता संबंधी चिंता:** वेब 3.0 की स्केलेबिलिटी एक प्रमुख चिंता का विषय है, क्योंकि यह ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी पर आधारित है। ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के अपेंड-ऑनली डेटा स्टोरेज तंत्र (append-only data storage mechanism) के कारण इसे संशोधित नहीं किया जा सकता है और चूँकि मांग बढ़ रही है, इसकी भंडारण क्षमता सीमित है।

विनियामक कमी: वेब 3.0 उद्योग अभी भी कई देशों में विनियामक क्षेत्र में अपनी राह तलाश रहे हैं क्योंकि इसे अभी तक सुदृढ़ रूप प्रदान नहीं किया गया है। इसके उपयोग के लिये स्पष्ट प्रोटोकॉल को परिभाषित नहीं किया है।

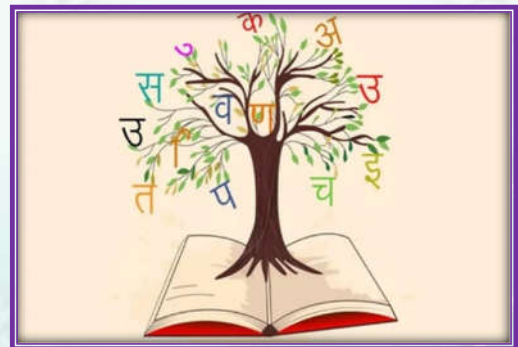
हिंदी की बहुआयामी भूमिका



श्री चंदन कुमार बड़ई
हिंदी अधिकारी

भाषा की उपयोगिता केवल विचार के आदान-प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा विकास की दिशा को भी प्रतिबिंबित करती है। मानव सभ्यता के क्रमिक विकास की धुरी भाषा ही मानी जाती है। इस धरा के बहुतेरे जीव-जन्तु शारीरिक बल तथा अन्य गुणों में मानव से श्रेष्ठ हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप हाथी मनुष्य से कहीं अधिक बलशाली है। चीते की चाल की तुलना में मनुष्य की चाल कमतर है। देखने, सुनने और सूंघने की मानवीय क्षमता भी कुछ पशुओं के सामने नहीं ठहरती। परंतु मनुष्यों को भाषा और संप्रेषण का वरदान प्राप्त हुआ है। कदाचित इसी गुण के कारण मनुष्य का जीवन अन्य जीवों की तुलना में बेहतर है। शायद इस वरदान के कारण ही मनुष्य ने कला, विज्ञान, शिल्प, दर्शन, वास्तु आदि में इतनी प्रगति हासिल की है। भाषा ही अनुभूति एवं विचार के संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। विचार एवं अनुभवों के परस्पर आदान-प्रदान से समाज का निर्माण हुआ है। कालांतर में हमारी भाषा तथा संस्कृति एक दूसरे के पूरक बने।

हिंदी भारत (संघ) की राजभाषा है। संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। संघ की राजभाषा होने का सामान्य अर्थ यह है कि सरकार अपने प्रशासनिक कार्य हिंदी में करेगी। सरकारी स्तर पर हिंदी शासकीय भाषा होगी। साथ ही यह भी अपेक्षित है कि गैर-सरकारी निगम, उद्योग, संगठन आदि भी हिंदी का उपयोग करें। संविधान निर्माताओं का उद्देश्य पूरे देश की भाषायी विविधता की गरिमामयी स्वरूप को अक्षुण्ण रखते हुए पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का था। संविधान सभा में सर्वसम्मति से हिंदी को राजभाषा घोषित करने के कारण ही हम देशवासियों में एकता की भावना प्रबल हुई है। हिंदी न केवल हमें एकता के सूत्र में बांधती है बल्कि यह हमारे व्यक्तित्व में राष्ट्रीय चेतना और आत्म सम्मान की भावना को भी बल प्रदान करती है। सन् 1931 में महात्मा गांधी की अभिव्यक्ति थी- "यदि स्वराज अंग्रेजी पढ़े भारतवासियों का है और केवल



उनके लिए है तो संपर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी। यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों, निरक्षर स्त्रियों, सताए हुए अछूतों के लिए है, तो संपर्क भाषा केवल हिंदी हो सकती है।”

महात्मा गांधी का यह कथन आज भी प्रासंगिक है। किसी भी लोकतांत्रिक देश की भाषा केवल जनभाषा ही हो सकती है। अंग्रेजी कभी भी प्रशासन और सामान्य लोक जन के बीच का सेतु नहीं बन सकती है। हिंदी का गौरव इस बात से भी है कि भारत जैसे बहुभाषिक देश में यह शिक्षित-अशिक्षित, धनी-गरीब, शहरी-ग्रामीण सभी वर्गों के बीच संवाद स्थापित करने में सक्षम है। शासकीय कार्यों का माध्यम अंग्रेजी होने से हम आम जनता से कटकर दूर हो जाएंगे। भारत के किसी भी प्रांत में अंग्रेजी स्थानीय संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित नहीं है। राष्ट्र निर्माण की दिशा तय करते समय हमें अपने लोकतांत्रिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय गौरव की भावना को नहीं भूलना चाहिए। इस देश के निर्माण में सभी वर्गों के लोगों की भागीदारी रही है। ऐसे में अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा भला कैसे इस देश की आत्मा को स्वर प्रदान कर सकती है। अंग्रेजी का शासकीय कार्य में प्रयोग हमें औपनिवेशिक दासता की याद दिलाती है। आज देश ‘विकसित भारत’ बनने की दिशा में अग्रसर है। अतः इस विकास पथ पर अंग्रेजी भाषा रुपी ‘औपनिवेशिक अवशेष’ ढोने का कोई सार्थक परिणाम नहीं है। इसी उद्देश्य से हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के साथ-साथ अंग्रेजी को भी सहायक भाषा के रूप में स्वीकार किया। हमें यह स्मरण रखना होगा कि अंग्रेजी का अस्तित्व सहायक भाषा से अधिक नहीं है। परंतु एक दुखद तथ्य यह भी है कि इतने प्रयासों के उपरांत भी हिंदी को आशा के अनुकूल स्वीकार्यता नहीं मिली है। एक कठोर सत्य यह है कि भारत सरकार के अधिकांश कार्यालयों तथा उपक्रमों में अंग्रेजी का व्यापक उपयोग किया जा रहा है, तथा राजभाषा हिंदी की उपेक्षा की जा रही है।

हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता तथा इसकी समृद्ध शब्दावली से हम सभी परिचित हैं। हिंदी राजभाषा तथा संपर्क की भाषा होने के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त भाषा है, इसमें कोई मतांतर नहीं है। परंतु फिर भी कुछ भारतीय आज भी हिंदी भाषा को अंग्रेजी से कमतर समझते हैं। अक्सर ऐसे लोग हिंदी भाषा को जटिल, दुरुह तथा कठिन विन्यास की भाषा बताकर अंग्रेजी के पक्ष में खड़े हो जाते हैं। हिंदी भारतीय भाषा होकर भी कठिन प्रतीत होती है परन्तु उन्हें अंग्रेजी को कठिन कहते कभी नहीं सुना जाता है। वास्तविकता यह है कि यह एक हीन ग्रंथि है। अंग्रेजी भाषा विदेशी है। इस भाषा का मौलिक साहित्य, काव्य रचना, उपमाएँ इस भाषा के मुहावरे व उक्तियों में भारत की आत्मा नहीं बसती है। भारत की भौगोलिक स्थिति, इसकी संस्कृति तथा इसके दर्शन के सर्वथा अनुकूल केवल हिंदी भाषा ही हो सकती है। हिंदी भारत को पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक सभी भारतीयों को एक भाषाई सूत्र में पिरोने में सक्षम है।



आज हिंदी की स्थिति में निरंतर सुधार हो रहा है। देश की प्रगति, एकता तथा अच्छे प्रशासन में हिंदी सेतु का कार्य कर रही है। चीनी भाषा तथा अंग्रेजी के बाद हिंदी विश्व की तीसरी भाषा है, जो सर्वाधिक

समझी, बोली, लिखी-पढ़ी जाती है। अतः हिंदी का भाषाई फलक विशाल है। हिंदी केवल भारत की भौगोलिक सीमा तक बंधी भाषा नहीं है, बल्कि विश्व पटल पर भी इस भाषा की स्वीकार्यता है। मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, ट्रिनिडाड एवं टुबैगो जैसे देशों में बसने वाले प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को वहां भी लोकप्रिय बना दिया है।

वर्तमान समय में हिंदी की शब्द संपदा में निरंतर वृद्धि हो रही है। हिंदी सदा ही दूसरी भाषा के शब्दों को अपने शब्द भंडार में समाहित करने के प्रति उदार रही है। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा इसकी व्यापक स्वीकार्यता हेतु हिंदी का यह उदार स्वरूप ही उचित है। हमें अकारण प्रचलित विदेशी शब्द अथवा अन्य भाषा से आगत शब्दों के संस्कृतनिष्ठ पर्याय से बचना चाहिए। उदाहरण स्वरूप कमीज, टिकट, स्टेशन, रेडियो, कंप्यूटर जैसे शब्द को हिंदी में यथावत ग्रहण करने में कोई बुराई नहीं है। अन्य भाषाओं से आगत शब्दों को हिंदी में उपयोग करते समय हमें हिंदी भाषा की स्वभाविक गतिशीलता और हिंदी की आत्मा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हिंदी के समावेशी स्वरूप का उपयोग हिंदी के उत्थान एवं संपर्क स्थापित करने में सहजता के उद्देश्य से करना चाहिए। तभी इस भाषा में संकीर्णता के स्थान पर व्यापकता, जड़ता के स्थान पर गतिशीलता, दुरूहता के स्थान पर सरलता आएगी।

हिंदी के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षा का माध्यम हिंदी हो। अंग्रेजी की छद्म श्रेष्ठता हमारी स्वभाविक अभिव्यक्ति एवं हमारी रचनात्मकता को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। प्रारंभिक स्तर पर ही अधिकांश स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान किया जा रहा है। अमूमन बच्चों की मातृभाषा अंग्रेजी नहीं होती। अतः उनका बौद्धिक विकास प्रभावित होता है। शिक्षा का माध्यम हिंदी होने से प्रारंभिक स्तर पर ही हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार होगा। यह भ्रांति प्रचलित है कि विज्ञान, विधि, कंप्यूटर आदि विषयों पर हिंदी में शोध परक पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान समय में हिंदी माध्यम से व्यापक विषयों पर प्रमाणिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। साथ ही अनुवाद की सहायता से अंग्रेजी में उपलब्ध शोध परक पुस्तकें भी हिंदी में प्राप्त हो रही हैं। साथ ही यह तथ्य भी स्वीकार्य है कि हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शोधपरक पुस्तकों के लेखन की दिशा में बहुत कुछ किया जाना अभी शेष है। प्रशासनिक स्तर पर भी इस दिशा में गंभीरता से कार्य किया जाना चाहिए। अनुवाद ब्यूरो तथा वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के प्रयासों से हिंदी के ग्रंथों का निरंतर अनुवाद एवं संवर्धन का कार्य हो रहा है। ज्ञान-विज्ञान, विधि, तकनीक पर किसी एक भाषा का एकाधिकार नहीं हो सकता है। हिंदी का प्रवेश व्यापक विषयों में हो रहा है। भारत में रोजगार हो अथवा शिक्षण हिंदी के बिना इनमें गुणात्मक प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती है।

वर्तमान भारत डिजिटल सशक्तिकरण एवं सूचना क्रांति की दिशा में अग्रसर है। सामान्य लोगों तक इंटरनेट की पहुंच तथा सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों के प्रभाव के कारण लोगों के बीच व्यापक स्तर पर मेल-जोल बढ़ रहा है। हिंदी यहां भी अग्रणी भूमिका में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। अपनी उपयोगिता तथा भाषायी बहुलता के कारण हिंदी का सोशल मीडिया में वर्चस्व कायम है। ब्लॉगर हिंदी में लिख रहे हैं। यूट्यूब पर हिंदी भाषा में विडियो अपलोड किए जा रहे हैं। अन्य मंचों पर भी देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो रही है। अन्य शब्दों में कहें तो बदलते

परिवेश तथा युवाओं के अपेक्षा के अनुरूप हिंदी स्वयं को अद्यतित करने में सफल रही है। अतः तकनीकी साधनों के माध्यम से भी हिंदी मुखर एवं सशक्त भाषा बनकर उभर रही है।

भारत एक विशाल देश है। ऐसा अक्सर कहा जाता है कि इस देश की प्रमुख भाषा हिंदी विश्व भाषा बन सकती है। परंतु भारतीय परिदृश्य में इस भाषा की स्वीकार्यता अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत सरकार के उद्यम एवं प्रयासों से हिंदी की प्रशासनिक स्थिति में निरंतर सुधार हो रहा है। परंतु अभी भी लंबा पथ तय किया जाना बाकि है।

हम कार्यालयी स्तर पर हिंदी का प्रयोग करते हैं। अक्सर कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग मौलिक न होकर अनुवाद के रूप में होता है। हिंदी अनुवाद पर निर्भरता अच्छी बात नहीं है। हमें इस दिशा में प्रयास करना होगा कि हम मौलिक रूप से हिंदी में कार्य करें। टिप्पणी तथा मसौदा मूल रूप से हिंदी में तैयार किए जाएं। आवश्यकता अनुसार हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद किया जा सकता है। वर्तमान समय में जो उल्टी गंगा बह रही है, उस दिशा को मोड़कर सही दिशा में लाना अति आवश्यक है।



आइए हम सभी निम्नलिखित बिंदुओं को अपने सामान्य जीवन में अंगीकार करें, ताकि हिंदी का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

- हम लोग हस्ताक्षर हिंदी में करें।
- हिंदी समाचार पत्र, पत्रिका आदि पढ़ें।
- नामपट्ट हिंदी में लिखवाएं।
- मौलिक हिंदी में कार्यालयीन कार्य करें।
- हिंदी को अकारण कठिन न करें, यदि अंग्रेजी कठिन प्रतीत हो तो कठिन कहने में झिझक न करें।
- हिंदी साहित्य से जुड़ें।
- सभा, बैठकों में हिंदी में बोलें, हिंदी में भाषण दें।
- कंप्यूटर, मोबाइल आदि उपकरणों पर हिंदी यूनिकोड संस्थापित करें।
- हिंदी टंकण आसान है, हिंदी में टंकण करें।
- हिंदी किसी भी अन्य भारतीय भाषा की प्रतिद्वंद्वी नहीं है।
- गैर हिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी का प्रयोग, हिंदी थोपना नहीं है।

स्मरण रखें दुनिया का एक भी शक्तिशाली एवं संपन्न देश किसी विदेशी भाषा के सहारे उन्नत नहीं बना है। केवल अपनी भाषा ही उन्नति, प्रगति, विकास एवं समृद्धि का पथ प्रशस्त कर सकती है।



ई-एचआरएमएस



श्रीमती शुभ्रा दास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

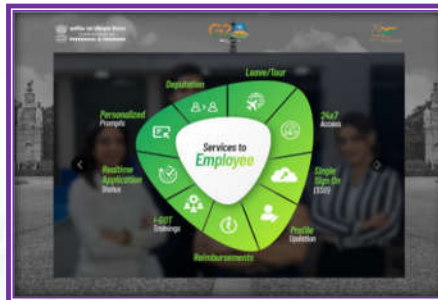
डिजिटल इंडिया के इस दौर में कागज पर पत्र लिखना और भौतिक फ़ाइलों को चलाना अब अतीत की बात होनी चाहिए। डिजिटलीकरण के वर्तमान परिदृश्य में, कागज में फ़ाइल कार्य की पारंपरिक पद्धति समय और संसाधनों की बर्बादी है। कर्मचारियों के सेवा रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में, सुशासन के उद्देश्य से भारत सरकार ने 25 दिसंबर 2017 को ई-एचआरएमएस में शुरुआत की गई। मानव संपदा सरकारी विभागों में मानव संसाधन प्रबंधन समाधान (एचआरएमएस) के लिए एक ऑल-इन-वन पोर्टल है। यह जनशक्ति नियोजन और प्रबंधन में सुविधा के लिए सरकारों के लिए एक सामान्यीकृत समाधान है। ई-एचआरएमएस का पूरा नाम है इलेक्ट्रॉनिक मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली।



सेवा रिकॉर्ड का उचित रखरखाव सभी कर्मचारियों के साथ-साथ संगठन के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें किसी कर्मचारी के सेवा रिकॉर्ड के हर पहलू के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी होती है। हालाँकि, यह देखा गया है कि सेवा पुस्तिका में प्रविष्टियाँ तो की जा रही हैं, लेकिन कई मामलों में रिकॉर्ड अद्यतन नहीं है। इसके अलावा कर्मचारियों के स्थानांतरण के मामले में सेवा, पेंशन आदि की/ पुस्तिका लंबे समय के बाद स्थानांतरित की जाती है। इसके परिणामस्वरूप देय लाभ, कर्मचारी की मृत्यु की स्थिति में मंजूरी और भुगतान में देरी होती



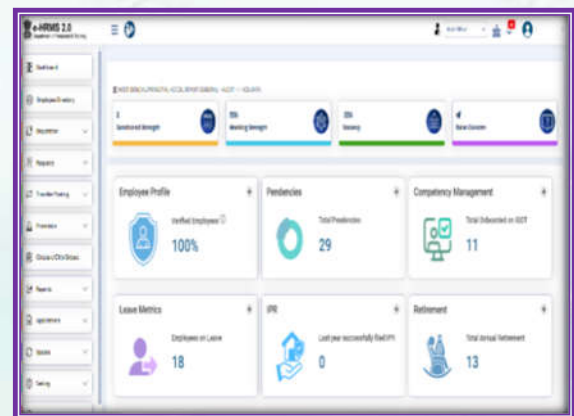
है। उचित नामांकन के अभाव में पेंशन या लाभों के अंतिम भुगतान में अनावश्यक रूप से देरी होती है। कर्मचारी की सेवानिवृत्ति के कई वर्षों के बाद विभाग द्वारा प्राप्त छुट्टी आदि के नियमितीकरण के कई मामले जिसके कारण अक्सर मुकदमेंबाजी होती है और विलंबित भुगतान पर अनावश्यक ब्याज का भुगतान होता है। ऐसा संभवतः इसलिए हो रहा है क्योंकि कर्मचारी को स्वयं अपने सेवा रिकॉर्ड तक



आसान पहुंच नहीं है, भले ही नियमों में इसकी परिकल्पना की गई हो।

कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) सरकार के नीति निर्माता और मॉनिटर के रूप में कार्य करता है। उनके द्वारा जारी दिशानिर्देशों और नियमों का पालन सभी मंत्रालयों/विभागों द्वारा भर्ती, सेवा शर्तों के विनियमन, पोस्टिंग/स्थानांतरण, कर्मियों की प्रतिनियुक्ति के साथ-साथ अन्य संबंधित मुद्दों पर किया जाता है। यह कार्मिक प्रबंधन के मुद्दों पर केंद्र सरकार के सभी संगठनों को सलाह भी देता है। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) ई-एचआरएमएस के डिजाइन, विकास और कार्यान्वयन के लिए डीओपीटी का तकनीकी भागीदार है। बाद में ई एचआरएमएस 2.0 पोर्टल पेश किया गया।

डीओपीटी ने सुशासन के एक हिस्से के रूप में केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ई-एचआरएमएस की शुरुआत की, ताकि सरकार द्वारा तैनात मानव संसाधन का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जा सके एवं भर्ती से लेकर सेवानिवृत्त होने तक व्यक्तिगत प्रबंधन की सभी प्रक्रियाएं डिजिटल प्लेटफॉर्म पर होंगी और कार्मिक मामलों को संभालने की मैनुअल प्रणाली को खत्म किया जा सकेगा। इस परियोजना का उद्देश्य एक ऐसा एप्लिकेशन बनाना है जो मौजूदा कर्मचारियों के लिए मौजूदा सेवा पुस्तिका को कम्प्यूटरीकृत करता है, नए कर्मचारियों के लिए सेवा पुस्तिका का निर्माण करता है और उसके बाद कर्मचारी के विभिन्न रिकॉर्ड की दिन-प्रतिदिन की प्रक्रिया के लिए सेवा पुस्तिका के अद्यतनीकरण को स्वचालित करता है। इसके परिणामस्वरूप सेवा पुस्तिका का वास्तविक समय पर अद्यतनीकरण होता है और सरकार भर में सेवा रिकॉर्ड नियमों का एक



समान कार्यान्वयन होता है। ई-एचआरएमएस में ई-सर्विस बुक का निर्माण और सर्विस बुक को प्रभावित करने वाली सभी प्रक्रियाओं/सूचना के लिए वर्कफ़्लो-आधारित समाधानों का विकास शामिल है।

मानव संपदा पोर्टल सरकार के द्वारा सभी कर्मचारियों को ऑनलाइन की सुविधा देने के उद्देश्य से शुरू की गई एक पोर्टल है जिसके माध्यम से कर्मचारी छुट्टी लेने के लिए आवेदन, ट्रांसफर से संबंधित जानकारी इत्यादि जैसी ऑनलाइन सुविधा जो कि कर्मचारी के लिए आवश्यक होती है, का लाभ ले सकते हैं।

सी एवं एजी कार्यालयों में भी ई-एचआरएमएस कार्यान्वयन चरण में है। छुट्टी और समाचार पत्र, टेलीफोन और बच्चों की शिक्षा भत्ते की प्रतिपूर्ति अब ईएचआरएमएस पोर्टल में सक्रिय है।

ई-एचआरएमएस की विशेषताएं:

- विश्वसनीय /प्रामाणिक डेटा का एकल स्रोत
- 24X7 पहुंच और उपलब्धता
- हितधारक के साथ सूचनाओं /निर्बाध जानकारी का साझाकरण।
- सामान्य मानव संसाधन दस्तावेज़ भंडार
- अलर्ट/अधिसूचना की सुविधा
- ई-हस्ताक्षर सुविधा
- मास्टर डेटा का मानकीकरण
- डेटा की न्यूनतम मैनुअल प्रविष्टि
- ऑफिस, पीएफएमएस इत्यादि जैसे अन्य एप्लिकेशन के साथ एकीकरण।



तुम क्या कहोगे?



श्री चंदन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा दिल,
मेरे जज़्बात पत्थर के हैं,
ये इल्ज़ाम है तुम्हारा
पर मेरे जज़्बात बनके दरिया
बह जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

तुम्हारे दिल में है मोहब्बत,
तो आगे बढ़ाओ कदम
पर किसी रोज तुमसे हम,
अंजान बन जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

मैं शुक्रगुजार हूं,
कि तुमने समझा है,
अपनी हकीकत मुझे
पर किसी रोज़,
ख्वाब बनके हम,
बिखर जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

ख्वाहिश है तुम्हारी मिलने की
हमसे,
तो जरूर मिलो
पर किसी रोज तुमसे,
मिलके हम,
बिछड़ जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?
चलना हौ सुबह-सवेरे,
तुम्हें संग मेरे,
तो साथ चलो

पर शाम होते ही हम,
ढल जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?
भोर सजती है शबनम से,
ये मालूम है हमें भी
पर किसी रोज़ शबनम,
बनके घटा बरस जाए अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

आज छाई है ख़ुमारी,
मेरे दरख़्तों पे,
मौसम-ए-बहार का
पर ये पतझड़ में,
पत्तों की तरह,
गिर जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

आज़माने की चाहत है तुम्हारी,
तो आजमा के भी देखो मुझे
पर तुम्हारी आजमाईश पे हम,
खरे उतर जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

हां ये सच है,
कि मुश्किलों से घिरी है,
हसीन उल्फत हमारी
पर हमारी चाहत के आगे,
मुश्किलें झुक जाए अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

तुम्हें गुमां है,
कि एक दरिया है आग का,
हमारे दरमियां
पर तुम्हारे लिए,
ये दरिया भी हम,
पार कर जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

यूं लगता है,
कि इश्क में तुमने समझा है मुझे,
एक बेबस और लाचार परिंदा
पर तुम्हारे लिए,
अकेले ही हम,
ज़माने से लड़ जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

हमें इनकार नहीं है,
कि हमारे इश्क की कशती,
समंदर बीच उफानों में है
पर इस डूबती कशती के लिए हम,
एक नया साहिल बन जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे,

माना,
कि ख्वाबों के साये में पलती है,
हर हसरत प्यार की
पर उन ख्वाबों की हकीकत हम,
मिसाल बन जाएं अगर,
तो तुम क्या कहोगे ?

चरनी फूल



श्रीमती रमृति कुजूर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अक्टूबर 2022 को मैं अपने परिवार के साथ अपने ससुराल झारखंड गयी थी। मेरी मां ने मुझे बताया कि वह मुझे एक अनोखा फूल दिखाना चाहती हैं जो सिर्फ रात को खिलता है।

मैंने देखा घर के पीछे बगीचे में एक पौधे पर कई कलियां थीं, पर दो रातें बीत जाने पर भी जब फूल नहीं खिले तो मैं निराश होने लगी थी कि शायद मैं खिले हुए फूल नहीं देख पाउंगी क्योंकि अगली सुबह मुझे कोलकाता लौटना था। रात का खाना खाने के बाद सोने जाने ही वाली थी कि मेरी मां ने मुझे बगीचे में बुलाया। वहां जाने पर मैंने जो देखा, उससे मैं दंग रह गई।

आठ-दस सफेद फूल खिले हुए थे। सभी फूलों पर पानी की बूंदें थी, क्योंकि बारिश हो चुकी थी। फूल के अंदर का हिस्सा एक चरनी के समान दिख रहा था। एक सफेद, नरम बिछौना जैसा, और ऊपर से झूलते हुए सफेद तारे यीशु मसिह के जन्म के दृश्य की याद दिला रही थी।

पर बाईबल के अनुसार बालक यीशु का जन्म एक गौशाला में हुआ था। उनकी माता मरियम ने उन्हें एक चरनी पर लिटाया था। 'चरनी' शब्द लैटिन शब्द मंडुकारे से आया है जिसका अर्थ है 'खाना'। अर्थात् चरनी एक लकड़ी या पत्थर से बना ढांचा होता है जिसके अंदर गौशाला में रखे जाने वाले जानवरों का खाना रखा जाता है।

बाईबल बताती है कि यीशु के जन्म की रात एक चमकता हुआ तारा आकाश में नजर आया था, जिसने तीन ज्ञानियों को यीशु तक पहुंचाया था। यह सितारा नयी आशा, उम्मीद और अंधेरे में नये जीवन का प्रतीक होता है। इसी प्रकार अंधेरे में खिले हुए सफेद फूलों ने मुझे खुशी और आशाओं की अनुभूति से भर दिया।

अब मुझे पता चला कि क्यों स्थानीय लोग इसे "चरनी" फूल के नाम से बुलाते हैं। गूगल के अनुसार भारत के कई हिस्सों में यह ब्रह्मकमल के नाम से प्रचलित है। मैंने अपने मोबाइल फोन के कैमरे से बहुत सारी तस्वीरें खींचीं और खुशी-खुशी अगली सुबह कोलकाता लौटने के लिए निकल पड़ी।

मैं ठीक हूँ



श्री ज़ाकी अहमद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं ठीक हूँ- तीन शब्द ही पर्याप्त हैं। आज के समाज का सबसे ज़्यादा प्रयोग होने वाले ये तीन शब्द “मैं ठीक हूँ” ही है। यह तीन शब्द दिखते कुछ और है पर वास्तविकता कुछ और ही होती है। एक मतलब यह भी होता है कि मैं ठीक हूँ पर दरअसल मैं ठीक नहीं हूँ। इस बात को कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है।

1. घर छोड़कर काम की तलाश में पलायन करता हुआ व्यक्ति।
2. पलायन किए हुए व्यक्ति का परिवार ।
3. ब्याह के बाद नए ससुराल के माहौल में गयी कन्या ।
4. वृद्ध माता-पिता जो अपने बच्चों से दूर रहते हों।

सबसे पहले जानते हैं कि एक व्यक्ति जब अपने परिवार को छोड़कर दूसरे शहर में पलायन करता है तब वह किस तरह अपनी तकलीफ को इन तीन शब्दों “मैं ठीक हूँ” के पीछे छुपाता है। अपने और अपने परिवार के लिए जब कोई व्यक्ति दूर देश जाता है तो उसे घर छोड़ने से लेकर अपने गंतव्य तक पहुँचने में कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कैसे जाएगा, कहाँ रहेगा, क्या खाएगा...इतनी सारी चिंताएँ रहती हैं एक व्यक्ति के दिल-ओ-दिमाग में। कभी-कभी तो उसे पैसों का नुकसान, सामान का खो जाना और तरह-तरह के धोखेबाज़ी का सामना करना पड़ता है। नयी जगह में नौकरी तलाश करना और नए माहौल में खुद को ढालना बहुत कठिन होता है। इन कठिनाइयों को वह सिर्फ इसलिए सहता है क्योंकि वह पीछे अपने परिवार को एक उम्मीद देकर आया है। चाहे जितनी भी तकलीफ हो वह सहता है। घर के लोगों को बस यही कहता है “मैं ठीक हूँ”, चाहे उसने सही से खाना खाया हो या नहीं, ऑफिस में डांट खाया हो या तबीयत खराब हो।

इसी तरह उस व्यक्ति का परिवार भी अपनी दिनचर्या में तकलीफों का सामना कर रहे होते हैं। काम करने के लिए जब घर का मुखिया बाहर गया हो तो घरवाले, पत्नी, बच्चे, माता, पिता दुखी हो जाते हैं। पत्नी अपनी जिम्मेदारियों का बेमन से निर्वाहन करती है। सास-ससुर की खिट-पिट, बच्चों की झिंकझिंक, संसाधनों की कमी से त्रस्त रहती एक पत्नी अपने पती को यही संदेश देती है “मैं ठीक हूँ”। यानी इन तीन शब्दों का महत्व मानव जीवन में बहुत प्रभावशाली है। “मैं ठीक हूँ” कह कर एक पति अपने पत्नी से अपनी तकलीफों को



छुपा लेता है। वहीं दूसरी तरफ इन शब्दों से पत्नी अपनी मुश्किलों पर पर्दा डाल देती है। इसका लाभ क्या होता है? लाभ यही होता है कि दोनों पति-पत्नी जमकर डटे रहते हैं। अपने परिवार की खुशहाली की उम्मीद में अपनी तकलीफों को दरकिनार कर एक दूसरे को सहारा देते हैं जब कहते हैं "मैं ठीक हूँ"।

जब एक कन्या ब्याह कर अपने ससुराल में जाती है तो उसे एक नया माहौल मिलता है। भारतीय समाज के ताने-बाने में उलझा है इस देश की हर लड़की का जीवन। विवाह के बाद लड़की को ससुराल में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह अनपढ़ है, पढ़ी-लिखी है, काम



करने वाली है, डॉक्टर, इंजीनियर, टीचर या किसी और ऊँचे पद पर आसीन महिला हो। इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि लड़की दहेज में कितना सामान लाई है, कितने गहने लाई है और शादी कितने धूम-धाम से हुई है। औसतन यह देखा गया है कि हर नयी नवेली दुल्हन को ससुराल जाने के बाद ससुराल वालों को खुश करना बहुत मुश्किल होता है। जो ठीक से पढ़ाई-लिखाई न करे उसे अनपढ़ होने के ताने मिलते हैं। जो पढ़ी-लिखी हो उसे संस्कार ठीक न होने के

ताने झेलने पड़ते हैं। जो पति से ज़्यादा पढ़ी हो उसे तो हर बात पर नीचा दिखाया जाता है। काम करने वाली महिलाओं का तो सबसे बुरा हाल होता है। उन्हें घर भी संभालना है और ऑफिस भी। पतिदेव कई बार बिना बात के नाराज़ हो जाते हैं। इसी तरह ससुराल की जरूरतों को पूरा करते, रिश्तों को निभाते-निभाते थकी-हारी कन्या से जब माता-पिता पूछते हैं- "बेटी, कैसी हो?" तो वही जवाब आता है- "मैं ठीक हूँ"। यहाँ पर यह तीन शब्द जब बेटी कहती है तो माँ-बाप को सुकून दे जाती है। उनकी चिंताएँ कम हो जाती हैं। एक छोटी-सी खुशी होती है कि चलो इतनी मेहनत से अपनी बेटी की शादी की और वो ठीक है।

अब बात करते हैं हर उस माता-पिता की जो अपने बच्चों से दूर रहते हैं। जिन माँ-बाप ने बेटियाँ ब्याह दी हों, उनके कानों में अमृत घूल जाता है जब उनकी बेटियाँ कहती हैं "मैं ठीक हूँ"। हाँ, यह भी है कि माँ-बाप अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए दूसरे शहर भेजते हैं। उनकी दिन-रात की चिंता यही रहती है कि उनका बच्चा कैसा होगा। उसने कुछ खाया होगा या नहीं। उसने अच्छे से पढ़ाई किया है या नहीं। वह खुश है या नहीं। खबरों में बच्चों की आत्महत्या की बातें सुनकर उनका दिल बैठ जाता है। दूसरी तरफ बच्चे भी पढ़ाई का दबाव संभाल रहे होते हैं। प्रतियोगिता में खुद को कामयाब करने के लिए मेहनत करते रहते हैं। कभी-कभी ठीक से खाना भी नहीं खाते, बीमार भी हो जाते हैं, फिर भी अपने माँ-बाप को कह देते हैं, "मैं ठीक हूँ"। यहाँ पर ये तीन शब्द हमारे मासूम बच्चों की मजबूती और दृढ़-निश्चय का संकल्प दर्शाते हैं। बच्चा घर छोड़कर अपनी लड़ाई लड़ना सीखता रहता है। माँ-बाप को भरोसा दिलाता है कि वह जिंदगी की जंग को जीतना सीख रहा है। इसी तरह माँ-बाप भी कहते हैं "हम ठीक हैं" ताकि बच्चे के परदेश जाने का गम, घर का सन्नाटा, जीवन के उदासीपन को माँ-बाप छुपा सकें।

अतः "मैं ठीक हूँ" मनुष्य जीवन के निरंतरता का प्रतीक है। यह तीन शब्द माँ-बाप, बच्चों और परिवार को आशा की किरण देते हैं, यह ढाढ़स बँधाते हैं कि घर पर सब ठीक है। यह दिलासा देते हैं कि हमारा परिवार सही दिशा और दशा में है। यह भरोसे का प्रतीक है कि ऑल इज़ वेल-सब ठीक है क्योंकि मैं ठीक हूँ।

लिखूं तो क्या लिखूं



श्री आर्य कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सोचा चलो आज कुछ लिखूं
पर लिखूं तो क्या लिखूं
तुम्हारी कही हुई चंद बातें लिखूं
या अपनी अनकही अल्फाज लिखूं।
जो कभी पूरी ना हो सकीं वो मुलाकाते लिखूं
या फिर अपनी दबे हुए जज़्बात लिखूं।
आखिर लिखूं तो क्या लिखूं.....

तुम्हारे चेहरे पर की हुई शृंगार की सादगी लिखूं
या अपने हरकतों की आवारगी लिखूं।
वो छोटी-छोटी बातों पर हो जाने वाली तुम्हारी नाराज़गी लिखूं
या तुम्हें मनाने में की हुई मेरी जुस्तजू कागज़ी लिखूं।
सोचा चलो आज कुछ लिखूं
आखिर लिखूं तो क्या लिखूं.....

जो कभी ना गुजरी तुम्हारे साथ, वो रातें लिखूं
या खुदा तक जो ना पहुंची मेरी, वो फरियादें लिखूं।
जो लोगों से सुनी तुम्हारी वो कहानियां लिखूं,
या फिर तुम्हारे जाने के बाद छाई हुई विरानियां लिखूं।
आखिर लिखूं तो क्या लिखूं.....

कौन-कौन करता है तुम्हारा जिक्र लिखूं,
या करता हूं तुम्हारी अब भी मैं, वो फिक्र लिखूं।
तुम्हारे चले जाने के समस्याओं का कोई कारण लिखूं,
या कैसे खुद को संभालू, इसका निवारण लिखूं।
छोड़ो आज कुछ नहीं लिखता हूं॥

वह आखिरी बार जब हम मिले



श्री राजर्षि सामंत
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोलकाता के न्यू मार्केट इलाके में एक रविवार को बारिश और उमस भरी शाम थी। उस क्षेत्र में उतनी हलचल नहीं थी जितनी आमतौर पर सप्ताह के दिनों में होती है। शायद यह रविवार के लिए था। हो सकता है कि यह बारिश के कारण हो। लेकिन मुझे लगा जैसे पूरे शहर को चिलचिलाती गर्मी में कड़ी मेहनत के बाद बादलों के नीचे स्नान करने से राहत मिली हो। वास्तव में, बारिश ने निवासियों को राहत दी!

मैंने एक बड़े जूते की दुकान के पास शरण ली, जहाँ फुटपाथ पर कुछ फेरीवाले अपनी बिक्री का सामान पॉलिथीन कवर में लपेट रहे थे, उनमें से कुछ ने मुझे अपनी आँखों में थोड़ी चमक के साथ कुछ खरीदने की पेशकश की। लेकिन मैं उस समय शॉपिंग मूड में नहीं था। मैं किसी से मिलने वाला था। जिसकी यादें मेरे दिमाग में भर जाती रहीं, जिसने मुझे एक गहरी आह के साथ भारी महसूस करने के साथ, उदासीन बना दिया। बारिश धीमी हो रही थी। लोग फिर से गली में निकल आए। यह देखकर, मैंने अपनी गति पकड़ ली और उस व्यक्ति से मिलने के लिए अपने गंतव्य पर पहुंच गया, जिसके साथ के लिए इतने लंबे समय से तरस रहा था। इस मोड़ पर, पाठक अधीर हो सकते हैं और उन्हें सस्पेंस में रखने के लिए मुझसे नाराज़ हो सकते हैं। उस दिन, स्पष्ट होने के लिए, मैं रात के शो में फिल्म "भूत-द हॉन्टेड शिप" देखने के लिए "द रॉक्सी" मूवी हॉल गया था। लेकिन फिर से पाठक अधीर हो सकते हैं और मुझसे पूछ सकते हैं कि बारिश से भीगी रात में उस हॉल में मेरी यात्रा में ऐसा क्या खास है। यहां तक कि मुझे न तो ऐसी हॉरर फिल्में देखने में दिलचस्पी थी और न ही उस फिल्म में अभिनेताओं या अभिनेत्रियों को देखने की बहुत उत्सुकता थी। फिर उस दिन नाइट शो में मुझे उस हॉल में क्या ले गया? इसके बंद होने से पहले रॉक्सी में यह आखिरी शो था। स्क्रीन को स्थायी रूप से सुर्खियों से बंद करने से पहले, गौरवशाली इतिहास और विरासत से हॉल उस समृद्ध विरासत से जो इसे निहारता है। ओपेरा हाउस के रूप में शुरू हुआ हॉल अभी भी कोलकाता में सबसे लंबे समय तक फिल्म चलाने का रिकॉर्ड रखता है। अशोक कुमार की 'किस्मत' 184 हफ्तों तक!

प्रोजेक्टर स्क्रीन में रोशनी, कैमरा और एक्शन के साथ शुरू हुआ, अंधेरे ने धीरे-धीरे मुझे आरामदायक कुर्सी में सहज महसूस करने के लिए चारों ओर घेर लिया, मैं अकेला बैठा था। अचानक सस्पेंस, कर्कश शोर और फिल्म के कुछ चरणों में डर ने मुझे प्रभावित नहीं किया। बल्कि जब मैं अपने अतीत में वापस चला गया तो यह मेरी आँखों से गायब हो गया। बचपन में, कोलकाता के हॉल में जवानी के दिनों की मीठी यादें। अपने पिता का हाथ पकड़ते समय मैं हर रविवार की शाम को न्यू मार्केट के इन हॉलों में जाता था। वर्तमान में, असाधारण मूवी हॉल की उस लीग के बीच। उस युग का केवल एक अकेला उत्तरजीवी है और वह "New Empire" है। हालांकि जब आप हॉल में प्रवेश करेंगे, तो आपको कभी नहीं लगेगा कि यह एक मूवी हॉल है, इसके बजाय आप महसूस करेंगे कि यह एक फूड मॉल है जो तली हुई चिकन, बर्गर, आइसक्रीम आदि परोसता है। इस हॉल के बगल में उनका दोस्त "Lighthouse" था, जो मेरे पसंदीदा हॉल में से एक था, जिसने अपनी आखिरी सांस ली थी और एक शॉपिंग मॉल के नीचे सो रहा



चैपलिन मूवी हाल



ग्लोब मूवी हाल

था.....मैंने उस हॉल में अर्नोल्ड श्वार्जनेगर की 'प्रीडेटर', स्टीवन स्पीलबर्ग की 'जुरासिक पार्क', सिल्वेस्टर स्टेलोन की 'फर्स्ट ब्लड', आमिर खान की 'सरफरोश' देखी थी। कुछ दूरी पर प्रतिष्ठित "Globe" सिनेमा हॉल था, जिसे पहले "The Opera House" के नाम से जाना जाता था, जिसमें ज्यादातर हॉलीवुड फिल्में दिखाई जाती थीं ... उनमें से कुछ प्रसिद्ध फिल्में "द साइलेंट ऑफ द लैम्ब", "द टाइटैनिक" आदि थीं। वास्तव में कोलकाता का पहला मूवी हॉल "Chaplin" था जिसे पहले "Elphinstone Picture Palace" के नाम से जाना जाता था, जिसने 1907 में अपनी यात्रा शुरू की थी और 2013 में ध्वस्त कर दिया गया था।

कोलकाता के एस्लेनेड क्षेत्रों में हॉल पैराडाइज, ओरिएंट, मेट्रो, ओपेरा, न्यू सिनेमा, ज्योति, जमुना, हिंद, मैजेस्टिक, मूनलाइट, क्राउन, टाइगर, लिबर्टी, सोसाइटी, जेम, एलीट जैसे सुंदर, सुरुचिपूर्ण नामों का दावा करता है।

बचपन से ही जब मैं अपनी जवानी की ओर बढ़ रहा था, तभी मैंने अर्नोल्ड श्वार्जनेगर, सिल्वेस्टर स्तेलोन, अल पचीनो, रॉबर्ट डी नीरो, रिचर्ड गेरे, वैन डैम, टॉम क्रूज, लियोनार्डो डी कैप्रियो, जिम कैरी, जोकिएन फीनिक्स, जॉन ट्रैवोल्टा आदि जैसे प्रसिद्ध हॉलीवुड अभिनेताओं को अपना आदर्श बनाना शुरू कर दिया था। मैंने श्वार्जनेगर की 'द टर्मिनेटर', स्तेलोन की 'रॉकी', अल पचीनो की 'द गॉडफादर', लियोनार्डो डी कैप्रियो की 'द टाइटेनिक' से लेकर टॉम क्रूज की 'टॉप गन', जिम कैरी की 'द मास्क' आदि जैसी फिल्मों को देखने के लिए अपनी कॉलेज की कक्षाओं को बंद करना शुरू कर दिया। उस समय हर सुबह मैं रविवार को एक प्रसिद्ध निर्देशक, सोमवार को एक पटकथा लेखक, मंगलवार को एक अभिनेता और बुधवार को एक संगीतकार बनने का सपना देखता था!!

मेरी छोटी उम्र में सिल्वर स्क्रीन का प्रभाव इतना गहरा था, कि मैंने अर्नोल्ड श्वार्जनेगर की शैली में अपने बाल कटवाए, सेना की तरह ट्रैकसूट खरीदी, जिम जाना शुरू कर दिया, काले धूप का चश्मा खरीदा और फिल्म "द टर्मिनेटर" में चित्रित अर्नोल्ड सर के चरित्र में मेरे परिवर्तन को देखने के लिए समय-समय पर दर्पण में देखने का एक शौक बनाया।

जब मैंने लाइटहाउस में आमिर खान की "सरफरोश" देखी, तो मुझे अचानक आईपीएस बनने की प्रेरणा मिली और बिना किसी दूसरे विचार के मैं यूपीएससी की किताबें खरीदने के लिए कॉलेज स्ट्रीट की ओर दौड़ पड़ा।

एक बार, मैंने फिल्म "शिवा" में चित्रित नागार्जुन के चरित्र को मूर्तिमान किया और यहां तक कि साइकिल चैन के साथ मार्शल कला का अभ्यास किया और अपने कॉलेज के दिनों के दौरान खुद का बचाव करने के लिए कुछ हॉकी स्टिक खरीदा।

फिल्म "द मास्क" में जिम कैरी के चरित्र ने मुझे शहर के डंपिंग ग्राउंड से ऐसा चमत्कारी मुखौटा खोजने के लिए प्रेरित किया, जो मेरे भाग्य को बदल सकता था और अंत में वह चरित्र जिसने मेरी कल्पना को पकड़ा और मुझ पर एक गहरी छाप छोड़ी, वह फिल्म "द टाइटेनिक" में "जैक" था, जिसे लियोनार्डो डी कैप्रियो के अलावा किसी और ने चित्रित नहीं किया था।

ये विचार धीरे-धीरे कॉलेज से मेरे पासआउट के साथ बूढ़े हो गए और उस क्षण मुझे रील लाइफ से वास्तविक दुनिया में फेंक दिया गया।

उस दौरान लोगों को अचानक केबल टीवी नेटवर्क के रूप में मनोरंजन की दुनिया में एक सफलता दिखी। केबल नेटवर्क का आगमन टेलीविजन के ब्रेकिंग न्यूज बन गया, जिसने समाचार से लेकर खेल तक फिल्मों और संगीत तक के कई चैनलों को स्ट्रीम करना शुरू कर दिया, इस प्रकार सिंगल स्क्रीन सिनेमा थिएटरों के लिए कब्रिस्तान खोद दिया ... केबल टीवी के इस आगमन का परिणाम कोलकाता के लोग थे जो ग्लैमर की दुनिया की एक झलक पाने के लिए सार्वजनिक/निजी परिवहन के माध्यम से यात्रा करके सप्ताहांत

मैं अपने परिवारों के साथ न्यू मार्केट के हॉल में घूमते थे, आखिरकार उस दुनिया को अपने कमरे के आराम में पा लिया। जिसने एक युग के अंत की शुरुआत की और एक ऐसी जगह जो कभी 'किस्मत', 'शीले', 'बॉबी', 'यादों की बारात', 'जंजीर', 'डॉन', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'नदिया के पार', 'एक दूजे के लिए', 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'कयामत से कयामत तक', 'मैंने प्यार किया', 'हम आपके हैं कौन' और अन्य असंख्य जयंती हिट फिल्मों चलाने का दावा करती थी।

एक समय ऐसा आया जब दक्षिण कोलकाता और उत्तरी कोलकाता में हॉल को भी लंबे समय तक चलाए रखना मुश्किल हो गया। स्वाद और पसंद में बदलाव के साथ, दक्षिण कोलकाता में उज्ज्वला, पूर्णा, कालिका, भवानी, इंदिरा, मधुबन, मलांचा, बंटी, उत्तरी कोलकाता में दर्पणा, छाया, रूपबानी, बीना और तस्वीर महल, केबल टीवी और मोबाइल फोन के आने से गए मनोरंजन के स्तर में काफी बदलाव आया है जिसके कारण इनका अस्तित्व अंधकार में डूब गया है।

अचानक अंधेरा जिसने मुझे घेर लिया था, वह जल्दी से कुर्सी के नीचे छिप गया, रोशनी चालू हो रही थी और स्क्रीन में "द एंड" दिखा रही थी। मैंने देखा कि चार-पांच युवा जोड़े उस समय हॉल से बाहर निकल रहे थे और फिल्म के बारे में चर्चा कर रहे थे। मैंने देखा कि टॉर्च के साथ लाइटमैन मेरी ओर आया, उसने अपनी लाइट जला दी और मुझे जाने के लिए कहा, उसकी आँखों से आँसू लुढ़क रहे थे ... यहां तक कि मैं भी उस समय अपनी आँखों में आँसू नहीं रोक सका। मैंने उस पल में खुद को "जैक" के रूप में महसूस किया, जो हॉल के उस लाइटमैन के साथ अंटार्कटिक के ठंडे, ठंडे पानी में जमे हुए और बेजान हो गए थे, टाइटैनिक के चालक दल के रूप में उसके होंठ में सीटी के साथ अभी भी उस ठंडे पानी में जीवित रहने वाले किसी भी जीवन की तलाश है!

जब मैं "रॉक्सी" से निकलकर बस स्टैंड की ओर बढ़ रहा था, तो मुझे लगा कि रॉक्सी, जिसे उस युग के अन्य हॉल के बगल में कब्रिस्तान में जगह मिलेगी, वह आखिरी बार मेरे लिए हाथ हिला रही थी, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या यह फिल्म का "द एंड" था जिसे मैंने देखा था या यह जादू और चमत्कार, ग्लैमर और चमक, लालित्य और प्रतिभा के युग का "द एंड" था। उस आखिरी दिन की स्मृति मेरे मन के कैनवस में हमेशा के लिए एक छाप छोड़ गई...



सीख



श्रीमती प्रियदर्शिनी सिंह
हिंदी अधिकारी

एक अरसे के बाद हमने घूमने का प्लान बनाया। चूंकि मैं तीन साल तक प्रधान महालेखाकार कार्यालय, त्रिपुरा, अगरतला में पदस्थापित थी, जब भी छुट्टी लेकर घर कोलकाता आती, कुछ न कुछ काम आ ही जाता और हम कहीं घूमने जा ही नहीं पाते। इसी कारण से मेरे घरवाले भी कहीं नहीं जा पाये। पर अभी मैं कोलकाता में ही हूँ और इस बार हमने अंततः सिक्किम घूमने जाना तय किया। घूमने जाना तय होते ही हमारी योजनाएँ बनने लगीं- कब जाना है, कैसे जाना है, कहाँ-कहाँ जाना है आदि। और जाने का दिन आ ही गया। सब अत्यंत उत्सुक थे क्योंकि बहुत सालों के बाद हम सब एक साथ निकले थे। ऐसा लग रहा था मानों सब बच्चे ही बन गए थे। मेरी माँ और मेरी बेटी की बातें एक समान लग रही थीं। हम सब कोलकाता विमानपत्तन से बागडोगरा पहुंचे जहां कार पहले से ही हमारा इंतज़ार कर रही थी। हम सभी अपने सामान को सेटल कर कार में बैठ गए और अगले एक हफ्ते की यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में खाते-पीते सब अपनी ही धुन में मस्त होकर बाहर देख रहे थे। जैसे ही पहाड़ या नदी या बादलों के झुंड का कोई मनोहर दृश्य आता, सभी खुश होकर एक दूसरे को दिखाने लगते। मेरी बहन को पहली बार मैंने खुश होने पर चिल्लाते देखा था।

जगह-जगह कार रोककर हम तस्वीरें ले रहे थे। पर प्रकृति की सुंदरता, उसके विविध रूप को कोई कैमरे में हूबहू कैद कर सकता है भला! हम तो बस यादें बटोर रहे थे अपने लिए। ऐसा लग रहा था मानो हर दृश्य को अपनी आँखों में सदा के लिए भर लें। सिक्किम की एक और विशेषता है- पूरा का पूरा राज्य बिल्कुल साफ-सुथरा है। हमारे लिए यह किसी विशेषता से कम नहीं था। जुलूक, गैंगटोक, नामची, पेलिंग सब एक से बढ़कर एक थे। मन में एक बार नहीं बल्कि कई बार ख्याल आया कि काश हम हमेशा के लिए यहीं रह पाते- प्रदूषण, भीड़-भाड़, कोलाहल से दूर, प्रकृति की गोद में। मेरी बेटी को तो बादल आइसक्रीम के समान लग रहे थे। कह रही थी कि ऐसा लग रहा है अभी एक स्कूप आइसक्रीम लेकर खा जाऊँ।

पर जिस जगह ने मेरे हृदय पर सबसे गहरी छाप छोड़ी है वह है लाचुंग। सुना था और इंटरनेट पर पढ़ा भी था तथा तस्वीरें भी देखी थी कि लाचुंग कितना सुंदर है। सुंदरता व्यक्त करने के लिए और भी अनेक शब्द हैं पर मेरे लिए “सुंदर” शब्द ही सबसे सरल और सबसे सार्थक है।

हम गैंगटोक से लाचुंग के लिए निकल पड़े। रास्ते में हमने दिल को छू जाने वाले बहुत से दृश्य देखे पर जैसे ही हम लाचुंग के करीब पहुंचे, मेरा दिल मुँह को आ गया। लाचुंग पहुँचने से पहले चुंगथांग



शहर आता है। 3 अक्टूबर, 2023 को करीब रात के 12.30 बजे “ग्लेशियर लेक आउटबर्स्ट फ़्लड” के कारण शहर का हुलिया ही बदल गया था। इसकी गति इतनी तीव्र थी कि इसकी चपेट में जो भी आया, लापता हो गया। पूरा का पूरा कांक्रीट पुल बह गया। इस भयावह रूप की किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। तीस्ता ।।। बांध पूरी तरह से ध्वस्त हो गया था। यहाँ सिक्किम ऊर्जा (तीस्ता ।।।) के बांध का कार्यालय था।

महाप्रबंधक का कार्यालय एवं अन्य आवासीय क्वार्टर भी यहीं स्थित थे। “ग्लेशियर लेक आउटबर्स्ट फ़्लड” सब कुछ बहा ले गया और अपने पीछे छोड़ गया विशाल चट्टानें। इसकी विभीषिका को बयां करने की ताकत मेरे शब्दों में नहीं हैं या शायद मैं बयां कर ही न पाऊँ।



इस घटना को सात माह हो चुके हैं। भारतीय सेना चुंगथांग शहर को फिर से बसाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। परन्तु फिर भी अनेक प्राकृतिक कारणों से अभी बहुत सारा काम किया जाना बाकी है। सात महीने बीतने के बाद की ये तस्वीरें इस बात के गवाह हैं कि उस रात की घटना एवं उसके बाद की वास्तविकता भी कल्पना से परे है। भारतीय सेना द्वारा लोगों एवं सामग्रियों को ले जाने-आने के लिए गाड़ियों को पार करने हेतु तीस्ता पर बांस का एक अस्थायी पुल बनाया है। यू तो हर बार पुल आने पर हम खुशी-खुशी उतरकर तस्वीरें ले रहे थे परन्तु चुंगथांग की इस पुल पर उतरने का साहस कोई भी नहीं

कर पा रहा था। एक अजीब- सी असहजता महसूस हो रही थी। चारों ओर देखकर मुझे ऐसा लग रहा था कि सबकी चीखें सुनाई दे रही हैं। मेरी बेटी तो ये सब देखकर इतना डर गई थी कि वो गाड़ी से उतरने को तैयार ही नहीं हुई। हम बड़े लोगों की रूह ही कांप उठी थी चुंगथांग की बर्बादी देखकर तो भला बाल-हृदय इसे कैसे सँभाल पाता! गाड़ी में सभी चुपचाप बैठे थे। ऐसा लग रहा था कि किसी ने कल्पना से जगाकर वास्तविकता की जमीन पर पटक दिया हो।

पुल से होकर हम लाचुंग के लिए आगे की ओर बढ़े। रास्ते की हालत बहुत खराब थी। टूटे घरों और टूटी हुई सड़कों को देखकर मन बैठ गया। पर आश्चर्य करने वाली बात थी कि लोगों का मनोबल नहीं टूटा था। सभी लोग अपने काम में मग्न थे। आपस में हंसी-मज़ाक कर रहे थे। यही सब देखते-देखते हम लाचुंग अपने होटल पहुंच गए। होटल में सारी सुविधाएं उपलब्ध थीं। सब थक कर चूर थे। इतने उतार-चढ़ाव के बाद तो बस बिस्तर ही नज़र आ रहा था। हम सब अपने-अपने कमरों में फ्रेश होकर खाने के लिए पहुंचे। खाने की व्यवस्था भी अच्छी थी। पर जो खाना परोस रहे थे, उनकी एक अंगुली पर कपड़ा बंधा हुआ था। मैंने उनसे पूछा कि क्या हुआ



है। उनसे बात करने पर पता चला कि प्याज़ काटते समय उनकी अंगुली कट गई थी। इतना कहकर वे चले गए। पर मैं वहीं अटकी रह गई। बड़े ही अन्यमनस्क मन से मैंने खाना खाया। वहीं एक और व्यक्ति थे जो पानी दे रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि कपड़े की जगह वे बैंड-एड लगा सकते थे। कपड़ा तो भीग जाता है, उनका घाव कैसे सूखेगा। इस पर उन्होंने कहा कि यहां चीजें बहुत मुश्किल से मिलती हैं। दवाइयों से लेकर सब्जी तक सारी चीजों को बाहर से मंगवाना पड़ता है। कभी-कभी तो सामान आने में 15 से 20 दिन लग जाते हैं। उन्हें सीमित राशन एवं उपलब्ध चीजों में ही अपना गुज़ारा करना पड़ता है। मैंने उनसे पूछा कि वे कहां से हैं। इस पर उन्होंने बताया कि वे बिहार से हैं। त्योहार में भी घर जाना मुश्किल हो पाता है। शहर से घर जाने वाली गाड़ी पकड़ने के लिए दिन में एक बार ही एक जीप आती है और अगर वह छूट गई तो अगले दिन का इंतज़ार करना पड़ता है। अपने पसंद का खाना तक उन लोगों को नहीं मिलता। पानी का एकमात्र ज़रिया पहाड़ों से आने वाले झरने हैं जिन्हें फिल्टर करके पीने लायक बनाया जाता है। बारिश के समय भूस्खलन के कारण रास्ते टूट जाते हैं जिससे पर्यटकों का आना-जाना बंद हो जाता है और साथ ही बंद हो जाता है उनकी कमाई का ज़रिया। ठंड में तो सबकुछ थम जाता है। बर्फ़बारी के कारण उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

बातें शुरू हुई तो धीरे-धीरे उनकी कठिनाइयों का पता चलने लगा। मैंने उनसे कहा कि इतनी तकलीफ झेलने से अच्छा है घर चले जाइए। परंतु उन लोगों का जवाब था कि वे खुश हैं, उन्हें किसी बात की कोई शिकायत नहीं है। जीवन है तो कठिनाइयाँ तो होंगी ही। उन्होंने बताया कि सेना की तत्परता के कारण उन्हें बहुत कुछ मिल जाता है, राहत कार्य भी वे जल्दी करने का प्रयास करते हैं। परंतु हर चीज़ को ठीक करने में समय लगता है। हम सब उनकी बातें सुनकर हैरान थे। उसके बाद हम उठे और सब चुपचाप अपने कमरे में सोने चले गए। पर मेरी आंखों से नींद गायब थी। रह-रहकर चुंगथांग की बर्बादी के मंजर याद आ रहे थे। रास्ते में दिखे उन लोगों के हँस्ते चेहरे याद आ रहे थे। होटल के स्टाफ की बातें कान में गूँज रही थी। इतनी विषमताओं के बाद भी वे खुश थे, जीवन को सही मायने में जी रहे थे। और हम!! जितना भी मिले उतना कम है। उस रात इस बात का एहसास हुआ कि ईश्वर ने कितना कुछ दिया है। अब हर छोटी बात पर शिकायत करना छोड़ दूँगी। विषम परिस्थिति में भी खुश एवं पॉजिटिव रहने का प्रयास करूँगी। यही सब सोचते-सोचते पता नहीं कब नींद आ गई। अगली सुबह उठकर फ्रेश होने के पश्चात सबसे पहले मैंने अपना मेडिकल किट उठाया और उसमें से बैंड-एड निकालकर उन्हें देने चली गई जिनकी अंगुली कटी थी। जब मैंने उन्हें बैंड-एड दिया तो हैरानी से वे मुझे देखने लगे। मैंने कहा लगा लीजिएगा, घाव जल्दी ठीक हो जाएगा। ये कोई बहुत अलग या अद्भुत बात नहीं है। परंतु उनकी बातों ने मेरे दिल पर एक अमिट छाप छोड़ दी है। किसी भी परिस्थिति को अपनाकर उससे लड़ना या शिकायत करना, दोनों अपने हाथ में है।

उस दिन हमें लाचुंग से गैंगटोक वापस आना था। हम गाड़ी में बैठे और चल पड़े अपनी मंजिल की ओर। लौटते समय एक अजीब-सा एहसास मन में था। उन्हीं मंजर को देखते हुए हम लौट रहे थे पर अब इन्हें देखकर डर नहीं लग रहा था, हताशा नहीं हो रही थी। क्योंकि मन के किसी कोने में ये विश्वास था कि सब ठीक हो जाएगा। सब ठीक होना ही होगा।



सुनील छेत्री- एक जीवित किंवदंती



श्री शुभाशीष टे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुनील छेत्री भारतीय फुटबॉल में एक महान व्यक्तित्व के रूप में खड़े हैं, जो इस खेल के सार का प्रतीक है और लाखों लोगों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर रहा है। एक युवा लड़के का पेशेवर फुटबॉल खेलने का सपना तथा भारतीय फुटबॉल इतिहास में सर्वोच्च स्कोरर बनने तक का सफर उनके निरंतर जुनून, समर्पण और उत्कृष्टता का प्रमाण है। छेत्री का प्रभाव उनकी ऑन-फील्ड उपलब्धियों से भी आगे तक फैला हुआ है, जो भारत में फुटबॉल के विकास तथा उनके बातचीत पर गहरा प्रभाव भी डालता है।



3 अगस्त 1984 को भारत के आंध्र प्रदेश के सिकंदराबाद (अब तेलंगाना) में जन्मे सुनील छेत्री, बहुत कम उम्र में फुटबॉल से परिचित हो गए थे। उनके माता-पिता, दोनों खेल से जुड़े थे, जिसने फुटबॉल में उनकी प्रारंभिक रुचि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके पिता, खड़गा छेत्री, भारतीय सेना में एक अधिकारी थे और सेना टीम के लिए फुटबॉल खेलते थे, जबकि उनकी मां, सुशीला छेत्री, नेपाल महिला राष्ट्रीय वॉलीबॉल टीम के लिए खेलती थीं। ऐसे माहौल में पले-बढ़े छेत्री का फुटबॉल के प्रति रुझान स्वाभाविक था और उनमें गहराई से समाया हुआ था। छोटी उम्र से ही छेत्री ने खेल में गहरी रुचि दिखाई। उनकी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा गंगटोक, सिक्किम के बहाई स्कूल में और बाद में कोलकाता के लोयोला स्कूल में हुई। पश्चिम बंगाल ने उन्हें कई अंतर-स्कूल टूर्नामेंटों में भाग लेते देखा। यह स्पष्ट था तथा उनके आस-पास मौजूद सभी लोगों को यह पता भी था कि फुटबॉल सिर्फ छेत्री का शौक नहीं था; यह उनका जुनून था और भविष्य भी।

युवा और क्लब फुटबॉल के माध्यम से यात्रा

छेत्री की औपचारिक फुटबॉल यात्रा तब शुरू हुई जब वह भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित फुटबॉल क्लबों में से एक, मोहनबागान की युवा अकादमी में शामिल हुए। उनका समय अकादमी में, उनके कौशल को निखारने और पेशेवर फुटबॉल की बारीकियों को समझने में महत्वपूर्ण थी। स्कूल टूर्नामेंट में खेलने से लेकर देश के शीर्ष क्लबों में से एक के साथ प्रशिक्षण तक का संक्रमण उनके करियर में एक महत्वपूर्ण कदम था। 2002 में, 17 साल की उम्र में, छेत्री ने नेशनल फुटबॉल लीग (एन॰एफ॰एल) में मोहनबागान के साथ अपने पेशेवर करियर की शुरुआत की। अपने कार्यकाल के दौरान क्लब के असंगत प्रदर्शन के बावजूद छेत्री की प्रतिभा निखर कर सामने आयी। उनके गोल करने की अद्भुत क्षमता और स्थिति निर्धारण की गहरी समझ के प्रदर्शन के वजह से वे फुटबॉल प्रेमियों और स्काउट्स के ध्यान में समान रूप से आ गए।

प्रमुखता से उभरना

2005 में जे॰सी॰टी (जगतजीत कॉटन एंड टेक्सटाइल फुटबॉल क्लब) में जाना छेत्री के करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। जे॰सी॰टी में उन्होंने दो सत्रों (seasons) में 48 मैचों में 21 गोल करके वास्तव में अपने लिए नाम कमाना शुरू कर दिया। उनका प्रदर्शन केवल गोल की संख्याओं के बारे में नहीं था, बल्कि खेल को प्रभावित करने की उनकी क्षमता, उनकी कार्य नीति और मैदान पर उनके नेतृत्व गुणों के बारे में भी था। जे॰सी॰टी में छेत्री के कारनामों ने सबका ध्यान आकर्षित किया और 2008 में, भारतीय फुटबॉल के सबसे बड़े क्लबों में से एक, ईस्ट बंगाल ने उनके साथ अनुबंध किया। ईस्ट बंगाल में उनके कार्यकाल ने उनकी प्रतिष्ठा को एक शीर्ष स्ट्राइकर के रूप में और भी मजबूत किया। उनकी गोल स्कोरिंग क्षमता लगातार बढ़ती रही और वह प्रशंसकों के एक पसंदीदा खिलाड़ी बन गए। वे महत्वपूर्ण मैचों में बेहतरीन प्रदर्शन करने की क्षमता के लिए जाना जाने लगे।

राष्ट्रीय टीम निर्णायक

सुनील छेत्री ने 2005 में पाकिस्तान के साथ एक मैच के दौरान भारतीय राष्ट्रीय टीम में पदार्पण किया। राष्ट्रीय टीम में उनके प्रवेश ने एक उल्लेखनीय अंतर्राष्ट्रीय कैरियर की शुरुआत की। छेत्री जल्द ही टीम का एक अभिन्न हिस्सा बन गए, उन्होंने महत्वपूर्ण गोल किए और टीम में व्यावसायिकता और समर्पण का एक नया स्तर ले आए। भारत के लिए छेत्री का शुरुआती उल्लेखनीय प्रदर्शन 2007 नेहरू कप के दौरान आया, जहाँ उन्होंने भारत की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2008 ए॰एफ॰सी चैलेंज कप के फाइनल में तजकिस्तान के खिलाफ उनका हैट्रिक एक और मुख्य आकर्षण था, जिससे दबाव में और महत्वपूर्ण मैचों में उनके प्रदर्शन करने की क्षमता को प्रदर्शित किया था। इस जीत ने भारत को 2011 ए॰एफ॰सी एशियन कप के लिए क्वालीफाई करने में भी मदद की, जो भारतीय फुटबॉल के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

क्लब की सफलताएँ और अंतर्राष्ट्रीय उद्यम

छेत्री के क्लब करियर में उन्हें विभिन्न टीमों में घूमते हुए देखा गया, प्रत्येक कार्यकाल में उनका अनुभव और उनकी प्रशंसा बढ़ती गयी। ईस्ट बंगाल के बाद, उन्होंने डेम्पो एस०सी जैसे क्लबों के लिए खेला, जहां उन्होंने अपना गोल स्कोरिंग सिलसिला जारी रखा और टीम को आई-लीग खिताब जीतने में मदद की। 2010 में छेत्री ने, मेजर लीग सॉकर (एम०एल०एस) क्लब कैनसस सिटी विजार्ड्स (अब स्पोर्टिंग कन्सास शहर) के साथ हस्ताक्षर करके एक साहसी कदम उठाया। हालाँकि एम०एल०एस में उनका समय कम था और उन्हें नियमित रूप से खेलने के लिए संघर्ष करना पड़ा परंतु उनका अनुभव अमूल्य था। इस समय ने, अधिक प्रतिस्पर्धी और संरचित वातावरण में फुटबॉल के कामकाज के बारे में, छेत्री को अंतर्दृष्टि प्रदान की।

छेत्री को अंतर्राष्ट्रीय क्लब करियर में पुर्तगाल की शीर्ष लीग प्राइमिरा लीगा में स्पोर्टिंग क्लब डी पुर्तगाल बी के लिए भी खेलते हुए देखा गया। हालाँकि उन्होंने मैदान पर कोई खास प्रभाव नहीं डाला, लेकिन यूरोपीय लीग में उनकी उपस्थिति भारतीय फुटबॉल के लिए एक मील का पत्थर थी। इसने प्रदर्शित किया कि भारतीय खिलाड़ी शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लीग पर अवसरों की आकांक्षा कर सकते हैं और उन्हें हासिल कर सकते हैं।

भारतीय फुटबॉल में घर वापसी और प्रभुत्व

छेत्री नए उद्देश्य की भावना के साथ भारत लौटे और 2013 में बेंगलुरु एफ०सी में शामिल हो गए। यह कदम उनके करियर में सबसे प्रभावशाली में से एक साबित हुआ। छेत्री को एक ऐसा क्लब मिला जो उनकी महत्वाकांक्षाओं से मेल खाता था और उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच प्रदान करता था। बेंगलुरु एफ०सी के साथ उनका जुड़ाव उनके और उनके संघ दोनों के लिए बेहद सफल रहा है। छेत्री के नेतृत्व में, बेंगलुरु एफ०सी ने कई आई लीग खिताब, इंडियन सुपर लीग (आई०एस०एल) खिताब, और कई घरेलू कप प्रतियोगिताएं जीते हैं। बेंगलुरु एफ०सी पर छेत्री का प्रभाव उनके गोल स्कोरिंग से कहीं आगे तक फैला हुआ है; उन्होंने टीम के भीतर विजयी संस्कृति और व्यावसायिकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आई०एस०एल में भी उनका लगातार प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा है। लीग में शीर्ष स्कोररों में से एक के रूप में, छेत्री ने प्रदर्शन किया है कि उम्र महज एक संख्या है, 30 की उम्र तक भी उन्होंने उच्च स्तर की फिटनेस और अपने प्रदर्शन बरकरार रखा है। तेजी से विकसित हो रहे फुटबॉल परिदृश्य में अनुकूलन रहने और प्रासंगिक बने रहने की उनकी क्षमता उनके समर्पण और कार्य नैतिकता का प्रमाण है।

उपलब्धियाँ और रिकॉर्ड: सुनील छेत्री की उपलब्धियों की सूची बहुत लंबी है और बढ़ती ही जा रही है। उन्होंने कई घरेलू लीग खिताब और व्यक्तिगत पुरस्कार जीते हैं, जिससे भारतीय इतिहास के सबसे महान फुटबॉल खिलाड़ियों में से एक के रूप में उनकी स्थिति मजबूत हुई है। उनकी कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:-

- **भारत के लिए अब तक के सबसे ज़्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी:** 2024 तक, छेत्री ने 80 से ज़्यादा अंतर्राष्ट्रीय गोल किए हैं, जिससे वह क्रिस्तियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेस्सी जैसे दिग्गजों के साथ दुनिया के शीर्ष गोल स्कोरर बन गए हैं। इस उपलब्धि ने भारतीय फुटबॉल को वैश्विक पहचान दिलाई है और छेत्री की असाधारण प्रतिभा को उजागर किया है।
- **सैफ चैम्पियनशिप में जीत:** छेत्री ने भारत को कई दक्षिण एशियाई फुटबॉल महासंघ (सैफ) चैम्पियनशिप खिताबों पर पहुंचाया है, लगातार उच्च स्तर का प्रदर्शन किया है और अक्सर महत्वपूर्ण मैचों में बदलाव लाने वाले खिलाड़ी रहे हैं।
- **पुरस्कार और सम्मान:** छेत्री को कई व्यक्तिगत पुरस्कार मिले हैं, जिनमें कई बार ए॰आई॰एफ॰एफ प्लेयर ऑफ द ईयर का पुरस्कार भी शामिल है। भारतीय खेलों में उनके योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें प्रतिष्ठित पद्म श्री और अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है।

भारतीय फुटबॉल पर प्रभाव

भारतीय फुटबॉल पर सुनील छेत्री का प्रभाव उनके गोल स्कोरिंग कारनामों और रिकॉर्डों से कहीं आगे तक फैला हुआ है। उनकी व्यावसायिकता, कार्य नैतिकता और समर्पण ने भारतीय फुटबॉल खिलाड़ियों के लिए नए मानक स्थापित किए हैं तथा नई पीढ़ी के खिलाड़ियों को अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने की प्रेरणा दी है। छेत्री का प्रभाव कई प्रमुख क्षेत्रों में देखा जा सकता है:

1. **युवा खिलाड़ियों के लिए रोल मॉडल:** एक युवा आकांक्षी से फुटबॉल के दिग्गज बनने तक का छेत्री का सफ़र भारत में महत्वाकांक्षी फुटबॉलरों के लिए एक ब्लूप्रिंट है। मैदान के अंदर और बाहर दोनों जगह खेल के प्रति उनके समर्पण ने दिखाया है कि कड़ी मेहनत और लगन से सफलता हासिल की जा सकती है।
2. **नेतृत्व और मार्गदर्शन:** भारतीय राष्ट्रीय टीम और बेंगलुरु एफ॰सी के कप्तान के रूप में, छेत्री के नेतृत्व के गुण एक सुसंगत और प्रतिस्पर्धी टीम विकसित करने में महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने युवा खिलाड़ियों को सलाह दी है, अपने अनुभव साझा किए हैं और उन्हें पेशेवर उत्कृष्टता की ओर बढ़ने का मार्गदर्शन किया है।
3. **फुटबॉल विकास की वकालत:** छेत्री भारतीय फुटबॉल में बेहतर बुनियादी ढांचे, युवा विकास कार्यक्रमों और पेशेवर प्रबंधन की आवश्यकता के बारे में मुखर रहे हैं। उनकी वकालत ने देश में खेल के पारिस्थिति की तंत्र में क्रमिक सुधार में योगदान दिया है। इंडियन सुपर लीग (आई॰एस॰एल) और घरेलू लीगों के पुनर्गठन जैसी पहल भारत में फुटबॉल के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी और पेशेवर माहौल बनाने की आवश्यकता से प्रभावित है।
4. **वैश्विक मान्यता:** छेत्री की उपलब्धियों और रिकॉर्ड ने भारतीय फुटबॉल को वैश्विक मान्यता दिलाई है। उनका नाम अब दुनिया के कुछ महानतम फुटबॉलरों के साथ लिया जाता है, जो भारतीय फुटबॉल में

मौजूद क्षमता और प्रतिभा को उजागर करता है। इस मान्यता ने भारत में खेल की ओर अधिक ध्यान आकर्षित करने में मदद की है, जिससे विभिन्न हितधारकों से निवेश और समर्थन को बढ़ावा मिला है।

5. **सांस्कृतिक प्रभाव:** छेत्री का प्रभाव फुटबॉल के मैदान से परे तक फैला हुआ है। वह लाखों भारतीयों की आकांक्षाओं और सपनों का प्रतिनिधित्व करते हुए एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गए हैं। उनकी विनम्रता, समर्पण और मिलनसार व्यवहार ने उन्हें खेल की सीमाओं से परे एक प्रिय व्यक्ति बना दिया है।

आगे का सफर

सुनील छेत्री लगातार खेलते रहने की प्रेरणा देते रहते हैं, उनकी विरासत पहले से ही मजबूती से स्थापित हो चुकी है। तथापि, उनके धीमे होने के कोई संकेत नहीं दिखते। छेत्री की शारीरिक स्थिति को बनाए रखने की प्रतिबद्धता और सफलता के लिए उनकी भूख से पता चलता है कि उनके पास अभी भी भारतीय फुटबॉल को देने के लिए बहुत कुछ है। भविष्य में छेत्री की भूमिका सिर्फ एक खिलाड़ी से कहीं आगे जा सकती है। खेल के बारे में उनका विशाल अनुभव और समझ उन्हें फुटबॉल प्रशासन, कोचिंग और मेंटरशिप में विभिन्न भूमिकाओं के लिए एक आदर्श उम्मीदवार बनाती है। इस बात की उम्मीद बढ़ रही है कि छेत्री इन क्षमताओं में भारतीय फुटबॉल में योगदान देना जारी रखेंगे, जिससे देश में खेल के भविष्य को आकार देने में मदद मिलेगी।

सुनील छेत्री की कहानी इस बात का प्रमाण है कि जुनून, समर्पण और खुद पर अटूट विश्वास के साथ क्या हासिल किया जा सकता है। सिकंदराबाद में अपने शुरुआती दिनों से लेकर वैश्विक फुटबॉल आइकन बनने तक, छेत्री की यात्रा दृढ़ संकल्प और उत्कृष्टता की एक प्रेरक गाथा है। उन्होंने न केवल भारतीय फुटबॉल के बारे में चर्चा को बदला है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक ब्लूप्रिंट भी प्रस्तुत किया है। छेत्री की विरासत केवल गोल और रिकॉर्ड से नहीं बल्कि भारतीय फुटबॉल और लाखों प्रशंसकों के दिलों पर उनके द्वारा छोड़ी गई अमिट छाप से मापी जाती है। गोल करना और रिकॉर्ड तोड़ना जारी रखते हुए, सुनील छेत्री एक जीवित किंवदंती, आशा की किरण और भारतीय फुटबॉल में जो संभव है, उसका प्रतीक बने हुए हैं। उनकी कहानी अभी खत्म नहीं हुई है, और उनका प्रभाव आने वाली पीढ़ियों तक महसूस किया जाएगा।



बिष्णुपुर: कलात्मक उत्कृष्टता तथा टेराकोटा वास्तुकला का शहर



श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली
वरिष्ठ अनुवादक

“कला अथवा शिल्प” किसे कहते हैं? कला अथवा शिल्प वह है जिसके द्वारा सनुष्य के मन के संवेदना तथा चिंतन को कई रूप में उकेरा जाता है। कला के कई प्रकार हैं जैसे संगीत, नृत्य, साहित्य, प्रदर्शन, मूर्तिकला, चित्रकला तथा वास्तुकला। इसके अतिरिक्त भारतीय वास्तुकला में गोंबद, स्तम्भ या खम्भ, विमानों की प्रतीकात्मक कला तथा धार्मिक मत/सिद्धांत को दर्शाते नकाकाशीकृत मोटिफ भी शामिल हैं। ”

भारत एक ऐसा देश है जो प्राचीन काल से ही कला और वास्तुकला की दुनिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय वास्तुकला भारत के इतिहास, संस्कृति और धर्म में निहित है। भारत के अन्य राज्यों के साथ पश्चिम बंगाल का कला जगत से प्रचीनकाल से ही विशेष संपर्क रहा है। पश्चिम बंगाल जीवंत लोक कला परंपराएं- जैसे कि पटचित्र, वास्तुकला, सृजनशीलता और प्रेरणा का एक केंद्र बना है। पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में स्थित बिष्णुपुर की कला एवं वास्तुकला से आपका परिचय कराते हैं। यह शहर स्थानीय रूप से उपलब्ध लेटराइट पत्थरों से बने अद्वितीय टेराकोटा मंदिरों और गौरवशाली अतीत के लिए प्रसिद्ध है। टेराकोटा का शाब्दिक अर्थ है ‘पकी हुई मिट्टी’।

बिष्णुपुर में टेराकोटा से बने बीस मंदिर हैं जो अपने वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं। बिष्णुपुर के मंदिर संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन की सूची में शामिल हैं। मल्ल शासकों के नाम पर मल्लभूमि को मल्लभूम भी कहा जाता है। बिष्णुपुर का प्रसिद्ध मेला प्रत्येक वर्ष दिसंबर के अंतिम सप्ताह के आस-पास राज दरबार में आयोजित किया जाता है। बिष्णुपुर मेला का उद्घाटन बिष्णुपुर घराना से कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा गाथी गई घराना संगीत के साथ किया गया। बिष्णुपुर मेला के स्थलों से हस्तशिल्पकारों ने हस्तशिल्प बेचकर एक बड़ी आमदनी प्राप्त की। मेले के बाद बिष्णुपुर में उत्सव होता है जिसमें संगीत और नृत्य के क्लासिकल उत्सव का आयोजन किया



टेराकोटा का बना नब नारी कुंज

जाता है, जो संगीत में 'बिष्णुपुर घराना' को मान्यता प्रदान करने के लिए किया जाता है। यह वर्ष 2012 के बाद बंद हो गया था परंतु वर्ष 2018 से राशमंच पर पुनः आरंभ किया गया।

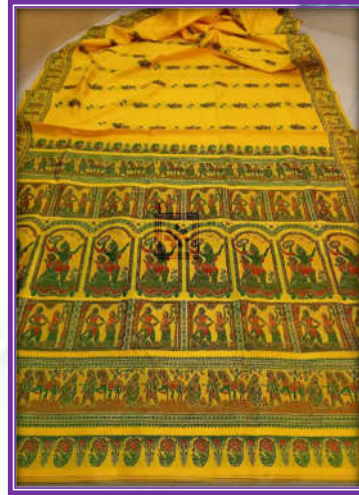
मदन मोहन मंदिर

अगर हम शादी के लिए बंगाल साड़ियों की परंपरा के बारे में बात शुरू करते हैं तो बालूचरी साड़ियां और स्वर्णचरी सिल्क साड़ी आज भी फैशन में हैं। मंदिरों की दीवारों से ली गई पौराणिक कथाओं और बालूचरी साड़ियों पर बुनी गई पौराणिक कहानियाँ बिष्णुपुर में एक आम विशेषता है। बिष्णुपुर



मोजुमोन मंडल को बालूचरी का पिता या प्रवर्तक माना जाता है। बालूचरी साड़ियों की बुनाई बंगाल के प्रथम नवाब मुर्शीद कुली खान के काल में फली-फूली जो पूर्व में हिंदू ब्राह्मण (सूर्य नारायण मिश्रा) थे, जिन्होंने बाद में इस्लाम धर्म को अपना लिया था। इस साड़ी का नाम बालूचरी इसलिए अस्तित्व में आया क्योंकि इनकी की बुनाई लगभग 500 साल पहले पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के बालूचर नामक एक छोटे से गाँव में शुरू हुई थी। सबसे पहले मुर्शीद कुली खान इस शिल्प को पश्चिम बंगाल के बालूचर गांव में लेकर आए और जैसे-जैसे समय बीतता गया, यह बुनाई परंपरा की संस्कृति बांकुरा जिले के मंदिरों के शहर बिष्णुपुर में चली गई। बालूचरी साड़ी अपने विस्तृत 'आंचल' (पल्लू) के लिए प्रसिद्ध हैं। इसे भारत के सभी रेशमों में सबसे प्यारा और सबसे आकर्षक के रूप में सराहा गया है। यह कला हाथ से बुनी रेशम की साड़ियों के माध्यम से कहानियों को चित्रित करने के बारे में है।

इन साड़ियों में रामायण, महाभारत और अन्य पौराणिक कथाओं के दृश्यों को दर्शाया गया है। इसके अलावा ऐतिहासिक मंदिरों पर बनी मूर्तियां साड़ी के बॉर्डर और पल्लू पर बुनी गई हैं। पल्लू में बालूचरी का काम कलाकार की गहरी संलग्नता और हमारी परंपरा को आगे बढ़ाने की प्रेरणा को दर्शाता है। उनके प्रोत्साहन से इस कला को दुनिया भर में प्रशंसा मिली। इस कला की शुरूआती कहानी से अंततः इसका नाम बालूचरी साड़ी रखा गया। हाल के दिनों में, बुनाई की विधि में बहुत कम बदलाव हुआ है, लेकिन इन वस्त्रों को वस्त्रकारों द्वारा पैटर्न में उपयोग किए गए धागों के आधार पर तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है। रेशम बालूचरी इस प्रकार में सबसे साधारण है। इन साड़ियों में सिल्क के धागे एक ही रंग में होते हैं, जो पुरी बुनाई में उपयोग होते हैं। मीनाकारी साड़ियाँ दो या दो से अधिक रंगों के धागों से डिज़ाइन की जाती हैं, जिनमें आकर्षक मीनाकारी काम भी होता है जो पैटर्न को और भी चमकदार बनाता है। स्वर्णचरी बालूचरी सबसे शानदार मानी जाती हैं, जो सोने या चांदी रंग के धागों से बुनी जाती हैं जो पैटर्न को बहुत अधिक चमकाते हैं। बालूचरी साड़ी को यह श्रेष्ठता हासिल है कि इसने वर्ष 2009 और 2010 में भारतीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा प्रस्तुत किए गए 34 राष्ट्रीय पुरस्कारों में मुख्य बुनाई शैलियों के लिए पुरस्कार जीता है।



पारंपरिक बिष्णुपुरी स्वर्णचरी तथा बालूचरी साड़ी।

बांकुड़ा घोड़ा पंचमुरा गांव में उत्पादित टेराकोटा का घोड़ा है, जो बिष्णुपुर नगर से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस मिट्टी के कला की मान्यता को इस बात से पता लगा सकते हैं कि इसे सर्वभारतीय हस्तशिल्प बोर्ड के लोगो के रूप में स्वीकार किया गया है। मूल रूप से इसे गांव की पूजाओं के लिए प्रयुक्त किया जाता था। कोलोनीयल काल में बांकुड़ा जंगल और जंगली जानवरों से भरपूर जिला था। इन मिट्टी के घोड़ों के साथ हाथी और बाघ के अन्य प्राणियों की रचना गांव वालों द्वारा



टेराकोटा से बना घोड़ा

वन देवताओं के लिए सुरक्षा हेतु खरीदी गई थी। पंचमुरा, हमीरपुर, बिष्णुपुर, सोनमुखी, राजग्राम और कुछ अन्य गांव बांकुड़ा मिट्टी के महत्वपूर्ण केंद्र थे। प्रत्येक स्थान के पास अपनी स्थानीय और पुरातन शैली थी। लेकिन पंचमुरा शैली का पोटरी (Pottery) अब तक सभी प्रकार में सबसे अच्छा और बेहतरीन है। इसके आकार की सममिति, शरीर के गोलाकार कर्वों की ताल, खासकर घोड़ों की, इसकी रचना को गरिमा और मोहकता प्रदान करती है। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान, टेराकोटा की कला अपने उच्चतम शिखर पर पहुंच गई। आज भी बंगाल के लोगों के घर में हमें बांकुड़ा का घोड़ा, हाथी, दुर्गामूर्ति, फुलदान,

डोकरा के बने गहने, घड़े, लैंटर्न, दशावतार आदि की सजावट देखने को मिलेगी। रार क्षेत्र में जहां धर्मठाकुर की पूजा की जाती है, वहां टेराकोटा और लकड़ी के घोड़ों के प्रतीकात्मक उपयोग का कोई अंत नहीं है। इच्छा पूर्ति के लिए घोड़ों की प्रतीकात्मक बलि कई ग्रामीण देवी-देवताओं के लिए आम बात है, लेकिन इच्छा पूर्ति पर बलि का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न आकृतियों और आकारों के टेराकोटा घोड़ों की एक सभा शायद धर्मठाकुर के लिए विशिष्ट है। किंवदंती है कि उस समय चंद राँय नाम का एक जमींदार रहता था, जिसे ग्रामीणों द्वारा एक चमत्कारिक चिकित्सक के रूप में सम्मानित किया गया था। उनकी उदार सेवाओं के बदले में, ग्रामीणों ने उन्हें अपने प्यार, सम्मान और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में टेराकोटा जानवरों की मूर्तियाँ भेंट कीं।

'बंग हाथी' की मूर्ति जिसे हम गर्व से संग्रहित करते हैं, एक विशिष्ट आकार की सूंड और अमूर्त कला की सीमा पर उल्लेखनीय समग्र समरूपता के साथ एक गोल आकार के हाथी को दर्शाती है।



टेराकोटा से बना बंग हाथी

डोकरा घोड़े, हाथी, मोर उल्लू, धार्मिक चित्र, दीपक ताबूत आदि वस्तुएं अत्यधिक मूल्यवान हैं। आज भी बिष्णुपुर की शानदार वास्तुकला टेराकोटा की कहानियों के साथ आपका स्वागत करती है एवं अपनी भव्यता और सुंदरता दोनों के लिए दुनिया भर में व्यापक रूप से लोकप्रिय है।

डोकरा आदिवासी जातियों में से एक है जो सदियों से धातु ढलाई की कला में लगे हैं। पश्चिम बंगाल में इस धातुगर्तना के लिए चिरे पेर ऊयू या हॉलो कास्टिंग मेथड का उपयोग करने वाले धातु शिल्पकारों को डोकरा कामर्स या डोकरा धातु शिल्पकार कहा जाता है। ये शिल्पकार बांकुड़ा, पुरुलिया और मिदनापुर जिलों में वितरित हैं। परंतु बिकना गांव में, इन शिल्पकारों के एक नए समूह ने सरकारी सहायता के साथ शिल्पकार सहकारी समाज द्वारा विकसित किया गया है। बिकना के शिल्पकार यह मानते हैं कि वे नागपुर या छोटा नागपुर के खंडहरों के यात्री के उत्तरदाता हैं। वे विभिन्न प्रकार के धातु वस्तुओं का उत्पादन करते हैं जो उनके विशिष्ट उपयोगों के आधार पर वर्गीकृत किए जा सकते हैं। ये धार्मिक वस्तु जैसे देवताओं की मूर्तियों और पशु चित्र हैं, आवश्यक घरेलू सामान और सजावटी वस्तुएं होती हैं। डोकरा धातु ढलाई की पारंपरिक सरलता, आकर्षक लोक मोटीप्स और संघर्ष की सुंदरता ने

उन्हें न केवल भारत के विभिन्न हिस्सों में बल्कि विश्व के कई देशों में विशिष्ट प्रसिद्धि दिलाई है। वास्तव में, इन शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति बहुत दुर्भाग्यपूर्ण हो गई है। बंगाल के सबसे गरीब शिल्प समूह, डोकरा सबसे दिलचस्प और सबसे रचनात्मक भी हैं। हाल ही में, सभी घरे औद्योगिकरण और बदलते सामाजिक मूल्यों के दबाव में, उन्हें अपने प्राकृतिक ग्रामीण बाजार के नुकसान के कारण, अपने उत्पादों को विविध करने की मजबूरी है और अब सरकार और कुछ स्वैच्छिक संगठनों की मदद से नगरीय विशेषज्ञों के बीच एक बाज़ार खोज रहे हैं। यद्यपि ये प्रयास अभी भी वांछित सफलता तक पहुँचने में असमर्थ हैं।



बाएं से पहला डोकरा के बने मूर्तियां तथा दूसरा टोराकोटा के रंगीन गहने।

शंख बजाना संभवतः बिष्णुपुर की पारंपरिक कला है। पारंपरिक कारीगर, ज्यादातर सांखा बनिक जाति के सांखरी बाजार, मल्लेश्वर और कडाकुली में शंख बनाते हैं। शंख की चूड़ियाँ बनाने के अलावा, कारीगर शंख पर हिंदू देवताओं के विभिन्न पौराणिक चरित्रों को खूबसूरती से उकेरते हैं। प्रख्यात कारीगरों में से राष्ट्रपति पदक से सम्मानित श्री गोपाल नंदी आज भी शंख बनाने की सुंदर और जटिल कला को प्रदर्शित करते हैं। आम तौर पर एक शंख को या उससे बने वस्तु की डिजाइन और स्टाइल करने के लिए एक महीने से अधिक की कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है।



शंख के बने शाखा तथा शंख

17वीं सदी के दूसरे भाग में मल्ल राजा बीर सिंह द्वितीय द्वारा दो गेटवे बनाए गए हैं। पाथर दरबाजा बिष्णुपुर का मुख्य गेटवे माना जाता है जो उत्तरी प्रवेश द्वार पर स्थित है। इस केंद्रीय द्वार में दो मंजिलीय गैलरियां हैं जो सेना को स्थान देने के लिए हैं। यह संरचना लैटराइट ब्लॉक्स से बनाई गई है। गढ़ दरवाजा लैटराइट ईंटों से बनाया गया है।



बाएं से पहला पाथर दरवाजा तथा दूसरा गढ़ दरवाजा।

दशावतार कार्ड बिष्णुपुर के समृद्ध धरोहर का हिस्सा है तथा बंगाल की लोक कला का अनोखा उदाहरण है। दशावतार ताश मल्ल राजाओं द्वारा बनाया गया था। इन कार्डों की विशेषता यह है कि इन पर भगवान विष्णु के दस अवतार – मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, राम, बलराम, परशुराम, बुद्ध तथा कल्कि का चित्रण किया गया है। दशावतार कार्ड एक जटिल खेल होता है जिसमें 120 कार्ड होते हैं और इन्हें खोलने के कई नियम एवं विधियां होती हैं। बिष्णुपुर मेले में पारंपरिक खेल को लोकप्रिय बनाने के लिए 'दशावतार कार्ड खेल' का प्रदर्शन किया जाता है।



दशावतार कार्ड



जल संकट



श्रीमती गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जल संकट वर्तमान समय की गंभीर समस्या है। जल जीवन है, इंसान भोजन के बिना कई दिनों तक जीवित रह सकता है पर पानी के बिना नहीं। जीवन और प्रकृति संपूर्ण रूप से पानी पर ही निर्भर है। इसलिए जल को जीवन कहा गया है। पानी के बिना जीवन की कल्पना करना असम्भव है। एक क्षेत्र के



अंतर्गत जल उपयोग की मांगों को पूरा करने हेतु उपलब्ध जल संसाधनों की कमी को जल संकट कहते हैं। दुनिया में जल संकट कोने-कोने में पसर चुका है, जिसने अब एक विकराल रूप ले लिया है। निःसंदेह दुनिया विकास के मार्ग पर अग्रसर है, लेकिन स्वच्छ जल मिलना कठिन हो रहा है। देश के कई राज्यों में ग्रीष्म ऋतु के आते-आते यह भयावह स्थिति लेने लगता है। वर्तमान में जल की

समस्या दोहरी है एक तो पर्याप्त मात्रा में पीने का जल नहीं है और दूसरा जो बचा हुआ है, उसका रूप, रंग और स्वाद तेजी से बदल रहा है और इन परिस्थितियों के लिए इंसान ही उत्तरदायी है।

भारत में दुनिया की 17 फीसदी आबादी रहती है, लेकिन उस अनुपात में जब पानी की बात की जाए तो 4 फीसदी के करीब बैठता है। कुछ महीने पहले भारत का आईटी हब (बैंगलुरु) पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस रहा था। पैसा खर्च करके बड़ी इमारतें तो बनायी गयीं, उसमें आलीशान बाथरूमों का निर्माण भी हुआ किंतु उन शावरों में पानी आना ही बंद हो गया। हालात ऐसे चल रहे थे कि लोग ऑफिस जाने की स्थिति में नहीं थे। वर्क फ्रॉम होम की मांग की जा रही थी। टैंकरो के जरिए पानी को पहुँचाया जा रहा था, पानी की बर्बादी पर 5000 रुपये तक का जुर्माना लगाया जा रहा था। बैंगलुरु में जल संकट के कारण हाहाकार मचा हुआ था। दिल्ली में भी अप्रैल-जून माह में पारा उच्चतर सीमा पर था। इसी वजह से

पानी की मांग लगातार बढ़ती जा रही थी और भूजल का स्तर काफी नीचे जा चुका था। इसके साथ ही दिल्ली के ट्यूबवेल, कुएं, आस-पास की नदियां सूख गई थीं। इसके अलावा नदियों, झीलों एवं अन्य जल स्रोतों में बढ़ते प्रदूषण की वजह से उनका पानी पीने लायक नहीं रहा। देश के अनेक राज्य आज सूखे के विकराल समस्या से जूझ रहे हैं।

हाल के दिनों में भारत में जल संकट बहुत गंभीर हो गया है, जिससे पूरे भारत में लाखों लोग प्रभावित हो रहे हैं। भारत में जल संकट के ज्यादातर कारण प्राकृतिक आपदाएँ, जल संसाधनों के कुप्रबंधन, तेजी से बढ़ता शहरीकरण और औद्योगिकरण हैं। तेल, शव, रसायन आदि जैसे प्रदूषक से पानी प्रदूषित हो जाता है। इसके अलावा अकुशल कृषि पद्धतियों और अत्यधिक भूजल दोहन ने महत्वपूर्ण जल स्रोतों को खत्म कर दिया है। ग्लोबल वार्मिंग ने भारत में बारिश के पैटर्न को नाटकीय रूप दे दिया है। पहले औसत मानसून की बारिश 45 दिनों होती थी। जो संख्या घटकर 22 दिन रह गई और मानसून के बारिश की तीव्रता कम होती जा रही है। बाँध, अन्य जलविद्युत परियोजनाओं तथा सिंचाई के लिए जल के दोहन के कारण बड़े पैमाने पर नदी के पारिस्थितिकी तंत्र को व्यवस्थित रूप से नष्ट किया जा रहा है। भारत दुनिया में किसी भी देश की तुलना में अत्यधिक भूजल दोहन के कारण जलस्रोतों का तेजी से सूखना शुरू हो गया है। सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कुल भूजल 1980 के दशक में 30% से बढ़कर आज लगभग 60% हो गया है। जो देश जितना विकसित व समृद्धशाली हुआ है उतना ही जल समृद्धि पाने से वंचित है। वर्तमान में पानी की समस्या बारहमासी बन चुकी है और हमारा समाज भी इससे सबक लेने को तैयार नहीं है, जबकि यही समय है पानी का मूल्य समझने, समझाने और इसे सहेजने के तौर-तरीके जानने का जिससे बूंद-बूंद पानी बचाने के संकल्प के साथ हम सभी अपनी धरती को जल-समृद्ध बना सकें एवं हम पानी को प्रदूषित होने से रोक सकें।

जल संकट के स्थायी समाधान के लिए हमें सतत विकास लक्ष्य की ओर लौटना होगा और इस क्रम में जल संरक्षण के पारंपरिक तौर-तरीकों को पुनर्जीवित करना होगा। खासकर शहरी क्षेत्रों में नागरिकों द्वारा जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। इस संकट को हल करने का मतलब है प्रत्येक नागरिक को जल के उचित संरक्षण, पानी के दुरुपयोग को रोकने के बारे में पता होना चाहिए। वर्षा जल का संचयन जल संकट से निपटने का सबसे कारगर तरीका है। देश में यह कार्य अधिकतर राज्यों में संभव भी है, क्योंकि वर्षा तो हर जगह होती है। जहां पर 200 से 600 मिलीमीटर या



उससे अधिक वार्षिक वर्षा होती है, वहां यदि उसके जल को संचित करने के साधन बना लिए जाए, तो उस स्थान की आबादी के लिए पानी का इंतजाम किया जा सकता है। हमें जल प्रदूषण को लेकर भी सचेत रहना होगा। जल प्रदूषण का एक बड़ा कारण उद्योगों से निकलने वाला अपशिष्ट पदार्थ है। अधिकतर फैक्ट्रियां दूषित जल को शोधित किए बिना उसे नदियों में जाने देती है। कुछ उद्योग तो प्रदूषित पानी को बोरिंग करके जमीन के अंदर डाल देते हैं, जो भूजल को दूषित करता है। उद्योग को इसके लिए बाध्य किया जाना चाहिए कि वे अपने यहां उपयोग में लाए गए पानी को शोधित करके उसे पुनः उपयोग में लाएं। शहरों से निकलने वाले घरेलू जल का मात्र 10-20 प्रतिशत ही शोधित हो पाता है। शेष अशोधित घरेलू जल नदियों में चला जाता है। इसी कारण हमारी नदियाँ भयंकर प्रदूषण से ग्रस्त हैं। उनमें बहनेवाले प्रदूषित पानी के कारण भूजल भी प्रदूषित हो रहा है। उसे रोकने के लिए नगर निकायों को ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए जिससे सीवेज शोधन के बाद निकलने वाले पानी को कृषि कार्यों या फिर उद्योगों में उपयोग किया जा सके। यह भी समय की मांग है कि कृषि में भूजल के उपयोग को कम करने के उपाय किए जाएं। इसके लिए फसलों की सिंचाई का तरीका बदलने का साथ किसानों को कम पानी फसलों को अपनाना होगा।

दुनिया भर में पीने के साफ पानी की किल्लत विकराल समस्या बनती जा रही है। नीति आयोग की रिपोर्ट बताती है कि भारत में साफ पानी न मिलने के कारण साल भर में लगभग दो लाख लोग अपनी जान गवां देते हैं तथा साठ करोड़ भारतीय किसी न किसी प्रकार की जल की समस्याओं से जूझ रहे हैं। धरती पर मौजूद पानी का 97% समुद्रों में है और 3% पानी पीने योग्य है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार 2025 तक दुनिया की 14 फीसद आबादी के सामने जल संकट खड़ा हो जाएगा। अगर पानी की बर्बादी रोकने और जल संरक्षण के उपाय नहीं किए गए तो हालत और खराब हो सकते हैं। धरती पर पानी की खपत लगातार बढ़ रही है। यूनेस्को की ताजा रिपोर्ट इस वक्त देश की 10% आबादी गंभीर जलसंकट समय के साथ-साथ गहराता जा रहा है। दुनिया की आबादी का करीब 18 फीसद हिस्सा भारत में रहता है, लेकिन यहां भी धरती के ताजे पानी के स्रोत का केवल तीन से चार फीसद ही उपयोग के लायक है। भले ही दुनिया विकास कर रही है पर साफ पानी मिलना कठिन हो रहा है। पृथ्वी पर घटते पेयजल को बचाने और जल संरक्षण के प्रति आज भी हम गंभीर नहीं हैं। हम पानी की कीमत समझ नहीं रहे हैं। उपलब्ध जलस्रोतों का इंसान ने अंधाधुंध दोहन किया है। नदियों की सफाई और उन्हें प्रदूषण मुक्त करने के लिए अनेक सरकारी और गैर सरकारी संगठन काम कर रहे हैं, लेकिन सारे प्रयास व्यर्थ जा रहे हैं। अगर समय रहते देश में पानी के प्रति अपनत्व की भावना पैदा नहीं हुई तो आने वाली पीढ़ियां पानी को तरस जाएंगी।



इंसानियत की गुहार...समाज का सुधार



श्री अरिंदम घटक

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

किसी ने खूब कहा था... ज़िंदगी लंबी नहीं बड़ी होनी चाहिए। सच में दुनिया में आए हर प्राणी और इंसान को एक-न-एक दिन ये दुनिया छोड़ कर जाना पड़ता है। पर इंसान अपने कर्मों से, अपने इंसानियत से इस दुनिया में लोगों के दिलों में अमर हो जाते हैं। अपने परिवार में माता-पिता, पति-पत्नी, बच्चों के प्रति कर्तव्य निभाने के साथ-साथ समाज को बेहतर बनाने के प्रति अपना योगदान रखना भी हर इंसान का फर्ज बनता है। और इसी सच को मद्दे नज़र रखते हुए समाज के हर स्तर में बसने वाले हर एक इंसान को हमें जाति-धर्म या उसके आर्थिक स्थिति से ऊपर उठकर सम्मान श्रद्धा और हमदर्दी का प्रदर्शन करना है और किसी भी मुसीबत के घड़ी में उनके साथ खड़े होना चाहिए। सड़क में बिना छत के रहने वाला भूखा इंसान हो या फिर बुढ़ापे में अपनों से दूर बेसहारा हो, बिना इलाज के मरीज़ को अस्पताल ले जाना हो या फिर अनाथ या गरीब बच्चे को शिक्षित करना हो; हर तरह से हमें मानव कल्याण में अपना योगदान रखना है। जातिवाद, छूत-अछूत, दूसरे धर्म के लोगों के प्रति हिंसा, द्वेष आदि सामाजिक बीमारी को हमें जड़ से उखाड़ना है और हर जाति, हर धर्म के इंसान को इंसानियत के नज़र से अपनाना है। तभी हम एक विकसित समाज तथा एक विकसित देश का गठन कर सकते हैं। हमारे देश के करोड़ों युवाओं में हमें इस सोच का प्रसार करना है क्योंकि वही इस देश और समाज का भविष्य है।

कहावत है कि हर इंसान में ईश्वर बसता है। और सिर्फ सच्चे मन से इंसान की सेवा करके ही हम अपने आप को ईश्वर के चरणों में अर्पित कर सकते हैं। ज़िंदगी में सिर्फ अपनी खुशी, अपनी तरक्की ही सब कुछ नहीं होता है। बल्कि हम अपने कर्मों से कितने और चेहरों पर खुशी ला सकते हैं, कितने और इन्सानों को, जो अपने ज़िंदगी में गलत रास्ते पर भटक गए हैं, उन्हें सही रास्ते पर वापस ला सकते हैं। इसी से आप अपने मनुष्य जीवन का सही मूल्यांकन कर सकते हैं। और तभी आपका मनुष्य जीवन सार्थक होता है। इसीलिए ज़िंदगी सिर्फ अपने लिए नहीं, सबके साथ जियो। मानवता के कल्याण में स्वयं को समर्पित करो।

इंसानियत दुनिया का पहला और अंतिम धर्म है
हर पवित्र पुस्तक के एक-एक शब्द में यह मर्म है,
जो कभी इन पुस्तकों की गहराइयों तक न गए
फिरकापरस्ती खून खच्चर में उन्हें क्या शर्म है।

-रजनीश मांगा

धरोहर



सुश्री सुकन्या दास
वरिष्ठ अनुवादक

बांकुरा, पश्चिम बंगाल का एक सुंदर शहर, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। विशेष रूप से इसके उत्कृष्ट मंदिर जो इतिहास, कला और वास्तुकला का अद्भुत संगम हैं। बांकुरा के मंदिर न केवल पूजा स्थल हैं, बल्कि स्थापत्य कुशलता के प्रतीक भी हैं, जो सदियों पुरानी कारीगरी को प्रदर्शित करते हैं।

बिष्णुपुर के मंदिर

रासमंच

रासमंच का निर्माण 1600 ई. में राजा बीर हंबीर द्वारा किया गया था। यह एक अनूठा मंदिर है जो राधा-कृष्ण को समर्पित है। इसकी पिरामिडनुमा छत और लंबी संरचना इसे विशेष बनाती है। रासमंच का डिज़ाइन अन्य मंदिरों की मूर्तियों को रास त्योहार के दौरान रखने के लिए किया गया था। इसके टेराकोटा कला में जटिल पुष्प और ज्यामितीय पैटर्न हैं, जो स्थानीय कारीगरी को दर्शाते हैं।



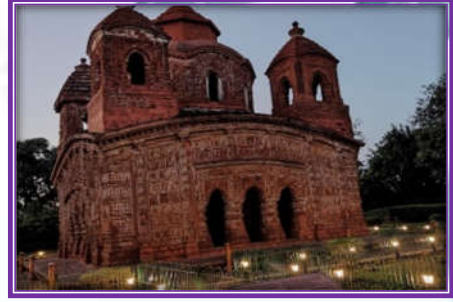
जोर बांग्ला मंदिर

जोर बांग्ला मंदिर का निर्माण 1655 ई. में राजा रघुनाथ सिंह देव ने किया था। इसकी अनूठी शैली 'दो-चाला' के रूप में जानी जाती है, जो दो झोपड़ियों के मिलन जैसा दिखता है। दीवारें रामायण, महाभारत और दैनिक जीवन के दृश्यों से सजी हुई हैं, जो उस युग के सामाजिक और धार्मिक संदर्भ की झलक देती हैं।



श्यामराय मंदिर

श्यामराय मंदिर, जिसे पंचरत्न मंदिर भी कहा जाता है, का निर्माण 1643 ई. में राजा रघुनाथ सिंह देव ने किया था। यह मंदिर अपने पांच शिखरों (रत्नों) के लिए जाना जाता है और पारंपरिक बंगाल शैली में बना है। मंदिर की बाहरी दीवारें टेराकोटा की पट्टियों से ढकी हुई हैं, जो हिंदू पौराणिक कथाओं की कहानियां सुनाती हैं और उत्कृष्ट कला कौशल को प्रदर्शित करती हैं।



जोयपुर के मंदिर

राधा गोविंद मंदिर

जोयपुर में स्थित राधा गोविंद मंदिर 17वीं शताब्दी का है और 'एकरत्न' (एक शिखर) शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस मंदिर की विशेषता इसकी जटिल टेराकोटा सजावट है, जो भगवान कृष्ण के जीवन की घटनाओं को दर्शाती है, जो उस समय के कुशल कारीगरों की गवाही देती है।



राधा माधव मंदिर

राधा माधव मंदिर जोयपुर का एक अनदेखा रत्न है। यह 'आटचाला' (आठ-छतरी) शैली का अनुसरण करता है, जो इस क्षेत्र में आम है। 18वीं शताब्दी में निर्मित, इस मंदिर का टेराकोटा कार्य अपेक्षाकृत सरल है लेकिन सुरुचिपूर्ण है, जो पुष्प और ज्यामितीय रूपांकनों पर केंद्रित है।



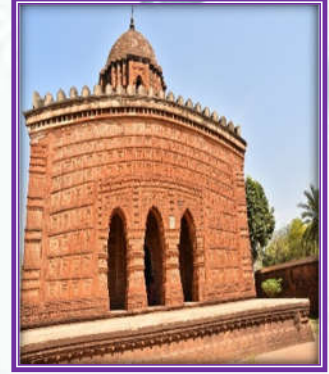
कालाचंद मंदिर

कालाचंद मंदिर का निर्माण मल्ल राजा रघुनाथ सिंघा (उच्चारण: सिंग-हो) द्वारा 1656 ई. में लेटराइट ब्लॉकों के एक निचले मंच पर किया गया था। यह 'एक-रत्न' या 'एकल मीनार वाला' मंदिर जंग के रंग के लेटराइट से बना है। मंदिर का आधार 11.1 मीटर x 11.1 मीटर का वर्गाकार है और मंच से इसकी ऊंचाई 9.2 मीटर है। मंदिर की छत विशिष्ट बंगाली 'चला' प्रकार की है। मुख्य मंदिर के चारों ओर एक परिक्रमा गलियारा है। संरचना में चारों तरफ से प्रत्येक पर तीन धनुषाकार उद्घाटन हैं और घुमावदार छत पर एक 'शिखर' या टॉवर (रत्न) है। यह संभवतः बिष्णुपुर में पाया गया सबसे पहला 'एक-रत्न' मंदिर है। शिखर के शीर्ष पर एक 'अम्लक' है। मंदिर के अग्रभाग को समकालीन जीवन की विभिन्न घटनाओं के साथ-साथ 'कृष्ण लीला' की पौराणिक कहानियों से सजाया गया है।



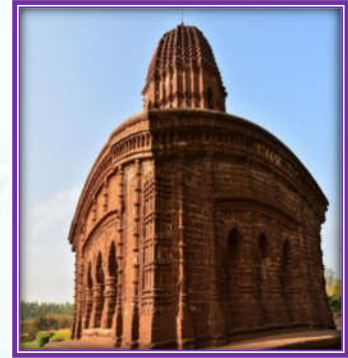
मदनमोहन मंदिर

मदनमोहन मंदिर का निर्माण मल्ल राजा दुर्जन सिंहा (उच्चारण: सिंग-हो) ने 1695 ई. में करवाया था। बिष्णुपुर में अन्य समान मंदिरों की तुलना में यह अपेक्षाकृत बड़ा एक-रत्न मंदिर है और महत्वपूर्ण भी है। मंदिर का आधार 12.2 मीटर X 12.2 मीटर का वर्गाकार है और एक मध्यम मंच से इसकी ऊंचाई 10.7 मीटर है। मंदिर की छत विशिष्ट बंगाली 'चला' प्रकार की है जिसके ऊपर एक ही 'शिखर' या मीनार है। मंदिर मुख्य रूप से लेटराइट ब्लॉक प्लेटफॉर्म पर मिट्टी की ईंटों से बनाया गया है और मंदिर के सामने के हिस्से को 'कृष्ण लीला' जैसी पौराणिक कहानियों को दर्शाने वाली समृद्ध टेराकोटा पट्टिकाओं से सजाया गया है। सबसे भीतरी गर्भगृह के चारों ओर जहां मूर्ति रखी गई है, तीन तरफ ढके हुए बरामदे हैं। पिछली दीवार को छोड़कर, इन तीनों तरफ से प्रत्येक पर तीन मेहराबदार द्वार हैं, मुख्य प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है।



नंदलाल मंदिर

नंदलाल मंदिर का निर्माण सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था। यह एक 'एक-रत्न' शैली का मंदिर है जो जंग के रंग के लेटराइट से बना है। निचले चबूतरे पर बने इस मंदिर का आधार चौकोर है और छत बंगाली 'चला' प्रकार की घुमावदार है। छत पर एक मीनार या 'शिखर' टिका हुआ है। संरचनात्मक रूप से यह राधा माधव मंदिर से समानता रखता है। इसका मतलब है कि सबसे भीतरी गर्भगृह के चारों ओर जहां मूर्ति रखी गई है, चारों तरफ ढके हुए बरामदे हैं, और मंदिर के दोनों आसन्न किनारों में से प्रत्येक में तीन मेहराबदार उद्घाटन हैं। इसकी दीवारों पर अभी भी बहुत कम सजावट या बेस-रिलीफ मौजूद है। एक बार दीवार पर प्लास्टर के काम से ढके विभिन्न पैटर्न और आकृतियों की पत्थर की नक्काशी थी, जो ज्यादातर धुल गई है।



सोनामुखी के मंदिर

श्रीधर मंदिर

सोनामुखी में स्थित श्रीधर मंदिर अपने 'रेखा-देउल' शैली के लिए प्रसिद्ध है, जिसकी विशेषता एक ऊंचा घुमावदार टावर है। 17वीं शताब्दी में निर्मित, इस मंदिर की टेराकोटा पट्टियां विस्तृत और अभिव्यक्तिपूर्ण हैं, विभिन्न देवताओं और पौराणिक कथाओं को दर्शाती हैं, जो उस समय की समृद्ध कथा परंपरा को उजागर करती हैं।



बिहारीनाथ मंदिर

बिहारीनाथ मंदिर, भगवान शिव को समर्पित, इस क्षेत्र के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है, जो 9वीं शताब्दी का है। बिहारीनाथ पहाड़ी के तल पर स्थित, इस मंदिर में एक सरल लेकिन भव्य 'रेखा-देउल' वास्तुशैली है। शांत वातावरण इसे एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बनाता है।



जयरामबती के मंदिर

मातृ मंदिर: जयरामबती में स्थित मातृ मंदिर 20वीं शताब्दी में निर्मित एक आधुनिक मंदिर है। यह मंदिर शारदा देवी, रामकृष्ण परमहंस की पत्नी को समर्पित है। यद्यपि इसमें प्राचीन टेराकोटा कार्य की कमी है, इसकी महत्वता इसके आध्यात्मिक महत्व और संरचना की शांति में निहित है।



मुकुटमणिपुर के मंदिर

अंबिकानगर मंदिर: मुकुटमणिपुर के पास स्थित अंबिकानगर मंदिर, देवी अंबिका को समर्पित है और 16वीं शताब्दी का है। यह मंदिर 'आटचाला' शैली में बना है और इसमें टेराकोटा पट्टियां हैं जो स्थानीय कथाओं और लोककथाओं को प्रतिबिंबित करती हैं, क्षेत्र की गहरी सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाती हैं।



सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व

बांकुरा के मंदिर केवल धार्मिक संरचनाएँ नहीं हैं; वे इतिहास और संस्कृति के भंडार हैं। इन मंदिरों को सजाने वाली टेराकोटा कला एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में कार्य करती है, जो उस समय के दैनिक जीवन, विश्वासों और सामाजिक संरचना के बारे में जानकारी प्रदान करती है। ये मंदिर स्थापत्य शैलियों के विकास को प्रतिबिंबित करते हैं, जो सरल 'रेखा-देउल' और 'आटचाला' से लेकर अधिक विस्तृत 'रत्न' और 'दो-चाला' संरचनाओं तक हैं। मल्ला राजाओं का संरक्षण इन मंदिरों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। उनकी कला के प्रति समर्थन ने स्थानीय कारीगरी के उत्थान को प्रेरित किया, जैसा कि विस्तृत टेराकोटा कार्य में देखा जा सकता है। मंदिरों की दीवारों पर चित्रित कहानियाँ न केवल सजावटी उद्देश्य से थीं बल्कि स्थानीय जनता को धार्मिक और नैतिक मूल्यों के बारे में शिक्षित करने का भी काम करती थीं।

संरक्षण और चुनौतियाँ

बांकुरा के मंदिरों को संरक्षित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है- प्राकृतिक पहनावा और टेराकोटा की नाजुकता के कारण। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और स्थानीय निकायों के प्रयास इन स्थापत्य खजानों को बहाल और बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि, बढ़ती जागरूकता और पर्यटन, धन जुटा कर और समुदाय के बीच सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देकर, बेहतर संरक्षण में योगदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

बांकुरा के मंदिर इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और स्थापत्य कुशलता का प्रमाण हैं। विष्णुपुर की टेराकोटा कृतियों से लेकर बिहारीनाथ की शांत सादगी तक, प्रत्येक मंदिर भक्ति, कला और इतिहास की एक कहानी बताता है। ये मंदिर न केवल पूजा स्थल हैं, बल्कि अतीत से महत्वपूर्ण कड़ियाँ भी हैं, जो सदियों के दौरान बंगाल की सामाजिक-सांस्कृतिक बनावट की झलक पेश करती हैं। इन स्थापत्य चमत्कारों का संरक्षण भविष्य की पीढ़ियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे इस समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर की सराहना और उससे सीख सकें।

आधुनिक जीवन शैली और स्वास्थ्य समस्याएँ



श्री किशन राम
कनिष्ठ अनुवादक

आधुनिक जीवन शैली, आदर्श जीवन शैली से भिन्न प्रतीत होती है। यदि जीवन शैली का तात्पर्य जीवन जीने के तरीके से है, तो हमारा विवेक, कर्म, आचरण, व्यवहार, क्रियाकलाप आदि समाज को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेंगे। यहां समाज का अर्थ उस व्यापक जन-समूह-संस्थान से है जिसकी इकाई हमारे घर के परिवेश से आरंभ होती है अर्थात् हमारा समाज रूपी पेड़ कितना बड़ा होगा इसमें कैसे फल-फूल लगेंगे, यह हमारे घर के वातावरण से शुरू होता है। ऐसा माना जाता है कि हमारा जीवन सरल होना चाहिए तथा विचार उच्च होने चाहिए। ऐसे विचारों से युक्त कथन एवं भावनाएं हमारे जीवन को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और यही जीवन का मूल आधार होना चाहिए। मनुष्य के विचार जैसे होंगे उसके जीवन में वही विचार व्यवहार के माध्यम से प्रतिबिंबित होंगे और उसी के अनुसार मानव समाज को प्रभावित करेगा। अतः हम यदि अपने विचार को उच्च रखते हैं, तो हमारा जीवन सरल और जीवन में आने वाले समस्याओं का निवारण ढूंढना सहज हो जाएगा। आने वाली पीढ़ी पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा फलस्वरूप एक ऐसे समाज का गठन होगा जो विश्व के समक्ष आदर्श के रूप में उभर कर सामने आएगा।

आधुनिक जीवन शैली ने हमारे जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित किया है। एक तरफ जहां यह जीवन शैली हमें असीमित सुविधाएँ तथा अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी तरफ, इसके नकारात्मक प्रभाव भी हैं। मानव जीवन को सहज एवं सरल बनाने वाली आज की जीवन शैली सूचना प्रद्यौगिकी, वैज्ञानिक खोजों तथा मानव जीवन को उन्नत बनाने एवं विकसित करने वाले विचारों से ओत-प्रोत है। आज जीवन काफी तीव्रता से आगे बढ़ रहा है। सभी को आगे बढ़ने की होड़ मची हुई है। आगे बढ़ने की इस ललक में तरक्की के दृष्टिकोण से हम आगे तो बढ़ रहे हैं पर कहीं न कहीं जीवन के बहुमूल्य आवश्यकताओं चाहे वो स्वास्थ्य हो या हमारे दूसरों के साथ संबंध, के साथ समझौता कर उन्हें पीछे छोड़ते जा रहे हैं। हमने तरक्की पाकर पैसे कमाकर बड़ी इमारतें तो बना ली है पर इसके लिए नैतिक मूल्यों तथा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की बली देनी पड़ी है।

दरअसल, आज स्वास्थ्य का विषय गंभीर रूप ले चुका है, अत्यधिक कार्य (Excessive Workload) मनुष्य के मन एवं शरीर में प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है जिससे शारीरिक एवं मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। यह कार्य पद्धति केवल वयस्कों को प्रभावित कर रही है ऐसी बात नहीं है, यह बच्चों को भी समान रूप से प्रभावित कर रही है। आज-कल के पेरेंट्स में बच्चों की पढ़ाई को लेकर असामान्य चिंता जगी है। वे हर बच्चे को साइंटिस्ट, डॉक्टर या इंजीनियर बनाने पर तुले हैं जिसके कारण बच्चों पर पढ़ाई का अत्यधिक बोझ थोपा जाता है। इस दबाव के कारण बच्चों को कम उम्र में ही आँखों में चश्में लग जाते हैं, इन्हें खाने में रूचि नहीं होती, शरीर कमजोर और सुस्त पड़ जाता है तथा अन्य शारीरिक समस्याएं जैसे विटमिन्स की कमी, अनिद्रा, स्पोन्डिलाइटिस आदि देखी जाती है। व्यस्कों में भी



इसके अनेक समस्याएं देखी जाती है। आधुनिक जीवन शैली ने कई तरीकों से जीवन को सहज, सरल, आसान एवं सुविधाजनक बनाया है, परंतु इसके साथ ही स्वास्थ्य समस्याओं को भी जन्म दिया है। आधुनिक जीवन में अत्यधिक कार्य के कारण लोगों में कार्य को समय पर समाप्त करने का दबाव रहता है जिसके कारण मानसिक दबाव की अनुभूति होती है। इसके कारण मानसिक समस्याओं के साथ शारीरिक समस्याएं भी जन्म लेती हैं।

जब हम बात शारीरिक समस्या की करते हैं तब हमें यह

स्वीकार करना चाहिए कि तुलनात्मक रूप से पहले के अपेक्षा आज हम सभी कम स्वस्थ हैं अर्थात हम सभी किसी न किसी शारीरिक समस्या अथवा रोग से जूझ रहे हैं। वैसे यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारे स्वास्थ्य में गिरावट की वजह हम स्वयं ही हैं। उदाहरण के लिए हमारी जो खाने-पीने की आदतें हैं वह आज की परिस्थिति के अनुसार बन गई है। हममें से कुछ स्वेच्छा तथा कुछ बाध्य होकर प्रोसेस्ड फूड्स तथा जंक फूड्स का सेवन करते हैं। इस तरह के आहार में चीनी, नमक, वसा आदि की मात्रा अत्यधिक होती है जो हमारे जीभ को तो स्वाद प्रदान करते हैं पर हमारे स्वास्थ्य के लिए ज़हर का काम करते हैं जिससे मोटापा, उच्च रक्तचाप, डायबिटीज़, हृदय रोग आदि रोगों का हमारे शरीर में आगमन होता है। व्यस्त जीवन और समय के अभाव में हम रात का बना हुआ खाना उसके बाद वाले दिन में खाते हैं। खाना बनाने अथवा खाने की वस्तुएं (कच्ची सब्जी, चावल, दाल, आटा तेल आदि) खरीदने तक का समय नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में ठंडा अथवा बासी खाना असमय खाने से पाचन के साथ अनेक अन्य शारीरिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। आज का वर्क कल्चर भी ऐसा है जिसमें लोगों को डिजिटल स्क्रीन के सामने घंटों तक एक ही जगह पर बैठे काम करना पड़ता है जिससे उनके आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और एक ही जगह पर बैठे-बैठे वे मोटापे का शिकार हुए जा रहे हैं। शहरी व आधुनिक जीवन भले ही संपन्न प्रतीत हो पर स्वास्थ्य के मामले में इसकी स्थिति दरिद्रतम है। कैल्शियम के अभाव में जहां हमारी हड्डियां कमजोर पड़ रही हैं, वहीं विटमिन के अभाव में शरीर में अलग-अलग तरह के रोगों के लक्षण देखे जा रहे हैं। विकास की आड़ में हम जो पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं उससे हमारी ही क्षति हो रही है। वायु प्रदूषण के कारण सांस की बीमारियाँ तथा त्वचा संबंधी समस्याएं बढ़ रही है। हमारे फेफड़े बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं, कम उम्र में ही दमे की समस्या देखी जा रही है।

ऐसा नहीं है कि आधुनिक जीवन शैली में अस्वास्थ्यकर आहार और लंबे समय से एक ही जगह पर बैठ कर काम करने से शारीरिक गतिविधियों की कमी ने केवल शारीरिक रोगों की संख्या में वृद्धि की है बल्कि, इससे मानसिक स्वास्थ्य पर भी कुप्रभाव पड़ा है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों की उपलब्धता ने लोगों की दिनचर्या को बदल दिया है। इन उपकरणों संचार तथा सूचना के आदान-प्रदान को आसान तो बनाया है, परंतु इनके अत्यधिक उपयोग से मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। सोशल मीडिया पर लगातार सक्रियता से युवा उपयोगकर्ताओं में चिंता और अवसाद बढ़ सकते हैं जो मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। आधुनिक जीवन शैली में करियर की महत्ता बढ़ गई है, जिसके कारण लोगों को कार्यस्थल पर दबाव और तनाव का सामना करना पड़ता है। कार्य की लंबी अवधि, बेहतर प्रदर्शन की अपेक्षाएँ, तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा की भावना से मानसिक थकावट और तनाव बढ़ जाता है। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कई समस्याएँ हैं जिनमें से एकाग्रता की कमी भी है जो आज की पीढ़ी में साधारणतः देखी जा रही है। दरअसल, आधुनिक जीवन शैली में लोगों में एक ही समय पर अनेक कार्य करने का दबाव बना रहता है। फलस्वरूप, वे किसी एक कार्य पर ध्यान नहीं दे सकते हैं। उन्हें एकाग्रता की कमी का आभास होने लगता है और किसी कार्य विशेष की महत्व को समझते हुए यदि वे उस विशेष कार्य को कर भी देते हैं तो उसके अतिरिक्त कार्य समय नहीं हो पाता है जिससे उन्हें स्वयं की कार्य क्षमता एवं योग्यता पर संदेह होने लगता है जोकि मानसिक अस्थिरता की ओर संकेत करता है अर्थात् यह भी मानसिक बीमारी का लक्षण हो सकता है। स्वयं पर संदेह होने पर लोगों में आत्मविश्वास की कमी हो जाती है जिसके कारण वे समाज में विश्वास के साथ अपनी बातों को रख पाने में सक्षम महसूस नहीं कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में वे अपने आप को समाज से दूर ले जाते हैं। वर्तमान जीवनशैली में यह पाया गया है कि परिवार और दोस्तों के साथ व्यक्तिगत समय बिताने की कमी होती जा रही है। व्हाट्सएप, फेसबुक मैसेंजर, इंस्टाग्राम आदि जैसे डिजिटल प्लैटफॉर्म पर संवाद की बढ़ती प्रवृत्ति और व्यक्तिगत मेल-जोल की कमी से सामाजिक संबंधों में कमी आ रही है। यह अकेलापन और सामाजिक समर्थन की कमी का कारण बनता है, जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकता है। मजबूत सामाजिक समर्थन मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और इसकी कमी से व्यक्ति मानसिक तनाव और अवसाद का शिकार हो सकता है। यही वजह है कि आज हम अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं जिससे हमारे मानसिक सेहत पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आज भूमंडलीकरण (ग्लोबलाइजेशन) के कारण प्रतिस्पर्धा के वातावरण ने केवल ऐसे लोगों को ही समाज में स्थापित होने का अवसर दिया है जिनमें अपने व्यक्तित्व को अपने कार्यों, बातों, व्यवहारों आदि के माध्यम से विश्व पटल पर प्रस्तुत करने का हुनर हो अर्थात् इन गुणों से परे व्यक्ति के लिए ऐसे परिवेश में रहना घुटन-सा हो सकता है। चाहे कोई कितना भी गुणवान हो यदि वह अपने आप को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में स्वयं को आत्मविश्वास के साथ नहीं प्रस्तुत कर पाता है तो उसके सफल होने की संभावना कम हो सकती है और असफलता अवसाद में जाने का सबसे आसान मार्ग बनाती है। अवसाद आज के जीवन में सबसे आम मानसिक रोग है। हर किसी को अपने जीवन काल में, विशेष रूप से आज के समय में, कम से कम एक बार हो कर गुजरना ही पड़ता है। अतः हमें अपने शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम बनाए रखने के लिए जल्द से जल्द अनुकूल कदम उठाना चाहिए।



आधुनिक जीवन शैली ने जहां हमें उन्नत तकनीकों एवं अन्य सामाजिक व व्यवहारिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं, वहीं दूसरी तरफ इसके प्रतिकूल प्रभाव भी देखे जा रहे हैं। इन प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखे। स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए सबसे पहले हमें अपने आहार पर ध्यान देना चाहिए। आज, फास्ट-फूड तथा प्रोसेस्ड-फूड आदि का सेवन बढ़ता जा रहा है, जो कि सेहत के लिए काफी हानिकारक है क्योंकि ये आहार उच्च कैलोरी, वसा और चीनी से भरपूर होते हैं। इसलिए, हमें अपने आहार में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। एक संतुलित आहार में ताजे फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज, और प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थ शामिल होना चाहिए। प्रोटीन, विटामिन, और मिनरल्स से भरपूर आहार शरीर की कार्यप्रणाली को सामान्य बनाए रखने में सहायता करता है और शरीर को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। इसके अलावा, पानी का पर्याप्त में सेवन भी अत्यंत आवश्यक है। सही मात्रा में जल का सेवन शरीर को हाइड्रेटेड रखता है, त्वचा को स्वस्थ बनाता है, और शरीर की विभिन्न क्रियाओं को सुचारु रूप से चलाने में सहायता करता है। यदि हम जल की कमी का सामना करते हैं तो यह थकावट, सिरदर्द, और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। अतः हमें पर्याप्त मात्रा में पानी पीने की आदत डालनी चाहिए। आहार के साथ-साथ नियमित शारीरिक गतिविधि का भी विशेष महत्व है। आधुनिक जीवनशैली में शारीरिक गतिविधियों की कमी हो गई है, जिससे शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, एक सक्रिय जीवनशैली अपनाना जरूरी है। सप्ताह में कम से कम 4-5 दिन 30-40 मिनट व्यायाम करने की सलाह दी जाती है। योग, दौड़ना, तैराकी, और साइकिल चलाना जैसे व्यायाम शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में कारगर साबित होता है। इसके अलावा, छोटी-छोटी गतिविधियाँ जैसे कि सीढ़ियाँ चढ़ना या पैदल चलना भी महत्वपूर्ण हैं और इन्हें अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य भी समान रूप से महत्वपूर्ण है परंतु यह देखा जाता है कि हम इसे उतना महत्व नहीं देते हैं जितना देना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान, योग, तथा प्राणायाम जैसी तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। ये विधियाँ मानसिक शांति और ताजगी प्रदान करती हैं तथा तनाव को नियंत्रित करने में सहायता करती हैं। इसके अलावा, नियमित अवकाश और आराम का समय निकालना भी आवश्यक है। काम के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन का संतुलन बनाए रखना मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। नींद भी एक महत्वपूर्ण पहलू है जो हमारी स्वास्थ्य की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। नींद की कमी से ऊर्जा की कमी, चिड़चिड़ापन और स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अतः नियमित रूप से 7-8 घंटे की नींद लेना आवश्यक है। सोने से पहले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे मोबाइल, लैपटॉप, टी.वी. आदि का उपयोग कम करें और एक शांत तथा आरामदायक वातावरण में सोने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त स्वस्थ रहने के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। नियमित स्वास्थ्य जांच से हम स्वास्थ्य से संबंधित किसी भी समस्या को उसके प्रारम्भिक चरण में ही पहचान लेते हैं जिससे समय रहते ही हम उसका उपचार कर सकते हैं। साथ ही हमें अच्छी आदतों को अपनाना चाहिए। धूम्रपान, शराब तंबाकू आदि का सेवन शरीर के लिए हानिकारक होता है तथा इससे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। अतः इन आदतों से दूर रहकर हमें एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाना चाहिए।



जलवायु परिवर्तन और उसका प्रभाव



श्री राहुल चौधरी
कनिष्ठ अनुवादक

जलवायु परिवर्तन विश्व की सबसे ज्वलंत पर्यावरणीय समस्याओं में से एक है। जलवायु परिवर्तन की संवेदनशीलता के मामले में भारत विश्व स्तर पर पांचवें स्थान पर है। जलवायु परिवर्तन ज्यादातर मानवीय गतिविधियों के कारण होता है और इसके दूरगामी प्रभाव दुनिया भर के पारिस्थितिकी तंत्र, अर्थव्यवस्थाओं और आजीविका को खतरे में डालते हैं। जलवायु परिवर्तन के बदलते पैटर्न, जिसमें बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा और चरम मौसम की घटनाएं शामिल हैं जो भारत के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने के लिए बड़ी चुनौतियों पेश करते हैं। हाल ही में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क के तत्वाधान में आयोजित COP-25 सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए विभिन्न दिशा-निर्देश जारी किये गए। इस आलेख में जलवायु परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन के कारण, उससे उत्पन्न चुनौतियों पर विश्लेषण किया जाएगा।

युवा अपने सरल लेकिन उद्देश्यपूर्ण तरीकों से जलवायु परिवर्तन को रोकने में मदद कर सकते हैं। जैसे कि पर्यावरण संगठनों या समूहों में शामिल होना; जलवायु परिवर्तन के खिलाफ विभिन्न सरकारी, गैर-सरकारी स्कूल या सामुदायिक कार्यक्रमों और परियोजनाओं में भाग लेना; स्कूल या समुदाय में सफाई अभियान में शामिल होना; वृक्षारोपण और गो-ग्रीन गतिविधियों में भाग लेना; कचरा उठाना और रीसाइक्लिंग पहल पर्यावरण विरोध और अभियानों में शामिल होना; जनता में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए फेसबुक, ट्विटर या इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया का उपयोग करना; प्लास्टिक के उपयोग को सीमित करना; अधिकारियों को अवैध गतिविधियों की रिपोर्ट करने में मदद करना; ईंधन वाले वाहनों की सवारी करने के बजाय छोटी दूरी पैदल या साइकिल से तय करना; घर पर कचरे को अलग करना और अंत में अपने दोस्तों, सहपाठियों और अपने परिवार को वह करने के लिए प्रोत्साहित करना जो हम कर रहे हैं।



जलवायु परिवर्तन के कारण - जलवायु परिवर्तन के कारणों को बेहतर विश्लेषण करने के लिए इसे दो भागों में विभाजित कर सकते हैं-

- 1- प्राकृतिक गतिविधियां,
- 2- मानवीय गतिविधियां

प्राकृतिक गतिविधियां-

महाद्वीपीय संवहन - महाद्वीपीय संवहन अर्थात महाद्वीपों का खिसकना अब भी जारी है जिसकी वजह से समुद्री धाराएँ तथा हवाएँ प्रभावित होती हैं और इसका सीधा प्रभाव पृथ्वी की जलवायु पर पड़ता है।

ज्वालामुखी विस्फोट - ज्वालामुखी विस्फोट होने पर बड़ी मात्रा में विभिन्न गैसों जैसे: कार्बन - डाई-ऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड, जलवाष्प आदि तथा धूलकण वायुमंडल में उत्सर्जित होते हैं जो कि वायुमंडल की ऊपरी परत समतापमंडल में जाकर फैल जाते हैं।

समुद्री धाराएँ - सागरों को कार्बन डाई-आक्साइड का सबसे बड़ा सिंक कहा जाता है। वायुमंडल की अपेक्षा 50 गुना अधिक कार्बन डाई आक्साइड गैस समुद्र में होती है। समुद्री बहाव में बदलाव लाने से जलवायु प्रभावित होती है।

मानवीय गतिविधियाँ-

शहरीकरण - शहरीकरण और औद्योगिकरण के कारण लोगों के जीवन जीने के तौर- तरीकों में काफी परिवर्तन आया है। विश्व भर में सड़कों पर वाहनों की संख्या काफी अधिक हो गई है।

जीवन शैली में परिवर्तन ने खतरनाक गैसों के उत्सर्जन में काफी अधिक योगदान दिया है।

वनोन्मूलन - निरंतर बढ़ती हुई आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिये वृक्ष काटे जा रहे हैं। आवास, खेती, लकड़ी और अन्य वन संसाधनों की चाह में वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है, जिससे पृथ्वी व हरित क्षेत्र तेजी से घट रहा है और साथ ही जलवायु के परिवर्तन में तेजी आ रही है।

ग्रीन हाउस गैसों - पृथ्वी के चारों ओर ग्रीन हाउस गैस की एक परत बनी हुई है, इस परत में मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और कार्बन डाईऑक्साइड जैसी गैसों शामिल हैं। आधुनिक युग में जैसे-जैसे मानवीय गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, वैसे - वैसे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि हो रही है, जिसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

उच्च तापमान - पावर प्लांट, आरो मोबाइल, वनों की कटाई और अन्य स्त्रोतों से होने वाला ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन पृथ्वी को अपेक्षाकृत काफी तेज़ी से गर्म कर रहा है। इस बार बढ़ते तापमान और जंगल में आग के चलते उत्तराखंड की नदियां उफान पर हैं तथा उत्तराखंड के पाँच जिलों के जंगलों में आग लगी थी, जिसको बुझाने के बाद हिमालय के हिमखंडों पर अनेक प्रकार के दुष्परिणाम देखने में आए हैं। कश्मीर, लहाज, हिमाचल, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल की 28043 हिमखंड झीलों में से 188 झीलें कभी भी तबाही का कारण बन सकती है।



समुद्र जल के स्तर में वृद्धि - वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग के दौरान ग्लेशियर पिघल जाते हैं और समुद्र का जल स्तर ऊपर उठता है जिसके प्रभाव से समुद्र के आस-पास के द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ जाता है।

वन्यजीव प्रजाति का नुक्सान - तापमान में वृद्धि और वनस्पति पैटर्न में बदलाव ने कुछ पक्षी प्रजातियों को विलुप्त होने के लिए मजबूर कर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, पृथ्वी की एक-चौथाई प्रजातियाँ वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु प्रयास -

- ① जलवायु परिवर्तन पर अंतर- सरकारी पैनल (IPCC)
- ② संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन (UNFCCC)
- ③ पेरिस समझौता
- ④ जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना (NAPCC)
- ⑤ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन

निष्कर्ष - अतः निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि जलवायु परिवर्तन अपने प्रतिकूल प्रभावों के साथ हमारे दरवाजे तक पहुंच चुका है। अब समय आ गया है कि मनुष्य समझदारी से काम लें, ताकि परिवर्तनों का सामना करने में सक्षम हो सकें। ये काम करने से जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिल सकती है। जलवायु परिवर्तन को रोकना आसान नहीं है लेकिन अगर हम एक साथ मिलकर काम करते हैं तो हमारे छोटे-छोटे प्रयासों को हमारे पर्यावरण और हमारे ग्रह पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा।



हमें आज़ादी समझनी होगी



श्री संदीप कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज़ादी हमें नहीं सिखाती
सभी जगह मनमानी करना
आज़ादी हमें है सिखाती
सदा अनुशासन में रहना

आज़ादी हमें नहीं सिखाती
मार-पीट और हिंसा करना
आज़ादी हमें है सिखाती
मोहब्बत भाईचारे से रहना

आज़ादी हमें नहीं सिखाती
जहाँ-तहाँ कचरा फैलाना
आज़ादी हमें है सिखाती
साफ-सफाई और स्वच्छता से रहना

आज़ादी हमें नहीं सिखाती
पद का दुरुपयोग कर पैसा कमाना
आज़ादी हमें है सिखाती
भ्रष्टाचार से मुक्त रहना

पहले मन में देश-प्रेम जगाना होगा
फिर गर्व से तिरंगा फहराना होगा
हमें आज़ादी समझना होगा
देश के साथ सबको आगे बढ़ने होगा।



बेटी



श्री सुभाष प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियां साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए-नए रिश्ते बनाती है बेटी।

जिस घर जाये उजाला लाती है बेटी,
बार-बार याद आती है बेटी।
माँ बाप का हौसला बढ़ाती है बेटी,
हर काम को सहज बनाती है बेटी।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।



देश की आत्मा है हिन्दी



श्री आशीष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का प्रयास है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

14 सितंबर, 2017 को राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने देश भर के विभिन्न मंत्रालयों / विभागों/ कार्यालयों के प्रमुखों को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, "हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है। मुझे इस बात की खुशी है कि आज सरकार के कर्मचारियों तथा नागरिकों को मौलिक पुस्तक लेखन के लिए पुरस्कार दिये गये हैं।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सभी देशवासियों को “हिन्दी दिवस” के अवसर पर बधाई दिया है। हिन्दी दिवस के मौके पर राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक के सहयोग से तैयार किये गये लर्निंग इंडियन लैंग्वेज विद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (लीला) के मोबाइल ऐप का लोकार्पण भी किया गया। इस ऐप से देश भर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जन सामान्य को हिंदी सीखने में सुविधा और सरलता होगी तथा हिंदी भाषा को समझना, सीखना तथा कार्य करना संभव हो सकेगा। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इसके लिए राजभाषा विभाग के योगदान की सराहना करते हुए कहा, ‘लीला मोबाइल ऐप’ के जरिये हिन्दी सीखने की ऑनलाइन सुविधा लोगों तक पहुँचाने के लिए मैं राजभाषा विभाग की प्रशंसा करता हूँ।’

हिंदी दिवस के अवसर पर सरकारी विभागों में हिंदी की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। साथ ही हिंदी में प्रोत्साहन हेतु पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की हैं। सरकार द्वारा हिंदी में अच्छे कार्य के लिए “राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना” के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। हिंदी में लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार का प्रावधान है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान में हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए भी सरकार पुरस्कार प्रदान करती है। इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिंदी के विस्तार को बढ़ावा मिल रहा है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्टें राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिंदी में भी तैयार कर ली हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिन्दी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।



देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा “विश्व हिंदी सम्मेलन” और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा “प्रवासी भारतीय दिवस” मनाया जाता है जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के

लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिन्दी को भी मान्यता मिली है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिन्दी की गूंज सुनाई देने लगी है। पिछले वर्ष सितंबर माह में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में ही अभिभाषण दिया गया था। विश्व हिन्दी सचिवालय विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है। उम्मीद है कि हिन्दी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्त्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।



भाषा वहीं जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे सरल माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। इस कारण सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का उपयोग अधिकाधिक करें। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। हिंदी राष्ट्रभाषा है इस पर हम सभी को गौरवान्वित महसूस होता है।

जय हिंद जय हिंदी

वाइज़ैग की डाइरी



श्री चंदन बनर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कहते हैं, आप किसी भी पर्यटन स्थल पर कभी भी घूमने जाते हैं, तो कोई न कोई बंगाली पर्यटक आपको मिल ही जाएगा। इसका कारण यह है कि बंगाली पर्यटक एक यात्रा खत्म करके लौटते वक्त, घूमने के खर्च को ध्यान में रखते हुए, या तो अपने अगले यात्रा की टिकिट बूक करते हैं, या फिर अगले यात्रा का स्थान और समय तय कर लेते हैं। बंगाली पर्यटकों की इस परंपरा को बरकरार रखते हुए हमने पिछले वर्ष ही सालगिरह पर साउथ इंडिया घूमने जाने का मन बना लिया था। बाद में, इस दौरान ट्रेन का कन्फर्म टिकिट न मिलने पर इस साल के शुरुवात में प्लान को शिफ्ट कर दिया था। मंजिल थी भारत के पूर्वी तट का दूसरा (चेन्नई के बाद) सबसे बड़ा समुद्रतट वाइज़ैग। इसे 'भाग्य का शहर' या 'पूर्वी तट का गहना' भी कहा जाता है। हिंदू पुराणों के अनुसार, ईसा पूर्व (BC) यहाँ राजा विशाखा वर्मा का शासन था, जिनके नाम पर 'विशाखापट्टनम' नाम रखा गया था। एक दूसरे कहानी के मुताबिक, इस जगह का नाम भगवान शिव के दूसरे पुत्र 'कार्तिकेय' या 'विशाखा' के नाम पर रखा गया था।

वाइज़ैग यानि विशाखापट्टनम, पूर्वी घाट की पहाड़ियों और बंगाल की खाड़ी के बीच, गोदावरी नदी के नदीमुख पर विस्तारित आंध्र प्रदेश राज्य के एक खूबसूरत नगर के साथ-साथ एक व्यस्त बंदरगाह, जिला मुख्यालय और औद्योगिक शहर है। यह भारतीय नौसेना के पूर्वी नौसेना कमान का मुख्यालय भी है। यहाँ यात्रा करने पर पर्यटकों को बहुत सुंदर-सुंदर समुद्रतट, संग्रहालय, हिलटॉप आदि देखने को मिलते हैं। वाइज़ैग से कुछ घंटों की दूरी पर अराकू घाटी है, जो एक हिल स्टेशन है और अपने बगीचों, घाटियों और झरनों के लिए जाना जाता है। वाइज़ैग से अराकू जाने के रास्ते में बोरा में शानदार स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट संरचनाओं वाली चूनापत्थर की गुफा देखने को मिलते हैं।



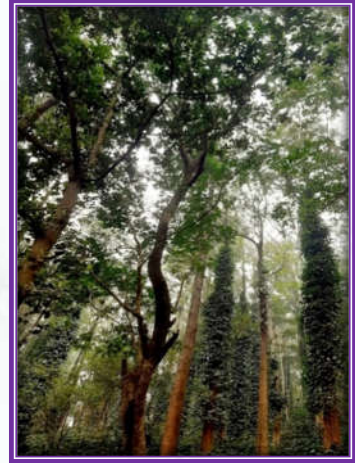
संयोजकता: वाइज़ैग लगभग सभी बड़े शहरों से हवाई, रेल तथा सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

घूमने का सर्वोत्तम समय: नवंबर से फ़रवरी

बोली जाने वाली भाषाएँ: स्थानीय भाषा तेलुगु है, पर अंग्रेजी और हिंदी भी बोले जाने के कारण पर्यटकों को इधर घूमने में सुविधा होती है।

मुख्य दर्शनीय स्थान: रुशिकोंडा बीच, आर के बीच, टेनेटी पार्क, कैलाशगिरी हिलटॉप, पनडुब्बी संग्रहालय, विमान संग्रहालय आदि।

हमने कोलकाता के नज़दीकी शालीमार रेल-स्टेशन से शाम 6.30 बजे शालीमार-विशाखापट्टनम साप्ताहिक स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेन में टिकिट बुक किया था। ट्रेन सही समय पर रवाना होने के बावजूद रास्ते में हुई देर के कारण हम विशाखापट्टनम दो घंटे देर से सुबह 10 बजे पहुँचें। ट्रेन का सफर काफी शानदार था। होटल रूम पहले से रिजर्व न होने के कारण हमने थोड़ा घूमकर आर-के बीच के बिल्कुल सामने (रेल स्टेशन से 4 किमी. दूर) एक होटल रूम अगले तीन दिन के लिए बुक किया। रातभर ट्रेन-जर्नी से हम सब थके थे, इसलिए जल्द ही फ्रेश हुए और उसी होटल का रेस्टोरेन्ट में लंच करके विश्राम किया।



संग्रहालयों का सफर:

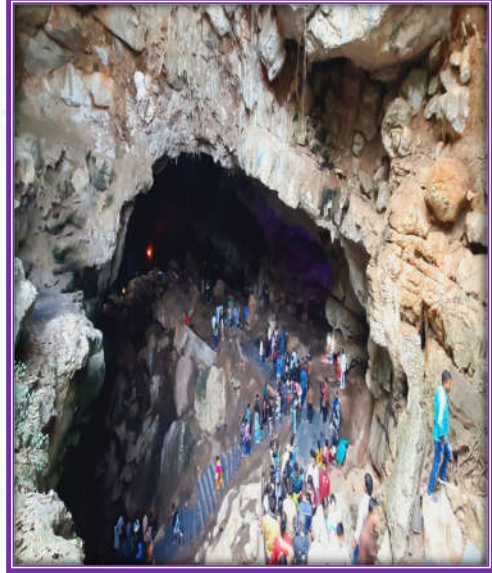
अपराह्न 4 बजे तैयार होकर हमने सबसे पहले आर. के बीच पर स्थित प्रसिद्ध काली मंदिर में माँ काली का दर्शन किया और नजदीकी आईएनएस पनडुब्बी संग्रहालय (INS Kurusura Submarine Museum), टी.यू 142 एयर क्राफ्ट संग्रहालय (TU 142 Air Craft Museum) तथा सी हैरियर संग्रहालय (Sea Harrier Museum) में घूमे और पहली बार इन सबके अंदर जाकर रोमांचित हुए। इन तीन संग्रहालयों के लिए अलग-अलग से या फिर एकसाथ (कम खर्च पर) में भी टिकिट बुक किया जा सकता है। यह पनडुब्बी सोवियत (RUSSIA) निर्मित है, जिसका भारतीय नौसेना ने 30 वर्षों से अधिक समय से उपयोग किया था। टी.यू 142 एयर क्राफ्ट का सफर करके हमें किसी लड़ाकू विमान के अंदरूनी हिस्सों का गठन और कर्मियों की कार्यप्रणालियों के बारे में जानकारी मिलती है। सी हैरियर (एसएच 606) का सफर हमें किसी फाइटर हेलीकॉप्टर को नजदीक से देखने व परखने की मौका भी देती है। शाम को समुद्रतट पर बैठकर गर्म चाय के प्याली के साथ खूबसूरत नज़ारों का आनंद उठाना- हमें आज भी याद है। रात को हम जल्दी ही सो गए थे, अगले दिन सुबह हमें अराकू के लिए ट्रेन जो पकड़नी थी।

अराकू दर्शन:

अराकू जिसको 'आंध्रा का ऊटी' भी कहा जाता है, जिसका सफर एक ही दिन में सम्पन्न करने के लिए हम सुबह 6.45 का विशाखापट्टनम-किरणडुल एक्सप्रेस पकड़ने चल पड़े। ट्रेन छोड़ने के डेढ़ घंटे बाद, ट्रेन के विंडो से आ रही ठंडी हवा निश्चित रूप से आपको सचेत कर देगी कि घाटी की सुंदरता को अनुभव और उपभोग करने का समय आ गया है। इस 4 घंटे/ 130 किमी ट्रेन सफर में कई सुरंगें मिलेंगे, जो आस-पास के झरनों के नैसर्गिक सौंदर्य के साथ मिलके आपको मंत्रमुग्ध होने पर मज़बूर कर देंगे। अधिक आनंद उठाने के लिए ट्रेन चलने की दिशा में दाईने तरफ खिड़की के पास एक सीट होनी

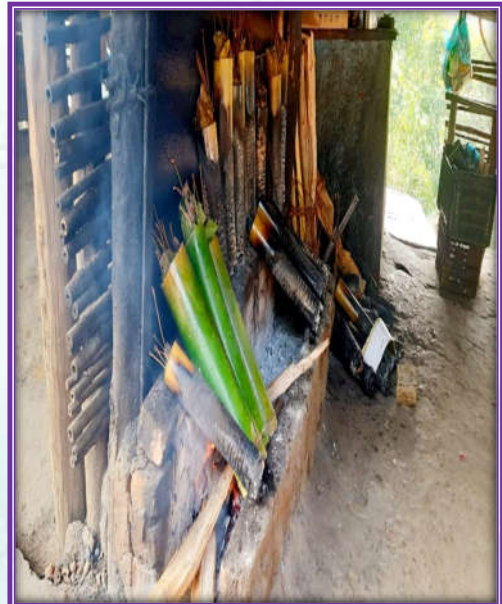
अनिवार्य है। समय बचाने के लिए हम अरकू से एक स्टेशन पहले बोरा-गुहालु स्टेशन पर तकरीबन 10 बजे उतरे और वहाँ से ही एक कार बुक किया, जो हमें घाटी के सभी मुख्य स्थान घूमने के बाद अराकू स्टेशन पर छोड़ देगा। यहाँ से हमारी लौटने की ट्रेन 3.45 की थी। कोई पर्यटक, विशाखापट्टनम से सीधा कार बुक करके (ज्यादा खर्च) या APTDC के बस में सीट रिजर्व करके भी अराकू-भ्रमण सम्पन्न कर सकते हैं।

सबसे पहले हमने अनंतगिरि पर्वतमाला में स्थित बोरा गुफाएँ के दर्शन किए। यह लगभग 330 मीटर लंबे और 80 मीटर गहरे हैं जिनमें कुछ अद्भुत स्टैलेक्टाइट और स्टैलेग्माइट संरचनाएँ हैं। गुफा में कृतिम रंग-बिरंगी लाइट लगी हुई है, जो बहुत मनोरम है। इस गुफा में प्रवेश शुल्क है। किराए पर गाइड भी उपलब्ध है। गुफा के बाहर, बांस चिकन (BAMBOO CHICKEN), जो अराकू आदिवासियों का एक लोकप्रिय व्यंजन है, की कई दुकानें मिलेंगी। मसालों में मैरीनेट किए गए चिकन को पत्तों में लपेटकर हरे बांस के खोखले हिस्से में भरकर धीमी लकड़ी की आग पर पकाया जाता है। इस शानदार मेनू से हमने लंच किया और अगले गंतव्य की ओर चल दिये।



बोरा गुफाएँ

जलवायु अनुकूल होने के कारण पूरे घाटी में भारी मात्रा में कॉफी और अन्य मसाले उगाये जाते हैं, जो विदेश में निर्यात भी किया जाता है। स्थानीय दुकानों में ताज़ी पिसी हुई अराकू कॉफी और कॉफी के स्वाद वाली स्वादिष्ट चॉकलेट खरीदने को मिलते हैं। इसके बाद हम जनजातीय संग्रहालय गए, जहाँ जनजातियों के जीवन और कला को बहुत सुंदरता से दिखाया गया है। इधर एक इमारत आदिवासी झोपड़ी के आकार में भी बनाई गयी है जिसमें आदिवासी जीवनशैली को दर्शाने-वाली कई झांकियाँ हैं और जिनमें सदियों से कोई बदलाव भी नहीं हुआ है। अराकू, वाल्मिकी, कोंडाडोरा, नुक्काडोरा, पोरजा, जटापु आदि 19 जनजातियों का घर है। यह सब देखकर हमने कटिकी झरना और पदमपुरम बोटानिकल गार्डन घूमा और घाटी का सफर पूरा किया। पूरे सफर में हमने ढेर सारे यादगार फोटो खींचे और तकरीबन 3.45 बजे दोपहर को अराकू से विशाखापट्टनम के लिए ट्रेन पकड़ा और वहाँ 8.30 बजे पहुँचकर होटल में विश्राम किया।



बांस चिकन

विशाखापट्टनम शहर की यात्रा (प्रथम दिवस):

अगले दिन हमने दक्षिण भारतीय नाश्ता 'इडली और डोसा' चखा, जो काफी स्वादिष्ट था। आर के बीच पर समुद्र-स्नान और उसके बाद लंच किया और एक कार बुक करके विशाखापट्टनम शहर के उत्तरी भाग को देखने के लिए 12 बजे रवाना हुए। सबसे पहले हमने भीमिली और उसके बाद थोटलाकोंडा बीच का भ्रमण किया, जो कि बहुत खूबसूरत थे। थोटलाकोंडा बीच का प्राकृतिक मेहराब (Natural Arch) अपनी सुंदरता के कारण फोटोजैनिक और काफी प्रसिद्ध है। इसके बाद हमने पहाड़ों से घिरे हुए वाईज़ैग के सबसे सुंदर रुशिकोंडा बीच घूमा। यहाँ पहाड़ और समंदर का मिलन होता है। यदि आप साहसी किस्म के हैं, तो समुद्र तट पर आयोजित विभिन्न जल-खेलों को लुप्त आज़मा सकते हैं। आर के बीच के बाद इधर ही रहने और खाने का बहुत सारे होटल/ रेस्टोरेंट उपलब्ध हैं, जो काफी प्रसिद्ध भी हैं। साथ ही, हम पहाड़ों के ऊपर रामा-नायडू फिल्म-स्टुडियो भी देखने गए थे जहां पर तेलुगु मूवी 'कंचरला' की शूटिंग चल रही थी।

इसके बाद हमने उसी रास्ते पर स्थित टेनेटी पार्क का भ्रमण किया, जो कि वाईज़ैग के सबसे पुराने पार्कों में से एक है। पार्क के एक तरफ हरी-भरी हरियाली और दूसरी तरफ नीला समंदर का अनुपम मेल-दृश्य मन को सुकून देता है। यह अपने प्रियजनों के साथ कुछ अद्भुत तस्वीरें कैद करने के लिए एक आदर्श स्थान है। यही सब तस्वीरें, कई वर्ष बाद किसी अकेले दिन में हमारी यादों की बारात निकालेगी। इस पार्क से समुद्रतट में फंसी हुई एक बंगलादेशी ट्रॉलर में भी घूमा जा सकता है।

इसके बाद हम कैलाशगिरि हिलटॉप घूमने गए। इधर हिन्दू देव-देवी, शिव-पार्वती की भव्य मूर्ति और बच्चों के मनोरंजन के लिए खेल-कूद का आयोजन है। यहाँ से पूरा विशाखापट्टनम शहर तथा सूर्यास्त देखने का मजा कुछ अलग ही है। इस जगह पर रोप-वे से या पैदल चल के पहुंचा जा सकता है। यह सब देखते हुए शाम ढल गयी और हम होटल लौट आए। रात का खाना हमने होटल का रेस्टोरेंट में ही खाया था।



वाईज़ैग बीच



थोटलाकोंडा बीच का प्राकृतिक मेहराब

विशाखापट्टनम शहर यात्रा (द्वितीय दिवस):

यह हमारे वाइज़ेग सफर का अंतिम दिवस था, रात 8 बजे हमें कोलकाता गामी ट्रेन पकड़ना था। हमने होटल में फ्रेश होकर 10 बजे चेक-आउट किया, भारी सामान होटल के ट्रस्टी घर में छोड़ा और नाश्ते के बाद एक ऑटो रिजर्व करके विशाखापट्टनम शहर का दक्षिणी भाग देखने के लिए रवाना हुए। सबसे पहले हम फिशिंग हरबर घूमे और फिर रॉस हिल चर्च देखा। इसके बाद हम डॉल्फिन नोज़ और लाइट-हाउस देखने गए। यह स्थान भारतीय सेना द्वारा नियंत्रित होता है और दिन में केवल 3 से 5 बजे तक ही साधारण लोगों के लिए खोला जाता है। लाइट-हाउस के ऊपर से दिखी परिदृश्य, हरी-भरी हरियाली, बंदरगाह और पूरे शहर का मनमोहक दृश्य हमारे आँखों को सुकून देता है। फिर हमने एक और लोकप्रिय और आकर्षक याराडा समुद्र तट घूमा, जो बहुत ही सुनहरा था। सिंहाचलम मंदिर, इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान, मत्स्यदर्शिनी एक्वेरियम एवं वुडा पार्क समय कम होने पर हम घूम न सके।

घर वापसी:

यह सब घूमने के बाद शाम 6 बजे हम होटल लौटे और फ्रेश होकर फ़ाइनली 7 बजे अपने सामान के साथ विशाखापट्टनम रेल-स्टेशन की ओर चल दिये। स्टेशन में ही हमने रात का खाना पैक कर लिया था। ट्रेन सही समय पर रवाना हुई और अगले दिन सुबह 11 बजे हम शालीमार स्टेशन पर उतरे। शुरुवात में बंगाली पर्यटकों के जिस परंपरा का जिक्र में किया था, उस परंपरा को आगे ले जाते हुए हमने लौटने वक्त अगले यात्रा का प्लान बना लिया था, जिसका वर्णन हम भविष्य में किसी लेख में ज़रूर करेंगे।

हर रोज के एक ही प्रकार के काम-काज जब दिमाग को हेंग कर देते हैं, उससे मुक्ति तथा हमें जिंदगी में पुरानी ऊर्जा के साथ वापसी करवाने के लिए भ्रमण संदेहातीत रूप से सबसे अच्छी और कार्यकारी दवाई है, जिसका कोई पार्श्व-प्रभाव भी नहीं होता है। हमें बेझिझक इस दवाई का सही समय पर उपयोग करके अपनी अंतरात्मा को पुनर्जीवित करना चाहिए। इस संदर्भ में हिन्दी फिल्म 'स्वदेश' का एक गाने का कुछ पंक्तियाँ विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है:

*"यूँ ही चला चल राही, यूँ ही चला चल राही
कितनी हसीन है ये दुनिया
भूल सारे झमेले
देख फूलों के मेले
बड़ी रंगीन है ये दुनिया"*



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)



सुश्री अरिमता तिवारी
लेखापरीक्षक

“संगणक एआई की मदद से अगले 100 सालों के अंदर इंसानों को पीछे छोड़ देंगे। जब वह होगा, हमें यह निश्चित करना होगा कि उन संगणकों का उद्देश हमारे उद्देश्य से जुड़ा हो।”

~ स्टीफन हकिंग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है?

- जॉन मैक्कार्थी, स्टैनफोर्ड में कंप्यूटर विज्ञान के एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर, ने “कृत्रिम बुद्धिमत्ता” वाक्यांश की शुरुआत की।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक उभरती हुई तकनीक है जो मशीनों के उपयोग से बुद्धि और मानवीय क्षमताओं को समझने और कार्य करने की सुविधा प्रदान करती है।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)**, जिसे औद्योगिक क्रांति 4.0 के रूप में भी जाना जाता है, विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक और तकनीकी खोज में गहरी प्रगति कर रहा है।
- वाक्यांश “**आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)**” पहली बार 1956 में उपयोग किया गया था, यह हाल ही में बढ़ते डेटा वॉल्यूम, स्मार्ट एल्गोरिदम और कंप्यूटिंग शक्ति में सुधार के कारण प्रमुख हो गया है।



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनुप्रयोग

एआई का उपयोग कई क्षेत्रों में किया जा रहा है, जैसे:

- **हेल्थकेयर सेक्टर:** यह एक ऐसा सेक्टर है जिसे एआई से काफी फायदा हुआ है। हाल के वर्षों में, कई रोबोट विकसित किए गए हैं जो उच्च सटीकता के साथ जटिल सर्जरी में सहायता करते

हैं। मशीन लर्निंग का उपयोग अधिक सटीक निदान के लिए किया जाता है, जिससे प्रक्रिया तेज और कम खर्चीली हो जाती है। एआई बीमारियों का पता लगाने और उपचार के परिणामों में सुधार करने में भी कारगर साबित हुआ है।

- **विनिर्माण क्षेत्र:** विनिर्माण में उच्च सटीकता और दक्षता की आवश्यकता वाले बहुत सारे दोहराए जाने वाले कार्य शामिल हैं। इस क्षेत्र में सबसे अधिक चलन में आने वाली एआई तकनीकों में से एक एडिटिव मैनुफैक्चरिंग (या 3D प्रिंटिंग) है जो विनिर्माण क्षेत्र और आपूर्ति श्रृंखला पारिस्थितिकी तंत्र का आधुनिकीकरण कर रही है।
- **व्यापार क्षेत्र:** व्यापार क्षेत्र ने तेजी से और अधिक कुशलता से काम करने के लिए रोबोटिक्स और एआई को अपनाया है। उदाहरण के लिए, मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग पिछले वर्ष के बाजार के रुझान का विश्लेषण करने और भविष्य के निर्णय लेने के लिए किया जाता है।
- **आभासी सहायक :** उपयोगकर्ता के आदेशों का पालन करने के लिए अब सिरी, कॉर्टाना, एलेक्सा और गूगल द्वारा आवाज़ पहचान का उपयोग किया जाता है। ग्राहकों की पसंद के आधार पर, ये आभासी सहायक लगातार समाधानों को अनुकूलित करते हैं।
- एआई की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वो स्वचालित है और इसका संचार, परिवहन, उपभोक्ता उत्पादों और सेवा उद्योगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- आपने चैट बोट (Chat Bot)  का नाम सुना होगा। आजकल कई कंपनियाँ चैट बोट का इस्तेमाल कस्टमर सपोर्ट के लिए करती हैं। चैट बोट आपको लगभग हर बैंक की ऑनलाइन सर्विस में मिल जाएगी। आप ऑनलाइन कस्टमर सपोर्ट जो इस्तेमाल करते हैं ये Chat Bot है, जहाँ आप अपनी समस्या चैट बॉक्स में लिखते हैं और फिर दूसरी ओर से आपको उसका समाधान दिया जाता है। दूसरी ओर से समाधान देने वाला कोई इंसान नहीं, बल्कि बैंक का AI टूल ही होता है, जिसे Chat Bot का नाम दिया गया है।

भारत और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

- G20 ओसाका शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने डिजिटल अर्थव्यवस्था और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने इन दो क्षेत्रों के विकास में समावेशी, स्वदेशीकरण, नवाचार, बुनियादी ढांचे में निवेश और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए खड़े 5 'आई' पर सरकार की निर्भरता पर जोर दिया।
- आई.आई.टी (IIT) हैदराबाद एआई में B Tech शुरू करने वाला पहला भारतीय शैक्षणिक संस्थान है। कार्नेगी विश्वविद्यालय और एमआईटी के बाद यह दुनिया में तीसरे स्थान पर है। इसके साथ ही आई.आई.टी (IIT) हैदराबाद ने एआई, मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन पर लोकप्रिय कार्यकारी कार्यक्रम भी शुरू किए हैं। इसके अतिरिक्त भारत में डिफेंस, आईबीएम का ब्लू प्रोजेक्ट, कई स्टार्टअप अब एआई में प्रवेश कर रहे हैं। अनुमान है कि एआई 2035 तक भारत

के सकल घरेलू उत्पाद में 957 बिलियन डॉलर जोड़ देगा, जिससे भारत की वार्षिक वृद्धि में 1.3% की वृद्धि होगी।

एआई के फायदे

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक इसकी सटीकता और मानवीय त्रुटियों को कम करने की क्षमता है।
- एआई बिना रुके काम कर सकता है। ये मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक तेजी से सोच सकता है।
- यह **पक्षपात** से मुक्त है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक सटीक निर्णय लेने की क्षमता है।
- एआई साइबर सुरक्षा खतरों का पता लगाकर और उन्हें कम करके और सुरक्षा के लिए सार्वजनिक स्थानों की निगरानी करके सुरक्षा बढ़ाता है।
- एआई की सबसे बड़ी खासियत स्वचलन है और इसका संचार, परिवहन, उपभोक्ता उत्पादों और सेवा उद्योगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग हमेशा बेहतर फैसले लेने के लिए किया जाता रहा है। एआई तकनीक, डेटा डिलिवरी का समन्वय कर सकती है, रुझानों का विश्लेषण कर सकती है, पूर्वानुमान प्रदान कर सकती है और सबसे बेस्ट फैसले लेने के लिए अनिश्चितताओं की संख्या बता सकती है।



एआई के नुकसान

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कई तरह के फायदे हैं तो इसके नुकसान भी हैं –

- **बेरोजगारी को बढ़ावा:** एआई में कई नौकरियों को एक साथ करने की क्षमता है जो आज के समय में मानव द्वारा की जाती हैं। इससे बड़े पैमाने पर नौकरी खत्म हो सकती है और बेरोजगारी बढ़ सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जो दिमाग वाले काम पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
- अगर हम मनुष्य की दो सबसे बड़ी विशेषताओं के बारे में बात करें तो वह नीति और नैतिकता है। यह दोनों ही फीचर मशीन के पास नहीं होते जिसके कारण वह सही और गलत का पता नहीं लगा सकती।
- **सुरक्षा का खतरा:** एआई सिस्टम साइबर हमलों और हैकिंग के प्रति सेंसेटिव हैं। यदि एआई सिस्टम में छेड़छाड़ की जाती है, तो इससे बहुत-सा डेटा लीक हो सकता है, जिससे आम जनता को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

- किसी कार्य को अच्छे तरीके से परफॉर्म करने के लिए टीम वर्क और भावनाओं की ज़रूरत पड़ती है। लेकिन हम सभी यह जानते हैं की मशीन या रोबोट में कोई भावना नहीं होती जिसके कारण यह टीम वर्क नहीं कर सकते।

एआई की चुनौतियाँ

- एआई की सबसे बड़ी चुनौती इसकी कीमत है। एआई हर दिन अपडेट हो रहा है इसलिए नई ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर को समय के साथ अपडेट होने की आवश्यकता है। मशीनों को मरम्मत और रख-रखाव की आवश्यकता होती है जिसके लिए बहुत अधिक लागत लगती है।
- एआई डेटा पर आधारित प्रणाली है। इसके पास जितना ज्यादा डेटा होगा ये उतना सटीक होगा, और जितना कम डेटा होगा, इसके गलतियां करने की आशंकाएं भी उतनी ही होंगी।
- रक्षा क्षेत्र में एआई का इस्तेमाल सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। दुनिया के कई देश एआई आधारित सैनिक यानी सैनिक रोबोट बनाने की कोशिश में हैं ताकि मानवीय क्षति को कम किया जा सके। अगर ऐसा होता है तो ये एक बड़ी उपलब्धि होगी लेकिन ये भी ध्यान रखना जरूरी है कि एक मशीन में कभी भी खराबी आ सकती है और इस स्थिति में इसके बेहद घातक परिणाम सामने आ सकते हैं। सोचने-समझने वाले रोबोट अगर किसी वजह या परिस्थिति में इंसानों को अपने खिलाफ मानने लगें, तो मानवता के लिये खतरा पैदा हो सकता है। ऐसी स्थिति आपने कई फिल्मों में भी देखी होगी जैसे Ra.ONE, ROBOT.



निष्कर्ष

एआई के स्वर्णिम युग में यह यात्रा अज्ञात क्षेत्रों की खोज के समान है, और जैसे ही हम इस परिवर्तनकारी पथ पर आगे बढ़ते हैं, हम **महात्मा गांधी के गहन ज्ञान से निर्देशित होते हैं, उन्होंने कहा था : “भविष्य इस पर निर्भर करता है कि हम वर्तमान में क्या करते हैं।”** जिम्मेदारी और दूरदर्शिता के साथ हम एआई की वास्तविक क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और एक ऐसे भविष्य को आकार दे सकते हैं जो कभी कल्पना मात्र लगता था, जो संभावनाओं की एक उल्लेखनीय दुनिया का मार्ग प्रशस्त करेगा।



केदारनाथ यात्रा का अनुभव



सुश्री सुनीता साव
लेखापरीक्षक

केदारनाथ धाम की यात्रा हमारे भारत की सबसे प्रख्यात यात्राओं में से एक है। भारत की आधे से ज़्यादा जनता के लिए यह एक उपलब्धि के समान है और मैंने इस उपलब्धि को पिछले वर्ष सितंबर 2023 में प्राप्त किया था। यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे अनोखी और अत्यंत महत्वपूर्ण यात्राओं में से एक है। वैसे तो मैंने चार-धाम यात्रा का संकल्प लिया था जिसमें सबसे पहले यमुनोत्री, फिर गंगोत्री, इसके बाद केदारनाथ धाम और तत्पश्चात बद्रीनाथ धाम के दर्शन किए। किन्तु यहाँ पर केवल केदारनाथ धाम का ही वर्णन कर रही हूँ। इस रोमांचित यात्रा का वृत्तांत देने से पूर्व, मैं इसके स्थापना की रोचक पौराणिक इतिहास संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना चाहती हूँ।



हिन्दू धर्म में हिमालय की गोद में बसे केदारनाथ धाम को बारह ज्योतिर्लिंगों में से सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। हिन्दू पुराणों की मान्यता अनुसार साल में करीब छः महीनों तक हिम से आच्छादित रहने वाले इस पवित्र धाम को भगवान शिव का निवास बताया जाता है और ऐसा माना जाता है कि यहाँ भगवान शिव हर तरीके के शिवलिंग के रूप में हर समय विराजमान रहते हैं। धार्मिक ग्रन्थों में वर्णित कथा के अनुसार महाभारत युद्ध में विजय के पश्चात पांडवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर ने हस्तिनापुर पर राज किया। इसी दौरान एक दिन पाँचों पांडव भगवान श्री कृष्ण के साथ बैठकर महाभारत युद्ध की समीक्षा कर रहे थे जिसमें पांडवों ने श्री कृष्ण से कहा कि उन सभी भाइयों पर ब्रह्महत्या के साथ-साथ अपने बंधुओं की हत्या का भी कलंक है, अतः इस ग्लानि से मुक्ति के उपाय के बारे में श्री कृष्ण से प्रार्थना की। इस सत्य को स्वीकारते हुए श्री कृष्ण ने कहा कि युद्ध में विजय प्राप्ति के उपरांत भी वे सभी अपने गुरु और बंधुओं को मारने के कारण पाप के भागी हैं और इन पापों से मुक्ति केवल महादेव ही दिला सकते हैं। श्री कृष्ण की सलाह मानकर, पांडवों ने राज्य परीक्षित को सौंप दिया और द्रौपदी समेत हस्तिनापुर को छोड़कर शिवजी की शरण में जाने के लिए उनकी तलाश में काशी चले गए। किन्तु उन्हें शिवजी के दर्शन प्राप्त

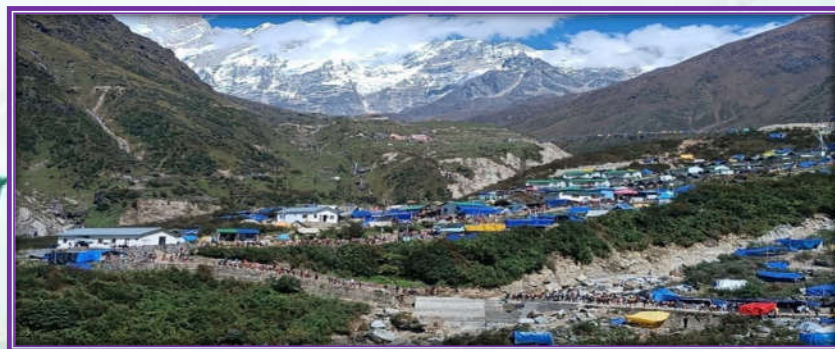
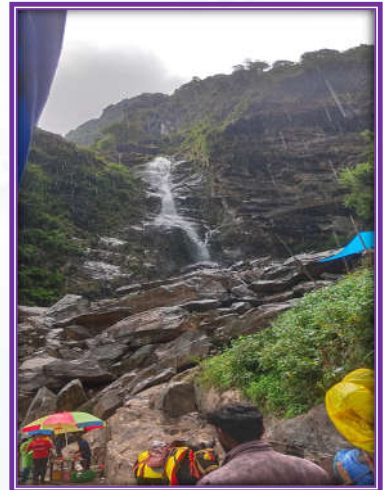
नहीं हुए और वह जगह-जगह भटकने लगे। पांडव जहाँ भी शिवजी के लिए जाते, शिवजी उनके वहाँ आने से पहले ही चले जाते, बात साफ थी शिवजी जानते थे वे किस लिए उनसे मिलना चाहते हैं और उनके द्वारा हुए पाप से नाराज़ भी थे। यही करते-करते शिवजी उत्तराखंड के गुप्त काशी में जाकर बस गए और पांडवों से छुपने के लिए उन्होंने नंदी बैल का रूप धारण कर लिया और वह गायों के झुंड में छिप गए। इधर पांडव उन्हें काफी समय तक ढूँढते रहे और आखिरकार भीम ने उन्हें खोज लिया तथा पहचान भी लिया। फिर पांडवों को अपनी ओर आते देख नंदी रूप में खड़े शिवजी धरती में समाने लगे और उन्हें रोकने के लिए भीम ने उनके पीठ के एक हिस्से को पकड़ लिया और वही हिस्सा धरती से बाहर रह गया और वो हिस्सा एक त्रिकोण के आकार के शिवलिंग में बदल गया (ऐसा शिवलिंग विश्व में कहीं और नहीं पाया जाता है) और आज बाबा केदारनाथ धाम के मंदिर में हम इसी शिवलिंग की पूजा करते हैं। पांडवों की निष्ठा देखकर भगवान शिव प्रसन्न हुए और उनके सामने प्रकट होकर उन्हें साक्षात् दर्शन दिये। उन्होंने पांडवों को उनके अपराधों के लिए क्षमा कर दिया और स्वर्ग प्राप्ति का रास्ता बताया। इसके बाद पांडवों ने शिवजी का धन्यवाद किया और जिस जगह पर शिवलिंग प्रकट हुआ था वहाँ उनके सम्मान में एक मंदिर का निर्माण करवाया जिसे आज हम **बाबा केदारनाथ** के मंदिर के नाम से सभी जानते हैं। मान्यता यह भी है कि जब शिवजी का बैल रूप धरती में समाया था तब उस बैल का मुख रुद्रानाथ में, जटा कलपेश्वर में, भुजाएँ तुंगनाथ में और नाभी मध्यमहेश्वर में प्रकट हुई थी और इसीलिए केदारनाथ के साथ इन चार स्थानों को मिलाकर **पंच-केदार** कहा जाता है।

केदारनाथ मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग ज़िले में स्थित है। भौगोलिक रूप में यह धाम समुद्र तल से लगभग 3583मी (11,755 फिट) ऊपर चोराबारी हिमनद में स्थित है। यह मंदिर तीनों दिशाओं से पहाड़ों से घिरा हुआ है। जहाँ एक तरफ 22,000 फीट ऊंचा केदार, दूसरी तरफ 21,600 फीट ऊंचा खरचकुंड और तीसरी तरफ 22,700 फीट ऊंचा भरतकुंड का पहाड़ है। केदार घाटी में हमें पाँच नदियों का संगम- मन्दाकिनी (अलकनन्दा की सहायक नदी), मधुगंगा, छिरगंगा, सरस्वती और स्वर्णगौरी नदी देखने को मिलता है। मैंने अपनी यात्रा दिनांक 22 दिसंबर 2023 को ऑफिस के बाद शाम को 7.30 बजे आरंभ की और ट्रेन से लगभग 36 (छत्तीस) घंटों की यात्रा करके हम हावड़ा स्टेशन से लस्कर स्टेशन सुबह 7.30 बजे पहुंचे। लस्कर से हम टोटो लेकर हरिद्वार दोपहर को पहुँचे और एक दिन का विश्राम लिया और अगली सुबह एक ट्रेवलर बस के माध्यम से देहरादून, मुसौरी होते हुए जानकी चट्टी पहुंचे जहाँ पर हमने वापस एक दिन का विश्राम लिया और दूसरे दिन हमारा पहला धाम यमुनोत्री धाम की पैदल यात्रा (जो कि 6.5 किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई) प्रारम्भ की। पूरे दिन की अत्यंत कष्टदायक यात्रा के बाद हम वहीं रुक गए और वहाँ से दूसरे दिन निकल पड़े हम अपने दूसरे धाम गंगोत्री के लिए। यमुनोत्री की पावन कर देने वाली भूमि और शीतजल शीतलता हिमनद से चली आ रही भागीरथी नदी के दर्शन कर हम अपनी आगे की यात्रा पर निकल पड़े। पहाड़ों के बीच कटे हुए रास्ते से पूरे दिन मनोरम दृश्य लेते

हुए हम सब सोनप्रयाग पहुंचे, जहां विश्राम गृह लेकर हमने अपनी थकान दूर की और अगली सुबह हम वहाँ से रवाना होने के लिए तैयार हो गए।

सबसे पहले हम रजिस्ट्रेशन बूथ गए, जहां पर हमने अपना पहले से ऑनलाइन किया हुआ रजिस्ट्रेशन की जांच करवायी और फिर हम लगभग 2.5 कि.मी. की दूरी मैजिक कार से गौरीकुन्द को पार करते हुए केदारनाथ की पैदल यात्रा शुरू कर के द्वार-स्थल पर पहुंचे। इस बड़े से द्वार के कुछ दूर जाकर ही, घोड़ा-स्टैंड और पिट्टू पर बिठाने वाले कई सारे मिल जाएंगे। जिन यात्रियों को शारीरिक कष्ट है, वह यहाँ से अपने सुविधानुसार वाहन बुक करवाके ले सकते हैं। भोलेनाथ का नाम लेते हुए हमने अपनी आनंदमय यात्रा का आगमन किया। असल में यह पैदल यात्रा गौरीकुन्द से शुरू होती है, जो केदारनाथ से लगभग 18 कि॰मी॰ दूर है। श्रद्धालु गौरीकुन्द पर होटल, लौज इत्यादि में ठहरकर प्रातः इस कुंड में स्नान करके यात्रा शुरू करते हैं, ताकि वे दिन के समय ही केदारनाथ पहुँच सकें और कपाट बंद होने से पहले बाबा के दर्शन प्राप्त कर सकें।

दर्शनप्राप्त की प्रबल इच्छा और अद्भुत उत्तेजना से पूर्ण हम आगे बढ़ रहे थे। (लगभग 1.5 कि॰मी॰) हमारा पहला ठहराव बिन्दु स्थल – **जंगल चट्टी** आया। मार्ग में इस तरह के अनेक ठहराव स्टाल आते हैं, जहां पैदल यात्री कुछ देर विश्राम लेकर आराम कर सकते हैं। यहाँ पर चाय-स्थल और छोटे-छोटे खाने की दुकानें भी होती हैं, जहां पर्याप्त जलपान करने की सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जगह-जगह पर प्राथमिक उपचार केंद्र की भी व्यवस्था है, उन यात्रियों के लिए जिन्हें सांस लेने की दिक्कत या अन्य कोई तकलीफ, जिसका तत्काल उपचार किया जा सके। इसके बाद हमारा दूसरा ठहराव बिन्दु- भीमबली आता है जो लगभग 2 कि॰मी॰ की दूरी पर है। इस जगह की शांतिमय वातावरण में इतनी सौम्यता है कि मन एवं शरीर की थकान आनंद में परिवर्तित कर देती है। कुछ देर और चलने के बाद ही हमने एक खूबसूरत झरने के पानी में थोड़ी देर आनंद लिया और फिर आगे बढ़ चले।



कुछ आगे चलने के बाद एक फूटओवर ब्रिज आता है जो कि **रामबाड़ा** नाम से लोकप्रिय है। जानकारी हेतु बता दे कि इस स्थान की लोकप्रियता 2013 के बाद और बढ़ गई है क्योंकि यह वही स्थल है जिसे बाढ़ ने सम्पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त करके, इस जगह की ऐतिहासिक और भौगोलिक चिन्ह भी मिटा दिया है। गौरीकुंड से लेकर **रामबाड़ा** तक समतल भूमि है जो आगे की मार्ग की तुलना में काफ़ि आसान है, परंतु इसके आगे खड़ी चढ़ाई है जो कि पहली बार कर रहे यात्रियों के लिए अत्यंत कठिन है। इस बात से यह भी साफ है कि अच्छी फ़िटनेस और स्वास्थ्य की विशेष भूमिका है। **रामबाड़ा** से 1.5 कि॰मी॰ की दूरी पर **छोटी लिंगौली** और यहाँ से लगभग 3.5 कि॰मी॰ पर **लिंगौली** आता है (जो कि गौरीकुंड से 10 कि॰मी॰ से भी अधिक है)।



लिंगौली में गढ़वाल मंडल विकास निगम की कॉटेज, लॉज व्यवस्था है, जहाँ विश्राम के साथ ही लंच, डिनर की अच्छी सुविधा उपलब्ध है। यहाँ पर रुकने के लिए इसकी बूकिंग सरकार की ऑफिशियल वेबसाइट से भी की जा सकती है। लिंगौली से निकलकर लगभग 1.5 कि॰मी॰ की चढ़ाई के बाद हमारा अगला ठहराव बिन्दु **छानी पॉइंट** आता है, जिसके बाद 3.5 कि॰मी॰ की और चढ़ाई के बाद **रुद्र पॉइंट** आता है। यह यात्रा इतनी कठिन है कि फ़िटनेस के बिना करना अत्यंत कष्टदायक सिद्ध होता है। पर्याप्त पानी और कुछ खाने की सामग्री ही हमारा साथ निभा रहे थे। रुद्र पॉइंट पहुँचते-पहुँचते रात के लगभग 10 बज गए थे और हम सब की हालत खराब होने लगी थी। जैसे-जैसे हम चढ़ाई करते, ऊँचाई बढ़ती जाती और तापमान गिरता जाता। इस गिरते तापमान और ऊँचाई से हमारी सांस फूल रही थी, जिसे सामान्य रखने के लिए हम एक छोटी-से डिब्बियाँ में कपूर के कुछ टुकड़े लेकर बारी-बारी से सूँघ रहे थे, और हमारी साँस वापस आ रही थी। जैसे-तैसे **बेस कैम्प** (लगभग 1.5 कि.मी.) पहुँचकर हमने हार मान ली क्योंकि शारीरिक थकान और अत्यधिक ठण्ड (लगभग- 5°-7° सेल्सियस) से सबकी तकलीफें चरम सीमा पर थीं। हम सबने वही टेन्ट लेकर रात गुजारने का निर्णय लिया। बेस-कैम्प से लगभग 10.5 कि.मी. की दूरी पर बाबा केदार का मंदिर है, जिसके दर्शन के लिए सभी भी सुबह की प्रतीक्षा हो रही थी।

प्रातः सुबह हमारे जीवन में नूतन सुबह बनकर आयी, क्योंकि यहाँ का नजारा आश्चर्यचकित करने वाला था, जो रात में हम समझ नहीं पाये थे। बेस कैम्प पार करके लगभग 1 कि.मी. चलने के बाद मंदिर के अंदर जाने की कतार लगी हुई थी, जिसमें हम भी लग गए। ऐसा अद्भूत और मन का तृप्त करने वाला दृश्य हमारे चारों ओर था कि हमें पता ही नहीं चला कि कब एक डेढ़ घण्टे बीत गए और फिर वो पल आया जिसकी प्रतीक्षा केवल हम नहीं बल्कि आप सभी पाठक भी कर रहे हैं। बाबा केदार के मंदिर की पहली झलक अविस्मरणीय और अनुपम थी। मानों स्वर्ग-रोहिणी भी आलैकिक सुंदरता के सामने

कुछ नहीं, ऐसा मनोरम दृश्य था जिसे शब्दों में बयान कर पाना भी असंभव है। हमें ऐसा महसूस हो रहा था कि हम अपनी आम जिंदगी को छोड़ स्वर्ग में आ गए हैं और बाबा केदार हमें अपनी शरण में ले रहे हैं। लोगों की कतार बढ़ी, हमारी बारी आयी और हमने अपने जीवन के अद्वितीय और अलौकिक दृश्य में बाबा के दर्शन किए, जो न केवल सुख, शांति अपितु मन को तृप्त भी कर रहा था।

मंदिर के आगे प्रांगण में नन्दी जी और पीछे भीमशिला विराजमान हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ आदि शंकराचार्य की समाधि एवं एक बहुत बड़ा ओंकार का भी निर्माण किया गया है। हमने सभी के दर्शन किए। मंदिर से लगभग 1.5 कि.मी. की चढ़ाई कर ऊपर बाबा भैरव का मंदिर है, जो कि इस क्षेत्र के क्षेत्रपाल के रूप में विराजमान है। मान्यता है कि शीतकाल में जब यहाँ कोई भी नहीं आ पाता है तब इसकी सुरक्षा भैरवनाथ करते हैं।



शायद यही कारण है कि शीत ऋतु के बाद मंदिर के कपाट खोलने से पहले बाबा भैरवनाथ की पूजा की जाती है। किन्हीं अनिवार्य परिस्थिति के कारण हम भैरव बाबा के दर्शन नहीं कर पाये थे। प्रसाद इत्यादि लेकर हमने यहाँ से वापसी की यात्रा प्रारम्भ कर दी। आने-जाने दोनों में ही हमें सामान्य से एक-दो घण्टे ज्यादा ही लगे, लेकिन बाबा की कृपा से हमने बद्रीनाथ के दर्शन भी कर लिए और अपने घर सही-सलामत वापस आ गए।

यह यात्रा मेरी जिंदगी की सबसे अनोखी यात्रायों में से एक है और इसकी एक मनोरम छवि हमेशा मेरे हृदय में रहेगी। व्यक्तिगत दृष्टिकोण से देखा जाय तो यह केवल एक-दो दिन की यात्रा नहीं थी, यह एक ऐसा स्वरूप था जो हमेशा मुझे प्रेरणा देगा। इस यात्रा में हमे काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा और काफी तकलीफ भी हुई जिसका वर्णन यहाँ नहीं है। लेकिन हमने कभी भी हार नहीं मानी और आगे बढ़ते रहे, अपने गन्तव्य को केंद्रित कर और अंत में हमे हमारा लक्ष्य मिल ही गया। हमारी जिंदगी भी कुछ इसी प्रकार से है जो एक यात्रा के समान है, हमारे सामने रोज नई परिस्थिति, नई चुनौती आती है, हमें इनसे घबराकर, डरकर पीछे नहीं हटना चाहिए बल्कि केंद्रित होकर इसका सामना करना चाहिए। मुश्किलें विकट हो सकती हैं पर चिंता त्यागना है और आगे बढ़ना है। छुपकर बैठने वालों का नहीं, बल्कि आगे बढ़ने वालों का सभी सहयोग करते हैं। यही इस यात्रा का और इस पाठ का सार है।



क्रिकेट का सफर



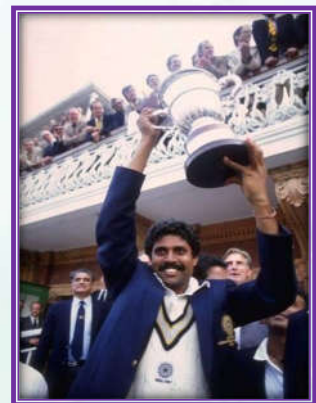
श्री रौनक रॉय, लेखापरीक्षक

भारत 140 करोड़ की आबादी वाला देश है। इस देश के लोग राजनीति, फिल्में और क्रिकेट के शौकीन हैं। क्रिकेट 8 से 80 वर्ष के उम्र के लोग की जीवन रेखा माना जाता है। भारत में क्रिकेट के करोड़ों प्रशंसक हैं। संक्षेप में आप कह सकते हैं कि क्रिकेट भारतीयों के दिल की धड़कन है। आइये, 2000 के दशक के बाद भारतीय क्रिकेट और क्रिकेट खेल में हुए परिवर्तन/क्रांति के बारे में कुछ बात करें। क्रिकेट खेल की शुरुआत इंग्लैंड में हुयी। क्रिकेट में हर टीम में 11 खिलाड़ी होते हैं। पहला अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट 1877 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया। भारत ने 1932 में सीके नायडू की कप्तानी में अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय मैच खेला। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में तीन फॉर्मेट हैं। वे क्रमशः टेस्ट, वन डे और टी20 इंटरनेशनल हैं। पहला अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट मैच 1877 में खेला गया, पहला अंतर्राष्ट्रीय वन डे 1971 में और पहला अंतर्राष्ट्रीय टी20 2005 में खेला गया।

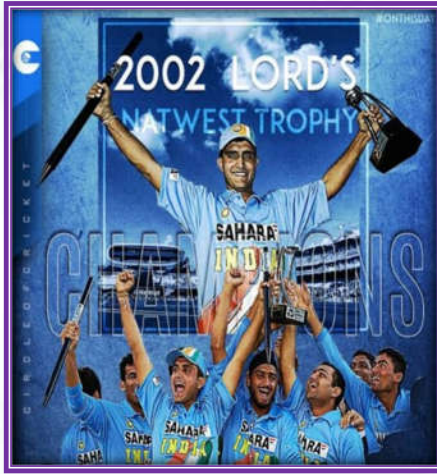


टेस्ट मैच का एक दृश्य

कप्तान अजित वाडेकर के नेतृत्व में भारत ने पहली बार 1971 में विदेशी सरज़मीन पर वेस्ट इंडीज़ को हराकर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में अपना परचम लहराया। 1909 में स्थापित आईसीसी वर्ल्डवाइड क्रिकेट का शासी निकाय है जिसे इम्पीरियल क्रिकेट सम्मेलन के रूप में नामित किया गया था, लेकिन बाद में यह 2001 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद बन गया। क्रिकेट की शुरुआत के बाद यह भारतीय उपमहाद्वीप, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, वेस्ट इंडीज़ जैसे कई देशों में भी खेला जाने लगा। क्रिकेट विश्व कप (वन डे 60 ओवर) की शुरुआत 1975 में हुई। इनांगरल चैंपियन वेस्ट इंडीज़ टीम थी। लेकिन क्रिकेट जल्द ही भारतीयों के बीच अधिक लोकप्रिय हो गया जब भारत 1983 में क्रिकेट में विश्व का चैंपियन बन गया, जो कपिल देव की कप्तानी में इंग्लैंड में आयोजित किया गया था। 50 ओवरों के वन डे विश्व कप प्रारूप 1987 में शुरू हुआ। 2000 के दशक के बाद दक्षिण अफ्रीका में 2007 में T20 WC का इनांगरल किया गया था। भारत इस इनांगरल 20 WC का चैंपियन बन गया। अब हाल ही में टेस्ट चैंपियनशिप 2019 में शुरू हुई जहां न्यूजीलैंड भारत को हराने वाला इनांगरल चैंपियन बन गया।



कुछ प्रसिद्ध क्रिकेट खेलने वाले राष्ट्र ऑस्ट्रेलिया, भारत, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड, वेस्ट इंडीज, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका आदि हैं। भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड (बीसीसीआई) भारतीय क्रिकेट का शासी निकाय है जो भारत में होने वाले टूर्नामेंट का आयोजन करता है और इंडिया नेशनल क्रिकेट टीम और इंडिया वूमेन



नैटवेस्ट ट्रॉफी



टी20 वर्ल्ड कप 2007

क्रिकेट टीम के लिए खिलाड़ियों का चयन करता है। अब 2000 के दशक के बाद भारतीय क्रिकेट की क्रांति की बात आती है। अज़हरुद्दीन की कप्तानी के बाद भारतीय क्रिकेट संगीन हालत में थी। उस समय भारतीय क्रिकेट को एक ऐसे कप्तान की जरूरत थी जो भारतीय टीम का नेतृत्व करेगा। मैच फिक्सिंग स्कैंडल से लेकर खराब टीम चयन तक सब कुछ भारतीय टीम के विपरीत चल रहा था। तब सौरव गांगुली को 2000 में भारतीय टीम के कप्तान के रूप में चुना गया था। हालाँकि हमारे पास सचिन तेंदुलकर (गॉड ऑफ क्रिकेट) थे। लेकिन भारतीय टीम में कुछ युवा खिलाड़ी की आवश्यकता थी जो ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड जैसी बड़ी टीमों से भारत के तरफ से आक्रामकता के साथ लड़ सकें। सौरव गांगुली ने युवराज, सेहवाग, हरभजन, जहीर जैसे कुछ युवा सदस्यों को टीम में लिया। बाद में राहुल द्रविड़ और कुंबले कुछ समय के लिए भारत के कप्तान बने। तब भारत एक युवा कप्तान की तलाश में था जो टीम का नेतृत्व कर सके, तब धोनी 2007 में भारतीय कप्तान बने। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में टी20 डब्ल्यूसी में टीम का नेतृत्व किया और सामूहिक प्रयास से चैंपियन बन गये।

हमने 2008 में इंडियन प्रीमियर लीग को देखा जो विश्व के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट लीग में से एक है। इस लीग के माध्यम से कई युवा प्रतिभाशाली खिलाड़ी को खेलने का मौका मिला। आम तौर पर यह एक फ्रेंचाइजी आधारित टूर्नामेंट है जहां चेन्नई सुपर किंग्स, मुंबई इंडियंस, कोलकाता नाइट राइडर्स, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर जैसी कई टीमों, न केवल आईपीएल बल्कि दुनिया में कई और क्रिकेट लीग हैं जैसे बिग बैश, सीपीएल भी खेलती हैं। धोनी की कप्तानी में भारत 28 साल बाद फिर से 2011 में विश्व चैंपियन बना। युवराज सिंह, सचिन तेंदुलकर, जहीर खान, गौतम गम्भीर आदि कुछ खिलाड़ियों का बहुत बड़ा योगदान था। अंत में करोड़ों भारतीयों का सपना साकार हुआ।



विश्व चैंपियन - 2011

फिर हमने 2013 में इंग्लैंड को हराकर चैंपियन ट्रॉफी जीती। सचिन तेदुलकर की सेवानिवृत्ति के बाद विराट कोहली ने भारत के बैटिंग लाइन अप का कार्यभार संभाला। 2014 में धोनी के कप्तानी के बाद विराट कोहली कप्तान बनें। हमारा सबसे बड़ा दुख था 2015 और 2019 में WC के सेमिफाइनल से बाहर होना। 2019 में डब्ल्यूसी खोने के बाद, विराट ने कप्तानी छोड़ दी और रोहित शर्मा भारत के नए कप्तान बने। 2013 के बाद भारतीय क्रिकेट टीम में पहले से ही कई प्रतिभाशाली क्रिकेटर मौजूद थे- जैसे जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शामी, रोहित शर्मा, शिखर



चैंपियन ट्रॉफी-2013

धवन, ऋषभ पंत, हार्दिक पाण्ड्या, कुलदीप यादव आदि। कुछ प्रसिद्ध भारतीय महिला क्रिकेट खिलाड़ी हैं मिताली राज, झुलन गोस्वामी, हरमनप्रीत कौर, स्मृति मंधना आदि। हाल ही में सबसे बड़ा दुख 2023 को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ओडीआई वर्ल्ड कप फाइनल हारना था। लेकिन हमारी टीम इंडिया ने फाइनल में इस अप्रत्याशित हार के बाद उम्मीद नहीं छोड़ी। अदम्य जुनून के साथ वर्ल्ड-कप ट्रॉफी को पाने के लिए रोहित शर्मा के नेतृत्व में भारतीय टीम 2024 में अमेरिका महाद्वीप पहुंच गया। इस टूर्नामेंट में एक भी मैच गंवाए बिना भारत ने 2024 टी20 डब्ल्यूसी जीता और फाइनल मैच में दक्षिण अफ्रीका को हराया। आखिरकार भारत के लिए आईसीसी ट्रॉफी पाने की प्यास बुझी।

कभी-कभी हम देखते हैं कि अलग-अलग क्रिकेटरों के अलग-अलग फ्रैन होते हैं। वे आपस में वाद-विवाद करते रहते हैं। लेकिन हमें इसे ध्यान में रखना होगा, हमें अपनी पूरी भारतीय क्रिकेट टीम का दिल से समर्थन करना चाहिए न कि किसी एक का प्रशंसक होना चाहिए। जीत और हार खेल का हिस्सा हैं, लेकिन एक प्रशंसक के रूप में हम इन उतार-चढ़ाव के बावजूद अपनी भारतीय क्रिकेट टीम को हमेशा खुश और प्रेरित करते हैं। अंत में, क्रिकेट केवल एक खेल नहीं है, यह करोड़ों भारतीयों की धड़कन है।



जलवायु परिवर्तन



श्री अर्जुन मंडल, लेखापरीक्षक

विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने 'वैश्विक जलवायु 2011-2020: त्वरण का एक दशक' नामक रिपोर्ट जारी की, जिसमें उल्लेख किया गया कि 2011-2020 का दशक रिकॉर्ड पर सबसे गर्म दशक था। फिर से संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा उत्सर्जन अंतर रिपोर्ट ने भविष्यवाणी की कि उत्सर्जन तापमान की इस प्रवृत्ति के साथ इस सदी तक 2.7 डिग्री सेलसियस तक बढ़ जाएगा। इन सभी रिपोर्टों में उल्लेख



किया गया है कि भौतिक और जनसंख्या दोनों स्तरों पर जलवायु परिवर्तन एक नया भूगोल तैयार कर रहा है। निरंतर वनों की कटाई, संसाधनों के असंतुलित उपभोग, तीव्र औद्योगिकीकरण और जनसंख्या वृद्धि आदि के परिणामस्वरूप विश्व का परिदृश्य तेज़ी से बदल रहा है, जिसके कारण तापमान, वर्षों के स्वरूप, समुद्र के स्तर और चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में लगातार परिवर्तन हो रहा है। उपजाऊ देश बंजर हो रहे हैं, रेगिस्तान बढ़ रहे हैं और तट रेखाएँ पीछे हट रही हैं। लंबे समय तक रहने वाले ग्लेशियर पिघल रहे हैं। नई नदियाँ और झीलें बन रही हैं और वैश्विक मौसम पैटर्न और समुद्री धाराओं में बदलाव हो रहा है। यह गतिशील प्रक्रिया हर महाद्वीप और देश को प्रभावित करती है, जिसमें घनी आबादी वाले और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान शामिल हैं: यह अलग-थलग या कम आबादी वाले क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण सामाजिक असमानता भी बढ़ रही है। सबसे कमज़ोर आबादी, जो मुख्य रूप से उभरते और अविकसित देशों में पाई जाती है, जलवायु परिवर्तन से असमान रूप से प्रभावित होती है, भले ही वे सबसे कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन करते हों। उदाहरण के लिए, अफ्रीका के साहेल क्षेत्र में अधिक तीव्र सूखा पड़ रहा है, जिससे पलायन और खाद्य असुरक्षा हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण शरणार्थी संकट भी नए स्तर पर हैं।

परिवर्तन के प्रभावों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील है। भारतीय उपमहाद्वीप, जो अपनी लंबी तटरेखा, व्यापक कृषि भूमि और घने शहरी केन्द्रों के लिए जाना जाता है, महत्वपूर्ण भौगोलिक बदलावों का अनुभव कर रहा है। इस गर्मी में तापमान पहले से ही नए स्तर पर है और लगातार भीषण गर्मी की चेतावनी का सामना कर रहा है। मुंबई, चेन्नई, और कोलकाता जैसे तटीय क्षेत्रों में समुद्र के बढ़ते स्तर के कारण बाढ़ और कटाव में वृद्धि हो रही है। जलवायु परिवर्तन के कारण ये सभी घटनाएँ स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नयी भूगोल बन रही हैं। इस बदलते भूगोल से आर्कटिक क्षेत्र में खनिजों की खोज में भी मदद मिलेगी। साथ ही कहीं-कहीं लंबे मौसम का कारण कृषि की उत्पादकता बढ़ेगी और इससे नए समुद्री मार्ग भी खुल सकते हैं जिससे व्यापार को बढ़ावा मिलेगा लेकिन ये सभी लाभ बहुत ही छोटे हैं जब हम इसकी तुलना वर्तमान भूगोल और उसके प्रभावों से कर रहे हैं। दीर्घावधि में यह बदलाव खतरनाक होगा और भूगोल में इस तरह के बदलाव से कुल मिलाकर तबाही मचेगी। ऐसी चुनौतियों पर अंकुश लगाने के लिए विभिन्न स्तरों पर कई प्रयास किए जा रहे हैं। दुबई में आयोजित सोओपी 28 सत्र के दौरान चार स्तंभों वाले समाधान का मसौदा तैयार किया गया जिसमें न्यायसंगत, व्यवस्थित और समान ऊर्जा संक्रमण को तेज़ी से आगे बढ़ाना, जलवायु वित्त को ठीक करना आदि शामिल हैं। 2025 में लक्ष्य ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व- औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेलसियस से नीचे और अधिमानतः 1.5 डिग्री सेलसियस तक सीमित करना है और एक बार फिर अमेरिका इस ढांचे में शामिल हो गया।



यूरोपीय संघ ने एक व्यापक उत्सर्जन व्यापार प्रणाली लागू की है, जिसके तहत कंपनियों को ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के लिए परमिट खरीदना होगा। उन्होंने अक्षय ऊर्जा अनुसंधान और विकास में भी भारी निवेश किया है, जिसका लक्ष्य 2050 तक कार्बन तटस्थता हासिल करना है। विकसित देशों ने मौद्रिक और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सहायता के लिए भी वचनबद्धता जताई है। कुछ देशों और क्षेत्रों ने कार्बन कारों जैसी कार्बन मूल्य निर्धारण योजनाओं को लागू किया है, ताकि प्रदूषकों को उनके उत्सर्जन के लिए भुगतान करना पड़े और स्वच्छ प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा सके। भारत अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और हाल ही में स्थापित वैश्विक जैव ईंधन गठबंधनों के माध्यम से अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा दे रहा है। भारत ने Life पहल का विचार भी दिया है जिसे जीवनशैली में अपनाया जाना चाहिए। लेकिन बड़ा सवाल यह उठता है कि क्या पहल पर्याप्त हैं?

जवाब है नहीं, इस तरह के प्रयास बहुत ही कम हैं और नए भूगोल को आकार देने से नहीं रोक पाएंगी। गांधीजी ने कहा था कि 'आवश्यकताओं के लिए बहुत कुछ है, लेकिन लालच के लिए नहीं' और

वर्तमान समय में लालच हर उस कार्य में निहित है जो अलग-अलग स्तरों पर किया जाता है और 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भावना का अभाव है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के तरीके में अब समुदायों की भूमिका अहम हो गयी है। हरित शहरी डिज़ाइन, जिसमें हरित क्षेत्र, संधारणीय सार्वजनिक परिवहन प्रणाली और ऊर्जा-कुशल संरचना जैसी विशेषताएँ शामिल हैं, को हर जगह स्थानीय सरकारी द्वारा सर्वोत्तम प्राथमिकता दी जानी चाहिए। शहरी खेती, संरक्षण कार्यक्रम और पड़ोस आधारित नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ समुदाय द्वारा संचालित परियोजनाओं के उदाहरण हैं जो कार्बन फूटप्रिंट को कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति लचिलापन बढ़ाने में मदद कर सकती है। सरकारी, निगमों और नागरिक समाज संगठनों को व्यावहारिक जलवायु समाधान बनाने और लागू करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।



सार्वजनिक- निजी भागीदारों में बुनियादी ढांचे और संधारणीय प्रौद्योगिकियों में निवेश को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ बौद्धिक मंचों के निर्माण की क्षमता है। दुनिया को सीओपी28 एजेंडा को सही मायने में लागू करने की ज़रूरत है, विकसित देशों ने 100 बिलियन डॉलर का वादा किया था, जिसे जल्द जारी किया जाना चाहिए।

स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों, कार्बन कैप्चर और स्टोरेज समाधानों और जलवायु-लचीले कृषि पद्धतियों के अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता प्रगति को गति दे सकती है, ज्ञान और विशेषज्ञता को साझा करना महत्वपूर्ण होगा और बढ़ने के लिए अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) में निवेश करना महत्वपूर्ण है। आर एंड डी में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कार्बन कैप्चर और स्टोरेज जैसे क्षेत्रों में सफलता की ओर ले जा सकता है।

जलवायु नीति को सफलतापूर्वक लागू करने वाले देशों को अपना ज्ञान और अनुभव दूसरों को देना चाहिए। तकनीकी विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं के लिए ज्ञान के आदान-प्रदान, कार्यशालाओं और क्षमता निर्माण के कार्यक्रम सभी इसका हिस्सा हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी (आई.पी.सी.सी.) और जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र प्रेमवर्क कोन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) जैसी वैश्विक संस्थाओं के कामकाज को मजबूत करना ज़रूरी है। चूंकि हम जलवायु परिवर्तन के कारण भौगोलिक परिवर्तन का सामना कर रहे हैं, इसलिए आज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचार को बढ़ावा देने की ज़रूरत है और अंत में कोई भी कदम उठाने से पहले बराक ओबामा के शब्दों को याद रखना चाहिए-

"हम जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को महसूस करने वाली पहली पीढ़ी हैं और अंतिम पीढ़ी भी हैं जो इसके बारे में कुछ कर सकते हैं।"



जीवन क्या है



श्री नीरज कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

क्या है जीवन
मैं अक्सर सोचता हूँ
स्वयं के अस्तित्व को
औरों के बीच खोजता हूँ
मैं क्यों आया हूँ इस जग में
और पाया हूँ ये मानव जीवन
क्या विधान रची है उसने
कुछ तो होगा प्रयोजन?

इस प्रश्न के हल को ढूँढने
मैं बीते हुए कल की यादों को टटोलता हूँ
आज साझा करता हूँ तुमसे
अपने अनुभव की गठरी को खोलता हूँ
क्या अभी तक जाना हूँ जीवन को
और क्या अभी तक समझा हूँ
सुख-दुख की हर वो बातें
आज तुम्हारे सामने रखता हूँ

ये जीवन एक यात्रा है
खुद की तलाश है
पथ में मिलते कभी अँधेरी रात तो
कभी मिलते दिन सा प्रकाश है
जीवन अनुभवों का संग्रह है
जीवन संगम है, जीवन विग्रह है
अपनी करनी का ही परिणाम है जीवन
परिस्थिति सम हो या विषम हो
हर हाल में जीते रहने का ही नाम है जीवन

जीवन सपनों को सच करने का ज़रिया है
जीवन एक अविरल दरिया है

ये जीवन समुद्र मंथन भी है
कभी हासिल होते छोटे सिक्के
तो कभी मिलते कंचन भी है
जीवन त्याग है, जीवन अर्पण है
जीवन सेवा और समर्पण है
निश्छल मन की बेदी पर
ये जीवन एक तर्पण है

जन्म से लेकर मृत्यु पटल तक
जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है
जिसे हार-जीत का भय नहीं
मन अडिग हो कोई संशय नहीं
इस जीवन में जीता वही हर संग्राम है

हां जीवन एक अनवरत युद्ध है
जो स्वयं के विरुद्ध है
कोई शत्रु नहीं और ना ही कोई मित्र है
जीतना है जिसे वो निज चरित्र है

अपने मन को जो साध पाया है
वही सार्थक जीवन जी पाता है
वर्ण व्याकुल मन की मृग-तृष्णा में
ये जीवन व्यर्थ ही खपाता है

बस यही बात याद रख
तू अपने अंतरात्मा को परख
शांति और संयम से जीना ही हो
हर मनुष्य का अंतिम लक्ष्य।

एक नज़र में- दमकता दार्जिलिंग



श्री शिलादित्य सिन्हा
लेखापरीक्षक

साल भर काम करने के बाद जब दिसंबर के महीने में एक हफ्ते के लिए छुट्टी मिलती है, तब घर पर काम करने का दिल नहीं होता। मन करता है कि सूटकेस में कपड़े डाल, दूर पहाड़ों या नदी किनारे कहीं निकल पड़ें। तो इस बार भी कुछ ऐसा हुआ। मैंने 25 दिसंबर को दार्जिलिंग का टिकट बना लिया। बचपन से ही मन था कि अकेले पहाड़ों में बैठकर वहाँ की मैगी खाऊँ। तो निर्णय लिया इस बार अपने सपनों में रंग भर दूँ। रात 12 बजे की ट्रेन थी। बैग में ठंड के कपड़े भरे और मम्मी के हाथों की बनी टिफिन लेकर ट्रेन में चढ़ गया। सच कहे तो डर तो लग रहा था, पर एक अजीब सी बेचैनी थी, एक खुशी भी थी। हावड़ा स्टेशन पर जब पहुंचा, तब प्लैटफॉर्म पर गाड़ी लग चुकी थी। मैं दौड़ने ही वाला था कि पापा हंस कर बोले, 'अरे! दौड़ क्यों रहा है पगले? अभी तो आधा घंटा और है। ये साँसे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए बचा कर रखो'। मैंने और पापा ने जब अपनी सीट ढूँढी तो देखा एकदम खिड़की वाली लोअर सीट मिली थी। यह देख के ही मेरा दिल झूम उठा। पाँच ही मिनट बाकी थे जब पापा गाड़ी से उतरे और लंबी सलाह देना शुरू कर दिये। "हर रोज़ फोन करना, अंजान आदमी से कुछ लेकर मत खाना और पीना, पैसे संभाल के रखना, खो मत जाना, रात में अकेले कहीं मत जाना।" वो बोलते गए और मैं दरवाज़े पर खड़ा सुनता गया। शायद हम अपने मम्मी-पापा के आँखों में कभी बड़े होते ही नहीं। मैं खुद डॉक्टर हूँ, हज़ार बीमारियों से हर रोज़ डटकर मुकाबला करता हूँ, कभी-कभी तो यमराज से भी लड़-झगड़ पड़ता हूँ, फिर भी शायद पापा के नज़रों में आज भी वही हाफ-पेंट पहना उछल-कूद करता 6 साल का स्कूल जाने वाला बच्चा ही था। थोड़ा मन खराब हो आया ये सोचकर कि कई दिनों तक घर से दूर रहना होगा, तभी ट्रेन की सीटी बजी। धीरे-धीरे ट्रेन चलने लगी, मानों कोई बच्चा अपने पहले कदम ले रहा हो।

देखते ही देखते हावड़ा का प्लैटफॉर्म छोटा होता गया और ट्रेन की गति बढ़ने लगी। मैं कुछ देर दरवाज़े पर खड़ा रहा। थोड़ा अकेलापन महसूस हो ही रहा था कि अचानक गहरे नीले आसमान पर खिलखिलाते हुए चाँद पर मेरी नज़र पड़ी। ऐसा लगा कि मानो चाँद मेरे ही साथ पहाड़ों में घूमने जा रहा हो। झिलमिलाते हुए सितारे आसमान में चमक रहे थे। मैं लौटकर अपने सीट पर आ गया। पेट में चूहे कूद रहे थे। बैग खोलकर मम्मी ने जो टिफिन दिया था, उसे खोल कर देखा तो मेरे पसंद का राजमा चावल था। कुछ ही मिनटों में टिफिन एकदम साफ कर दिया। खिड़की से बाहर देखा तो कुछ तारें टिमटिमाते हुए बल्ब के समान एक के बाद एक दिखे। ट्रेन इतनी जोर से भाग रही थी कि एक भी गुजरते हुए स्टेशन का नाम नहीं दिख रहा था। फिर जब आसमान में देखा तो चाँद भी उसी गति से भाग रहा था। नींद तो बिल्कुल भी नहीं आई, परन्तु मेरे आस-पास के सारे लोग अब तक सो चुके थे। कुछ तो जोर

से खरटि भी मार रहे थे। मैं भी चादर ओढ़कर लेट गया। अगले दिन जब नींद खुली तो देखा कि चारों ओर नीला आसमान और बर्फ की चादर ओढ़े हुए सफेद पहाड़ थे। ट्रेन जलपाईगुड़ी पहुंचने ही वाली थी। मैंने नींद से उठकर अपने सामान समेटे और हाथ में फोन लिया। खिड़कियों से फोटो खिंचकर स्टेशन आने का इंतजार ही कर रहा था कि आसमान से बादल हटे और सुनहला सूरज झिलमिला उठा। ऐसा दृश्य मैंने कभी नहीं देखा था। ट्रेन स्टेशन पर आकर रूकी। मैंने उतरते ही चाय पिया और टैक्सी स्टैंड की ओर बढ़ा। मैंने घूम स्टेशन तक गाड़ी बुक किया। पहुंचने में तकरीबन दो घंटे लगे। वहां रास्ते के नज़ारे इतने सुंदर थे कि आंखें खुली की खुली रह गईं। सफेद पहाड़, नीला आसमान और हरे-हरे पेड़; मानो कोई सपना हो। वहां पहाड़ों के रास्ते में कुछ ऐसा नशा था मानो मैंने तीस साल के जीवन में कभी महसूस नहीं किया था। होटल पहुंचने में दोपहर हो गयी थी। वहां पहुंचकर देखा कि मेरा होटल बिल्कुल पहाड़ के ऊपर था। ऐसा लगा कि बादलों की दूरी मुझसे कुछ फीट की ही है। पहाड़ों वाली चावल और सब्जी खाकर पेट के साथ-साथ मन भी भर गया। इतनी नींद आई कि रजाई ओढ़कर मैं सो गया। उठा तो देखा कि सूरज ढल गया है और आसमान में चांद खेल उठा है। मैंने तय किया कि उस शाम को मैं अपने बरामदे में गरम चाय के साथ पहाड़ों को देखते हुए बिताऊं। फोन पर धीमा गाना चलाया और पहाड़ों में खो गया। मन को इतना सुकून का एहसास पहले कभी नहीं हुआ था। रात के साथ ठंड भी बढ़ने लगी। रात को मैंने बस वहां की मैगी को जमाकर खाया और सो गया।



थुपका

अगले दिन सुबह दार्जिलिंग के सबसे खास सवारी का मजा लेने का फैसला किया। दार्जिलिंग स्टेशन पहुंचकर देखा कि वहां एक जगह पर खूब भीड़ थी। मैंने लोगों से पूछा तो पता चला कि 'टॉय ट्रेन' के लिए लंबी कतार थी। मैं भी उसी कतार का हिस्सा बन गया। काफी देर तक इंतज़ार करने के बाद जब ट्रेन आई तो उसे देखकर मैं मन ही मन हँसा क्योंकि ट्रेन, ट्रेन नहीं बल्कि कोई खिलौना लग रही थी। मैं जल्द ही ट्रेन पर चढ़ा और खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गया। कुछ देर बाद ट्रेन चलने लगी। बच्चे, बूढ़े सभी ताली बजाने लगे। धीरे-धीरे ट्रेन पहाड़ों से होते हुए बादलों के बीच से आगे बढ़ने लगी। वह नज़ारा बहुत खूबसूरत था। ट्रेन पहाड़ों को छूते हुए, उनके पास से गुजरते हुए, पहाड़ों के रास्तों पर बनी पटरी पर चलती गई। पहाड़ों को चूमते हुए सफेद बादल मानों चांदी के गेंद जैसे लग रहे थे। ट्रेन सीटी मारती हुई गयी और हम सब पहाड़ों के नज़ारों को देखते हुए चले। एक घंटा मानों यूँही कुछ पलों में बीत गया। इसी में दोपहर हो गयी और मुझे भूख लगने लगी। ट्रेन से उतरते ही एक छोटा-सा दुकान आया और मैं वहां गरमागरम थुपका मंगवाया जो मुझे बहुत अच्छा लगा। इसलिए मैंने और एक थुपका पैक करवा कर टहलते हुए होटल लौटा।



घूम स्टेशन के पास टॉय-ट्रेन



अगले दिन सुबह चार बजे का अलार्म लगाया था। अलार्म बजते ही मैं उठ गया और ठंड के कपड़े पहनकर टाईगर हिल की ओर चल पड़ा। कहानियों में पढ़ा था कि वहां से सूर्योदय का नज़ारा कुछ अलग ही होता है। वहां पहुंचकर देखा कि लोग कतारों में हाथ में कैमरा लेकर खड़े थे। मैं भी भीड़ का हिस्सा बन गया। वहां का सूर्योदय इतना खूबसूरत था कि मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। वापस होटल पहुँचा तो सात बज रहे थे।

मैंने जल्द ही नाश्ता किया और गाड़ी बुलाया। बहुत दिनों से इच्छा थी कि लामाहत्ता के घने जंगलों की हरियाली में खो जाऊँ। लामाहत्ता पहुँचा तो देखा कि पार्सिन के लंबे-लंबे पेड़ आकाश को छूते हुए शांत होकर खड़े थे। वहां का माहौल डरावना भी था और बेहद खूबसूरत भी। करीब हज़ार सीढ़ी ऊपर पहुँचा तो देखा चारों ओर एक अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ है। कुछ देर वहां चुपचाप बैठा रहा। आसमान में बादल घिर रहे थे। मेरे साथ-साथ नीचे की तरफ बादल भी आ गए और बारिश शुरू हो गई। मैं पास ही के एक दुकान में दौड़ कर घुसा और दो कप अदरक की चाय की मांग की। पहाड़ और ठंड की चाय जिंदगी मानो खेल सी गई। जब शाम ढली तो वापस होटल पहुँचा। थकान सी लग रही थी परंतु मैं सोचा क्यों न बाहर रास्ते पर कुछ देर टहल लूँ। एक-दो घंटा होटल के पास वाले गांव में टहलते हुए बिताया। गांव से भी सुंदर वहां के लोग थे। एक माताजी ने मुझे बड़े प्यार से अपना घर बुलाया और खिचड़ी खिलाया। मुझे सहसा अपने घर की याद आ गई। दिल थोड़ा बैठ गया। धीरे-धीरे होटल लौट आया। उस दिन थोड़ा जल्दी सोना था क्योंकि अगले दिन घर लौटने वाली ट्रेन थी।



अगले दिन सुबह होते ही मैंने बैग समेटा और निकल पड़ा। दार्जिलिंग में मॉल रोड घूमने के बाद वहां से सीधे मिरिक के नज़ारों का लुप्त उठाते हुए जलपाईगुड़ी जाने की योजना थी। दार्जिलिंग पहुँचते ही वहां के दुकानों से घर के लिए बहुत सारी खरीदारी की। फिर कुछ देर वहां रास्तों का मज़ा लेने के बाद मिरिक की ओर रवाना हुआ। मिरिक लेक के पानी को देख कर मन किया वहां तैरूँ, पर इतनी ठंड में पानी मानो बर्फ सा जम गया था। वहां खूब सारी मैगी और मोमो खाकर स्टेशन की ओर बढ़ा। पहुँचने में रात हो गई। ट्रेन में चढ़ते ही मन दुखी हो गया। परंतु घर जाने की खुशी भी थी। पहाड़ों को अलविदा करते हुए वादा किया कि जल्द ही दोबारा घूमने आऊंगा। अगले दिन हावड़ा सुबह चार बजे पहुँचा तो स्टेशन पर मम्मी-पापा इंतज़ार करते हुए नज़र आए। ख्याल आया कि इस साल की सर्दी की छुट्टियां खत्म हो गई हैं। फिर एक साल का इंतज़ार शुरू हो गया।



आधुनिक विज्ञान और मानव जीवन



श्री प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

आदि मानव वन-गुफाओं में रहते थे, कंद-मूल खाते थे और किसी तरह अपना गुज़ारा करते थे। बाद में उन्होंने पशुओं से अपनी रक्षा करने तथा पशुओं का शिकार करने के लिए संगठित होना सीखा। शिकार किए गए पशुओं का कच्चा मांस खाना तथा ठंड से बचने के लिए पेड़ के पत्ते या जानवरों का छाल पहनना सीखा। उस समय मनुष्य का दिमाग शायद ही इतना विकसित हुआ था कि वह समझ पाता कि अनजाने ही उसने कई चीजों का आविष्कार कर दिया है। समय के क्रम में न जाने कब वह चार पैरों के स्थान पर दो पैरों पर खड़ा होना, हाथों की मदद से पेड़ की डाल, पत्थर इत्यादि पकड़ना, फिर पत्थरों, पेड़ की टहनियों को हथियार के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। इस प्रकार न जाने कितने ही खोज मानव जाति ने अनजाने ही किया। पत्थरों को घिस कर आग निकालना और उस आग को जो जंगल में पशुओं के लिए अभिशाप हुआ करता था, अपने लिए वरदान बना लेना, क्या ये आश्चर्य की बात नहीं है? जिस आग से सभी प्राणी डर से भागा करते थे उसी आग को इस्तेमाल करना सीखा, जिस मांस को कभी वे कच्चा खाते थे, उसको पका कर खाना सीखा।

एक स्थान से दूसरे स्थान तक मानव पैदल जाया करते थे। यात्रा लंबी एवं कष्टदायक होती थी। फिर एकाएक वक्त का पहिया घूमा और मानव को गति मिल गई। उसने पेड़ के तने को लुढ़कते हुए देखा और फिर एक दिन उसके द्वारा चक्के का आविष्कार हुआ। इस प्रकार उनकी धीमी गति को एक रफ्तार मिल गयी। यह एक क्रांतिकारी खोज थी। इन सब चीजों की खोज मानव जाति ने उस समय किया जब कोई सोच ही नहीं सकता था कि ऐसा भी कभी संभव हो पाएगा। आज भी प्रत्येक मशीन में किसी न किसी रूप से चक्के की अहम भूमिका रहती है।



यदि किसी को ये सभी बातें काल्पनिक लगती हैं तो वह अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह में जा कर वहां की जनजातियों को देख सकता है। नार्थ सेन्टिनल द्वीप में आज भी लोग पुरापाषाण युग में जी रहे हैं, उनकी भाषा क्या है, इसकी भी जानकारी नहीं है। ये अपने भोजन के लिए पशुओं एवं मछलियों का शिकार करते हैं। यहां के स्त्री और पुरुष दोनों ही कपड़े नहीं पहनते हैं। बाहरी लोगों को शत्रु मान कर उनको अपने द्वीप में कदम रखने नहीं देते हैं। कोई बाहरी व्यक्ति यदि इनके द्वीप में आ जाए तो उनको तीर एवं भाले से मार डालते हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए टीका उनको नहीं लगाने के कारण उनमें

बीमारियों के फैलने का खतरा है। इसलिए भारत सरकार ने उस द्वीप के चारों ओर 5 समुद्री मील की सीमा में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। इसके बावजूद भी नवंबर 2018 में इंडियन एक्सप्रेस में छपे समाचार के अनुसार जॉन एलन चाऊ नाम के एक 26 वर्षीय अमेरिकी मिशनरी ने ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए कुछ स्थानीय मछुवारों की सहायता से अवैध रूप से नॉर्थ सेंटिनल द्वीप पर गया था। परन्तु वहां की जनजातियों ने उन्हें मार डाला। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि बिना वैज्ञानिक उपकरणों एवं दवाइयों के आदिम अवस्था में मानव कैसे रहते होंगे।

समय के साथ प्रकृति की परतें खुलती गईं और मानव जाति का संसाधनों पर अधिकार होता गया। प्राकृतिक प्रकोप के भय से प्रकृति को पूजने वाले धीरे-धीरे उस पर विजय प्राप्ति की होड़ में लग गए। कष्ट होना, कष्ट का बोध होना, उस कष्ट का निवारण करने पर विचार किया जाना और इसी पद्धति में आगे बढ़ते रहने से ही संभवतः कोई नई खोज होती है। कहा जाता है कि जब कोई काम कठिन परिश्रम वाला हो अथवा किसी काम को करने में बहुत समय लगता हो तो उस काम को एक ऐसे व्यक्ति को सौंप दिया जाए जो आलसी हो। बाध्यतामूलक अवस्था में वह व्यक्ति उस काम को सरलतापूर्वक और कम समय में करने का तरीका खोज निकालता है और इसी तरह से दुनिया में कोई नई तकनीक का आविष्कार होता है।

पहिया, चुंबक और फिर मोटर की खोज ने दूरी को इतना कम कर दिया कि लोग व्यापार, नौकरी, चिकित्सा या फिर किसी अन्य कारणों से कहीं भी जाने से घबराते नहीं हैं। पहले कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि हम एक साथ इतने लोग रसोई, शौचालय से युक्त वातानुकूलित डब्बे में यात्रा कर सकते हैं, एकदम चलते-फिरते एक घर की तरह ही। जल, थल और नभ हर जगह मानव अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुका है। हवा में उड़ान भरना भी एक अद्भुत अनुभव है जो हवाई जहाज तथा हेलिकॉप्टर के आविष्कार के बाद संभव हो सका। आज का मानव विज्ञान की सहायता के बिना एक कदम भी नहीं चल सकता है।



बेतार, रेडियो, टीवी, मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि ने मानव को एक कमरे में सीमित कर दिया। अब आदमी अपने कमरे में बैठ कर संसार के किसी भी कोने में घटित घटनाओं को जीवंत देख और सुन सकते हैं, दुनिया के एक छोर में बैठा आदमी दूसरी छोर में बैठे लोगों से आमने-सामने बात कर सकता है। घर बैठे हम पढ़ाई, व्यापार-वाणिज्य, खरीदारी क्या नहीं कर सकते। ऑनलाइन पैमेंट के माध्यम से कैश चोरी, टैक्स चोरी जैसी समस्या से तो बच रहे हैं लेकिन अब आए दिन एकाउंट से ऑनलाइन चोरी के मामले सामने आ रहे हैं। एक छोटी-सी गलती होने से पूरा एकाउंट खाली हो सकता है। इंटरनेट का जाल ऐसा फैला हुआ है कि अब कुछ भी गुप्त नहीं रहा है। हम हर समय किसी न किसी तरह की निगरानी में हैं। भारत तथा विश्व के अनेक देशों के नागरिक अभी भी उतने शिक्षित नहीं हुए हैं कि इस तरह कि चूक से वे बच सकें। अतः इस दिशा में साइबर सुरक्षा को और भी पुख्ता किया जाना चाहिए।



बेतार, रेडियो, मोबाइल इत्यादि के रेडियेशन ने मानव जीवन को प्रभावित किया ही, इसके कारण कई छोटी पक्षियों का अंत हो गया। कुछ वर्ष पहले हम लोग अपने घरों के छतों पर जिन पक्षियों को देखते थे, आज उनको नहीं देख पाते हैं क्योंकि उनमें से बहुत सारी पक्षियों का शरीर रेडियेशन को सहन नहीं कर पाया और वे मारे गए। इस रेडियेशन के चपेट में सिर्फ छोटे जीव ही नहीं हैं अपितु मनुष्य भी प्रभावित हो रहे हैं।

इंसानों में जीने की इच्छा असीम है। हमने इसी इच्छा शक्ति के बल पर ऐसी दवाएँ खोज लिए हैं कि आज गंभीर रोगों का भी उपचार संभव है। आधुनिक दवाइयाँ और टीके की खोज के पहले इंसानों का जीवन-काल बहुत कम हुआ करता था। रोग प्रतिरोधक क्षमता न होने के कारण कई असाध्य बीमारियों के चपेट में आने से एक बहुत बड़ी आबादी काल के गाल में समा जाती थी। महामारियों के कई दौर से होकर इंसानी सभ्यता गुजरी है। प्लेग, चेचक, पोलियो इत्यादि ने मानव सभ्यता को कितना नुकसान पहुंचाया है इसका अंदाजा नहीं लगाया सकता। टीके की खोज के साथ इन भयंकर बीमारियों का उन्मूलन अभियान चलाया गया और बहुत हद तक मानव कामयाब भी रहा है। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली, दवाइयों और टीके की सहायता से अब महामारियों का भी इलाज आसानी से हो सकता है।

जहरीले सांप, कुत्ता और अन्य जानवरों के द्वारा काटे जाने पर से लोगों को बचाने के लिए तंत्र-मंत्र और जादू-टोना का सहारा लिया जाता था और परिणाम होता था मृत्यु। लेकिन इन विषाक्त जानवरों के काटने के बाद यदि समय पर इलाज हो जाए तो मृत्यु से भी बचा जा सकता है। वर्तमान समय में डॉक्टर को धरती पर जीवित भगवान का दर्जा प्राप्त हो चुका है। चिकित्सा प्रणाली इतनी विकसित हो गयी है कि मानसिक रूप से मृत किसी व्यक्ति का कोई अंग किसी जरूरतमंद व्यक्ति के शरीर में प्रतिस्थापन कर उसको एक नया जीवन दिया जा सकता है। विज्ञान ने तो यह भी संभव कर दिया है कि इंसान अब अपने जरूरत के अनुसार अपने बच्चे का डिजाइन भी कर सकता है, बच्चे में क्या गुण होना चाहिए, उसकी शक्ल कैसी हो, उसके शरीर का रंग कैसा हो, उसकी आंखें कैसी हो इत्यादि।

ऐसा नहीं है कि विज्ञान ने मानव जाति को सिर्फ वरदान ही दिया है, अपने उप-उत्पाद के रूप में इसने दुनियां को कचरा भी दिया है और इसके परिणामस्वरूप नित-नवीन रोग सामने आते जा रहे हैं। हाल ही में हमने कोरोना महामारी का प्रकोप झेला है, लेकिन उससे बचने का उपाय भी विज्ञान ने ही दिया। उस उपाय रूपी टीके के साथ ही कई साइड इफेक्ट्स को हमने अपने शरीर में डाल लिया है।

सन् 1770 के बंगाल के अकाल से लगभग सभी परिचित हैं। बारिश की अनिश्चितता के कारण पर्याप्त मात्रा में फसल न होने तथा अन्न का स्थानान्तरण किसी दूसरे क्षेत्र में होने से बंगाल में सन् 1770 में भयंकर अकाल पड़ा था। खाद्यान्न की कमी के कारण हजारों लोग भूखमरी का शिकार हुए। इस प्रकार की स्थिति का सामना करने के लिए उत्पादन को बढ़ावा देना आवश्यक था। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप कृषि के क्षेत्र में क्रांति आई, उत्पादन को बढ़ा कर हमने अकाल पर विजय प्राप्त किया। हाइब्रिड बीज, यूरिया, पोटाश, रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों का प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ावा

दिया गया। इसके साथ ही जैव उर्वरक के तौर पर खेतों की मिट्टी और जल में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवों का संहार कर दिया गया जिससे हमारी मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो गई। कृषि भूमि से छोटी मछलियां, घोंघा, केंकेड़ा, केचुआ जैसे छोटे जंतुओं का अंत हो गया। पहले बैल एवं भैंस की सहायता से खेतों की जुताई होती थी। जुताई के समय अपने गोबर द्वारा ये पशु खेतों को उर्वर बनाने में योगदान देते थे, साथ ही खेतों में जन्में अनावश्यक खर-पतवार, घासों को खाकर खाद्यान्न फसलों की वृद्धि को भी आसान करते थे। ट्रैक्टर के आविष्कार से खेत इन चीजों से वंचित हो गए।

प्रोसेस्ड फूड के रूप में पके-पकाए भोजन के भंडारण की एक नई तकनीक इज़ाद हुई। श्वेत क्रांति के साथ दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा मिला। पाश्चरीकरण कर के दूध को कई दिनों तक रखा जा सकता है। खाद्य प्रसंस्करण कर के हमने खाद्य पदार्थों को संचय करना सीखा। इससे एक तो भोजन को नष्ट होने से बचाया जा रहा है तो वहीं दूसरी ओर खाद्यान्न की मांग वाले क्षेत्रों में आसानी से बिना नष्ट हुए इसे पहुंचाया जा रहा है।

प्रोसेस्ड फूड में नमक, संतृप्त वसा तथा चीनी की उच्च मात्रा रहती है। इस प्रकार के प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के खाने के साथ कई गंभीर बीमारियां प्रकट हुईं। अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड, फास्ट फूड आदि खाने से ब्लड शुगर, मोटापा के साथ-साथ कॉलेस्ट्रॉल का लेवल भी बढ़ता है और इससे हृदय संबंधी रोगों का भी खतरा हो जाता है। इसलिए मरीजों को इसे खाने से बचना चाहिए।



हाइब्रिड बीज से कृषि उत्पादन को बढ़ावा तो मिला लेकिन इसके सेवन से शरीर कई पोषक तत्वों से वंचित रह जाता है। इसलिए आज फिर से देशी खाद्य पदार्थों की ओर लोग बढ़ रहे हैं जो जैविक खेती द्वारा उगाए जाते हैं। वेज हो या फिर नॉन वेज हर जगह हाइब्रिड छाया हुआ है।

शारीरिक परिश्रम को कम करने के लिए वैज्ञानिकों ने दुनिया को नई तकनीकों से संपन्न कर दिया। ऊंची-ऊंची इमारतों की सीढ़ी पर चढ़ना कठिन कार्य था जिसे लिफ्ट, एस्केलेटर आदि की सहायता से आसान बनाया गया। लिफ्ट पर सवार होकर बटन दबाते ही बिना एक बूंद पसीना निकाले ही कुछ ही मिनटों में बहुमंजिली इमारत के सबसे ऊंचे तल पर पहुंच जाते हैं। कहीं-कहीं जीवन को इतना आरामदायक बना दिया गया है कि शरीर और मस्तिष्क दोनों ही स्थूल हो गए हैं। मोटापा बढ़ रहा है जो कई बीमारियों का घर है।

विज्ञान के चकाचौंध में हम इतने डूब गए हैं कि अब कुछ भी कर पाना हमारे लिए असंभव नहीं रहा है। सड़क, इमारत, सुरंग, ब्रिज इत्यादि के निर्माण के लिए प्रकृति को झकझोर डाला। पहाड़ों को काट कर रास्ता बनाने के लिए, सुरंगपथ के निर्माण हेतु पत्थरों, बड़े-बड़े चट्टानों को तोड़ने-फोड़ने के लिए डायनेमाइट का अंधाधूंध प्रयोग किया जा रहा है। वृक्षों की कटाई की जा रही है। वनाच्छादित क्षेत्रों से खनिजों



को निकालने के लिए वनों को उजाड़ा जा रहा है। परिणामस्वरूप मौसम में परिवर्तन, समय पर वर्षा न होना, भारी बरिश से बाढ़ की स्थिति, पहाड़ों में लैंडस्लाइड इत्यादि घटनाएं घटित हो रही हैं।

विकास कार्यों में डाइनेमाइट की भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन जब इसका इस्तेमाल युद्ध में किया जाता है तो इसका विनाशक रूप भयंकर होता है। द्वितीय विश्व युद्ध में हुए परमाणु बम के प्रयोग को दुनिया भूली नहीं है। कदाचित् डाइनेमाइट के आविष्कारक अल्फ्रेड नोबेल को भी इसके दुष्प्रभाव का ज्ञान हो गया था। अंतरिक्ष में सैटेलाइट की स्थापना हेतु रॉकेट भेजकर, अगणित मिसाइलों का परीक्षण कर, चंद्रमा की मिट्टी का परीक्षण करने तथा मंगल ग्रह पर जीवन का पता लगाने के लिए जो रॉकेट अंतरिक्ष में भेजे गए उससे धरती का छाता कहे जाने वाले ओजोन परत को काफी नुकसान पहुंचा है जिसका नकरात्मक प्रभाव सभी जीवधारियों पर पड़ रहा है।



जल-जंगल और जमीन के विनाश को हम विकास समझ बैठे हैं। हरे-भरे पेड़-पौधे, जंगल-झाड़, नदी, नहर, तालाबों, झील, खेत-खलिहान आदि को जंगली होने का प्रतीक तथा इसका विनाश कर इसके स्थान पर अट्टालिकाओं का निर्माण करना, सड़कों को सर्वत्र पक्का कर देना, जलाशयों को भरकर उसके स्थान पर इमारत, कल-कारखाना आदि का निर्माण करना, भूमिगत जल का दोहन करना, नदियों, नहरों, तालाबों, झीलों में प्रदूषित जल और कचरे बहा कर सभ्य होने का चश्मा पहने रहना और यह दावा करना कि वैज्ञानिक युग में सब कुछ विज्ञान द्वारा नियंत्रित होगा, यह दिवा स्वप्न मात्र है। हैंडपंप, सबमर्सिबल पंप आदि का उपयोग कर भूमिगत जल का अनियंत्रित दोहन कर जीवनदायिनी नदियों की उपेक्षा की गई और कालांतर में उन्हें नाली में परिवर्तित कर दिया गया है। हमने धरती के अंदर छिपे अनमोल खजानों को बाहर निकाला, उसका भरपूर इस्तेमाल किया और उसके बचे हुए अवशेषों को धरती पर यहां-वहां बिखेर दिया और फिर इस हरी-भरी दुनिया को, जो जीवों के लिए वरदान है, उनके लिए ही अभिशाप में तब्दील कर दिया।



औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादन तथा मुनाफा को बढ़ाने के लिए, उत्पादन मूलक कार्यों का मानव श्रम पर निर्भरता को कम करने के लिए नए-नए रोबोट बनाए जा रहे हैं। इन रोबोट का उपयोग रक्षा, चिकित्सा आदि विभिन्न कार्यों पर किया जा रहा है। इस प्रकार देखा जाए तो वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता के बिना इंसान एक पल भी नहीं रह सकता, एक कदम भी नहीं चल सकता। यदि ये सही से काम करे तो सब ठीक है, अन्यथा इसकी एक गलती का परिणाम बहुत भयानक हो सकता है। विज्ञान पर मानव जाति की निर्भरता इतनी बढ़ती जा रही है कि यदि वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग मानव कल्याण हेतु विवेकपूर्ण तरीके से नहीं किया गया तो वो दौर दूर नहीं जब इंसानों पर विज्ञान की हुकूमत चलेगी।



पत्नी की अहमियत



श्री सत्येंद्र कुमार आशुतिषिक

अगर पत्नी है तो दुनिया में सब कुछ है। राजा की तरह जिंदगी जीना और दुनिया में अपना सिर ऊँचा रखने के लिए अपनी पत्नी का शुक्रिया कीजिये। आपके हर सुख-सुविधा का ख्याल रखना, बिना किसी कारण आपके गुस्से और नखरे को झेलना, आपके सुख से सुखी और आपके दुख से दुखी, ऐसी है पत्नी। आप जब रविवार को देर से बिस्तर से उठते हैं और चाय लाओ, पानी लाओ, खाना लाओ, इसकी गुहार लगाते हैं, उसे पूरा करती है पत्नी। ये ऐसा है और वो वैसा है, कब अक्ल आएगी तुम्हें- उसे ऐसे ताने मारे जाते हैं कि उसकी कोई इज्जत ही नहीं है। लेकिन इनका न कोई रविवार है और न कोई त्यौहार है। उसी के कारण तो आप जीवित हो। वरना दुनिया में कोई भी आपको पूछने वाला नहीं है। वह अपनी पूरी निष्ठा के साथ आपके सारे परिवार का ध्यान रखती है।



अब जरा इस स्थिति की सिर्फ कल्पना करें कि एक दिन पत्नी अचानक रात को गुजर जाती है। घर से रोने की आवाज़ आ रही है, उनके अंतिम दर्शन के लिए सब आ-जा रहे हैं। तभी उसी वक्त पत्नी की आत्मा जाते-जाते अपने पति से जो कह रही है, उसका वर्णन इस प्रकार से है-

“मैं अब जा रही हूँ। अब फिर कभी नहीं मिलेंगे। जिस दिन शादी के फेरे लिए थे, उस वक्त एक साथ-साथ जीने का वचन दिया था। पर अचानक अकेले ही मुझे जाना पड़ेगा, ये मुझको पता नहीं था। मुझे जाने दो। आपके आँगन में अपना शरीर छोड़कर जा रही हूँ। बहुत दर्द हो रहा है मुझे, मैं मजबूर हूँ, मेरा मन नहीं मान रहा। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं अब इस दुनिया में नहीं हूँ। पर मैं अब करूँ तो क्या करूँ, मुझे जाना होगा। मुझे जाने दो, मुझे जाने दो।

बेटा और बहू रो रहे हैं। उनको दिलासा भी नहीं दे सकती। उन्हें शांत करो और आप भी मन को मजबूत रखना। अभी बेटी ससुराल से आएगी और मेरा मृत शरीर देखकर बहुत रोएगी। तब उसे संभालना और शांत करना। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। धीरे-धीरे मुझे भूल जाना, मुझे बहुत याद नहीं करना और मेरे बिना जीवन जीने की आदत जल्दी ही डाल लेना। आपको बी०पी० और

डायबिटीज़ है, गलती से भी मीठा नहीं खाना वरना परेशानी होगी। सुबह उठते ही दवा जरूर ले लेना। भूलने की आदत है आपको।

चाय अगर आपको देर से मिलती है तो बहू पर गुस्सा मत करना। बेटा और बहू कुछ बोलें तो चुपचाप सब सुन लेना। हमेशा मुस्कुराते रहना। अपने पोते और पोतियों के साथ खेलना, उन्हें ढेर सारी कहानियाँ सुनाना। उन्हें अपनी जान से भी ज्यादा संभाल कर रखना। परिवार की जिम्मेदारियों के कारण कभी भी दोस्तों के साथ समय नहीं बिता पाये। लेकिन अब अपने दोस्तों के साथ थोड़ा समय बिताना। अगर मेरी याद आए तो चुपचाप से अकेले में रो लेना लेकिन कभी कमज़ोर नहीं पड़ना।

मेरा रूमाल कहाँ है, मेरी चाभी कहाँ है, अब ये सारी बातें किसी से मत पूछना। अब सब कुछ खुद से लेने की आदत डाल लेना। रात को सिरहाने पानी का लोटा लेकर सोना क्योंकि अक्सर आपको आधी रात को पानी की जरूरत पड़ती है। रात में कभी-कभी ठंड बढ़ जाती है, कंबल लेना मत भूलना।

शादी के बाद हम बहुत प्यार से रहे। मुझे आज भी वो दिन याद है जब मेरा रिश्ता आपके यहाँ आया था और आपने यह जानकर कि मेरी माँ नहीं है, तुरंत आपने इस रिश्ते के लिए हाँ कर दी थी। एक बिन माँ की बेटा को आपने और आपके परिवार ने अपनाया। मैं उसे इस जन्म में तो क्या अगले सात जन्मों तक भी नहीं भूल सकती। जिस माँ के प्यार और दुलार के लिए मैं हमेशा तरसती रही, वो प्यार और दुलार मुझे हमेशा आपकी माँ से मिला। उन्होंने हमेशा मुझे अपनी बेटा की तरह ही रखा। वो मेरी सास हैं, इसका एहसास कभी मुझे होने ही नहीं दिया।

बहुत कम किस्मत वालों को ऐसा परिवार मिलता है। पर अब मैं जा रही हूँ लेकिन मुझे अगले हर जन्म में आप ही पति के रूप में और यही परिवार चाहिए। मेरी हर गलती को आपने माफ किया। कई बार बहस भी हुई पर उसका हमारे रिश्ते पर कभी कोई फर्क नहीं पड़ा। आपके साथ और आशीर्वाद से ही मैंने अपने परिवार को फूलों की तरह संभाल कर रखा। अब उस फूल की सुगंध मुझे नहीं मिलेगी। सभी की जरूरतों को पूरा करने में मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी। पर उन्हीं अपनों को मेरे मृत शरीर को देखकर रोते हुये देखना मुझे अच्छा नहीं लग रहा। जिस घर को मैंने अपने स्नेह और प्रेम के साथ संजोकर रखा, वो घर अब छूट रहा है। मैं बहुत दुखी हूँ। काश भगवान ने मुझे कुछ पल जिंदगी के और दिये होते ताकि मैं अपने पोते और पोतियों के साथ कुछ पल और बिता पाती। पर शायद किस्मत में मेरी इतनी ही जिंदगी लिखी हुई थी। अब मुझे जाना होगा, मुझे जाने दो, मुझे जाने दो।



बस एक बात मैंने आपसे छिपाई है। मुझे माफ़ कर देना। आपको बिना बताए पोस्ट-ऑफिस में बचत खाता खुलवाकर 14 लाख रुपये जमा किए हैं। मेरी दादी ने मुझे यह सिखाया था। इसमें से पाँच लाख बेटे-बहू को, पाँच लाख बेटी को देना और बाकी के बचे चार लाख अपने खाते में जमा करवा लेना। आप बीमार रहते हैं, कभी भी आपको पैसे की जरूरत पड़ सकती है। भगवान की भक्ति और पूजा करना कभी भूलना नहीं। अब फिर कभी मुलाकात नहीं होगी। बस अपनी सेहत के साथ-साथ अपने पूरे परिवार का ध्यान रखना। अब मैं नहीं हूँ, अब आपको ही सबकुछ देखना है। मुझसे कोई भी गलती हुई हो तो मुझे माफ़ कर देना। मुझे जाने दो, मुझे जाने दो।”



अक्सर हमारी निजी जिंदगी में ऐसा देखा जाता है कि जब तक पत्नी जीवित रहती है, हमेशा हमारे साथ परछाई की तरह रहती है, हमारी मुश्किल से मुश्किल घड़ी में हमें हिम्मत देती है, परिवार का ढाल बनकर हमेशा खड़ी रहती है, हम उसकी इन सारी खूबियों की कोई कदर नहीं करते। सोचते हैं कि ये तो उसी का काम है, उसकी ही ज़िम्मेदारी है। हम अक्सर यह भूल जाते हैं कि वह एक पत्नी के साथ-साथ माँ और बहू का भी फर्ज़ निभाती है। वो बिना अपनी खुशियों की चिंता किए बगैर परिवार के हर सदस्य को खुश रखती है। सबको खाना खिलाकर अंत में ही वह खाती है। सबके सोने के बाद सोती है। बीमार होने पर भी बच्चों को स्कूल भेजना, पति को दफ्तर के लिए उसका टिफिन, उसके कपड़े तैयार करके देना, बूढ़े माँ-बाप की सेवा करना जैसी कई ज़िम्मेदारियों को वह हर दिन बिना किसी शिकायत के निभाती है क्योंकि उसे अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास है। अब इस पर आत्म-मंथन करने की जरूरत है कि वाकई में उन्हें जो औधा और इज्जत परिवार में मिलना चाहिए, क्या उनको मिल रहा है। क्या यह हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम उनके इस काम में अपना भी हाथ बंटाए, उनकी मदद करें।



फैरीटेल



श्री अर्णब पॉल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



आज से कई साल पहले की बात है, तब राजाओं का राज्य चल रहा था। उस समय 'बरनबेरिया' नादिया जिले का एक गाँव था। उस गाँव के राजा का नाम गोपालचन्द्र था। वे अपनी रानी के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे थे। राजा के दो बेटे और एक बेटी थी। बड़े बेटे का नाम दीपकचंद्र, छोटे बेटे का नाम अंबरचंद्र और बेटी का नाम प्रियंवदा था।

राजा बहुत ईमानदार व्यक्ति और अच्छे शासक थे। वे बहुत परोपकारी थे और अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करते थे। राज्य में किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी। राजा के पास शस्य का अथाह भंडार था, हाथीशाला

में हाथी थे, घोड़ेशाला में घोड़े थे। राज्य में प्रजा सुखपूर्वक दिन व्यतीत कर रही थी। प्रजागण भी राजा से बहुत प्यार करते थे। वे राजकुमार व राजकुमारी से भी बहुत प्रेम करते थे। इस प्रकार राजा और राज्यवासियों के दिन अच्छे से बीत रहे थे। लेकिन ये अच्छे दिन ज्यादा दिनों तक नहीं टिके। राज्य में कभी-कभी कुछ बुरी बातें या घटनाएँ घटने लगीं। कभी मवेशी गायब हो जाते, कभी राज्य से फसलें चोरी हो जातीं तो कभी बच्चे या बुजुर्ग अचानक गायब हो जाते थे। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि अचानक उनके राज्य में ये सब क्यों हो रहा है।



काफ़ी खोजबीन करने पर ग्रामीणों को गाँव के अंतिम छोर पर जंगल में साधना करते हुये एक साधु मिला। कुछ दिनों तक ध्यान से देखने के बाद गाँव वालों ने देखा कि वो तांत्रिक काला जादू कर रहा है और उस तांत्रिक के साथ कुछ दुष्ट ग्रामीण लोग भी मिले हुये थे। गाँव वालों को एहसास हुआ कि तांत्रिक और वे दुष्ट लोग अपने काले जादू से उनके राज्य में ये बुरी घटनाएँ घटा रहे थे। जब यह खबर राजा तक पहुँची तो राजा बहुत क्रोधित हुये। उन्होंने मंत्री और सेनापति को स्थिति का निरीक्षण करने के

लिए भेजा। मंत्री और सेनापति की बात सुनकर राजा ने अपनी सेना वहाँ भेजी और तांत्रिक को राज्य से बाहर निकाल दिया। राजा ने तांत्रिक का साथ देने वाले दुष्ट ग्रामीणों को कैद में डाल दिया। फिर धीरे-धीरे राज्य पुनः अपनी पूर्व स्थिति में लौटने लगा। राज्य में कोई अप्रिय घटना घटनी बंद हो गई।

कुछ साल बाद फिर से एक घटना घटी। राजमहल में जो खानसामा था, उसकी अचानक मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप राजा ने अपने राज्य में राजमहल के लिए एक रसोइये हेतु विज्ञापन दिया। बहुत से लोग आने वाले दिनों में राजमहल में इस उम्मीद से आए कि उन्हें रसोइये का काम मिल जाये और साथ ही ढेर सारी तनख्वा भी मिले। फिर इम्तिहान की घड़ी आयी। राजमहल में रसोइये के काम के लिए आए सभी लोगों ने अपना-अपना खाना बनाया और राजा को परोसा।



इन सबके बीच राजा को नंदठाकुर का खाना सबसे ज्यादा पसंद आया और उन्होंने नंदठाकुर को नियुक्त किया। धीरे-धीरे यह व्यक्ति राजमहल में सबका चहेता बन गया। राजा, रानी, राजकुमार, राजकुमारी, सेनापति, मंत्री, सैनिक और शाही परिवार के अन्य सभी सदस्य नंदठाकुर के भोजन की बहुत सराहना करने लगे।

अचानक एक दिन बड़े राजकुमार दीपकचंद्र बहुत बीमार हो गए। उन्हें पेट में तेज दर्द और बुखार था। वैद कविराज और अन्य डॉक्टर राजकुमार का इलाज नहीं कर सके। दीपकचंद्र की शारीरिक स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गई। फिर एक दिन अचानक प्रियंवदा भी बीमार पड़ गई। कविराज, वैद प्रियंवदा के शरीर में कोई सुधार नहीं कर सके। एकमात्र स्वस्थ व्यक्ति छोटा राजकुमार अंबरचंद्र था। राजकुमार और राजकुमारी की खराब सेहत से राजा, रानी से लेकर शाही परिवार के सभी सदस्य सदमे में थे। वे समझ नहीं पा रहे थे कि राजकुमार और राजकुमारी को कैसे ठीक किया जाये। रानी ने तो खाना ही बंद कर दिया था और राजा की तबीयत चिंता से खराब होने लगी थी। राजकुमार अंबरचंद्र बहुत बुद्धिमान व्यक्ति थे। एक दिन उन्होंने अच्छी तरह से देखा कि उसके दादा और बहन के बीमार होने से परिवार एवं शाही परिवार के सभी सदस्य दुखी थे। परंतु नंदठाकुर के चेहरे पर चिंता और व्यथा की कोई झलक तक नहीं दिखाई दे रही थी। इससे अंबरचंद्र को नंदठाकुर पर कुछ संदेह हो गया। एक दिन दोपहर में राजकुमार अंबरचंद्र चुपचाप अपने राज्य के एक संत के पास गए और सारी बात सुनाई। संत ने जब सब सुना तो उनकी भौहें चढ़ गईं और उन्होंने राजकुमार से कहा कि, “लगता है तुम्हारे घर में काले जादू का साया है।” संत ने राजकुमार अंबरचंद्र को एक घट पानी दिया और बोला कि वो नंदठाकुर द्वारा बनाए गए सभी भोजन पर पानी छिड़क दें और सभी को यह भोजन करा दें। संत की

सलाह के अनुसार राजकुमार घर गए और नंदठाकुर द्वारा बनाए गए सभी भोजन पर पानी छिड़क दिया और नंदठाकुर को करीब से देखा।

धीरे-धीरे शाही परिवार के सभी लोग थोड़ा-थोड़ा ठीक होने लगे। एक रात जब सब लोग सो रहे थे, राजकुमार अंबरचंद्र धीरे से नंदठाकुर के कमरे के पास गए और खिड़की से अंदर झाँककर देखा। उन्होंने देखा कि नंदठाकुर वास्तव में एक तांत्रिक थे और अपनी साधना में व्यस्त थे और नंदठाकुर के सामने कई नर खोपड़ी रखे हुये थे। अगले दिन राजकुमार अंबरचंद्र फिर से संत के पास गए और उनसे महल चलने का अनुरोध किया। संत ने अंबरचंद्र की बात मान ली और राजमहल में एक पूजा करने की व्यवस्था करने लगे। राजकुमार अंबरचंद्र ने राजा, रानी, मंत्री और सेनापति को सारी बात समझायी। किसी को बताए बिना एक दिन महल में एक गुप्त स्थान पर पूजा की व्यवस्था की गई। उस पूजा स्थल पर केवल राजा, रानी और राजकुमार अंबरचंद्र उपस्थित थे। पूजा समाप्त होने पर संत, राजा,



रानी, राजकुमार, सेनापति और मंत्री नंदठाकुर के घर पर अचानक से पहुँच गए। उस समय नंदठाकुर घर में मौजूद नहीं थे। नंदठाकुर के घर पर पवित्र जल छिड़क कर घर को पवित्र किया गया। तभी राजा, राजकुमार और बाकी सभी लोग रसोई में गए और देखा कि नंदठाकुर भोजन में कुछ मिला रहे थे। सभी को देखकर नंदठाकुर को यह एहसास हो गया कि वे पकड़े गए हैं और अब कोई चाल काम नहीं करेगी। नंदठाकुर को पेड़ से बांध दिया गया और बुरी तरह से पीटा गया। फिर नंदठाकुर से यह कबूल किया कि जिस तांत्रिक को कई साल पहले राजा ने राज्य से निकाल दिया था, वही राजा को नुकसान पहुंचाने के लिए नंदठाकुर की आड़ में महल में आया था। तब राजा को उस दुष्ट कापालिक की याद आई। राजा ने क्रोधित होकर नंदठाकुर को मृत्यु पर्यन्त कारावास की सजा सुनाई। दूसरी ओर राजकुमार दीपकचंद्र और राजकुमारी प्रियंवदा को अच्छे स्वास्थ्य में देखकर राजा और रानी बहुत खुश हुये। उसके बाद राज्य धीरे-धीरे फिर से पुनः व्यवस्थित हो गया। राजमहल और राज्य में खुशी का माहौल फिर से लौट आया।



बांग्ला लोकसंगीत एवं लोक संस्कृति



श्री अमित कुमार घोष
लेखापरीक्षक

बांग्ला लोक साहित्य, बांग्ला संस्कृति, परंपरा और बंगाली पहचान से भरपूर है। लोक साहित्य विभिन्न लोगों के अपने-अपने सांसारिक रीति-रिवाजों, उनके दैनिक जीवन के सुख-दुख, उनकी अपनी भावनाओं, विचारों और चेतना को मिलाकर बनता है।

लोक संस्कृति की सबसे विविध/विचित्र शाखा है लोकसंगीत या लोक गीत। कितने शब्द, कितने गीत इस देश के लोगों की आवाज में गीत बनके गूंजते हैं। ये लोकगीत, धरती और जन-जन की बात करते हैं। मानव श्रम की फसल की बात करते हैं। यहाँ के लोकसंगीत में ग्रामीण बंगाल के लोगों के जीवन, सुख-दुख का पता चलता है।

बांग्ला लोक संगीत की सांस्कृतिक श्रेणीकरण 20वीं सदी की शुरुआत में हुई। इस संगीत के कई भाग हैं, जो कि आंचलिक संस्कृति पर प्रकाश डालता है। जन जीवन को प्रभावित करने वाले इन गीतों में भाटियाली, सारि गीत, जारि गीत, भावइया, पल्लीगीति, वर्षा गीत आदि प्रमुख हैं।

भाटियाली: इसकी रचना सामान्यतः माझी/मल्लार द्वारा की जाती है। भाटियाली आमतौर पर पूर्वी बंगाल के माझी/मल्लारों का गीत है। यह गीत नदी में भाटा के दौरान पानी में तैरते हुए गाया जाता है, इसलिए इसका नाम भाटियाली पड़ा। "माझी बहिया जाओ रे" ऐसे ही एक गीत का उदाहरण है।



सारिगन: इस गीत का विषय मूल रूप से पौराणिक देवी-देवता या सांसारिक/जागतिक नायक और नायिका संबन्धित है। इस गीत को "श्रम संगीत" के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि सारिगीत विशेष रूप से मजदूरों और कामकाजी वर्ग के बीच लोकप्रिय है। ये गीत कथात्मक होते हैं। आमतौर पर नावों के मांझी इस गीत को एक-जुट होकर गाते हैं इसलिए इसे पंक्ति गीत भी कहा जाता है। "ना ओ छड़िया दे, पल उराया दे" इस प्रकार के गीत का एक उदाहरण है।

झुमुर: पुरलिया, बांकुरा के अलावा छोटा नागपुर में विभिन्न प्रकार के झुमुर गीत हैं। इन गीतों की विषयवस्तु कभी पौराणिक तो कभी सांसारिक होती है। पुरलिया जिले का एक झुमुर गीत "शाल तल्ले बेला डुबिल" है।





भावइया: मूलत इस प्रकार का गाना पश्चिम बांग्ला के उत्तरी बंगाल में सुने में मिलता है। इस प्रकार के गीत के गायक को "बाउदिया" या "बिबागी" कहा जाता है। चूँकि यहाँ नदियों की संख्या कम है, इसलिए गाय और भैंस गाड़ियों का उपयोग परिवहन के साधन के रूप में किया जाता है। गाड़ी में यात्रियों को बिठाते समय गाड़ीवान भाई गाते हैं "ओ की गढ़ियाल भाई रे"। गाड़ीवान भाई द्वारा गाए जाने वाले इस गीत को भावइया कहा जाता है। यह गीत कूच बिहार और असम के गोयाल पारा क्षेत्र में भी गाया जाता है।

जारी गीत: जारी गीत शोक का गीत है, शोक के लिए इस गीत में कार्बाला की कहानी बताई जाती है। यह गाना आमतौर पर मुहर्रम के दौरान गाया जाता है। इस गीत के साथ ढाक, खोल, दोतारा बजाया जाता है। ".....कंदिया बेचैन था करबला मैदान रे।



बाउल गीत: बंगाली लोक गीतों की सबसे समृद्ध शैलियाँ बाउल, फकीरी, मारफती, मुर्शिदा हैं। ये सभी साम्प्रदायिकता के विभाजन से रहित समाज की बात करते हैं। बाउल मूल रूप से बंगाल के गेरुआ बसंधरी गांव में हाथ में एकतारा लेकर गीत गाते हैं। बाउल संतों का एक समुदाय है, वे संगीत के माध्यम से भगवान की पूजा करते हैं। लालन फकीर बाउल गीत के प्रतिपादकों में से एक थे। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ने बाउल शैली से प्रभावित होकर अनेक गीत लिखे। गोष्ठगोपाल दास, पूर्ण दास बाउल इस समुदाय के प्रसिद्ध कलाकार हैं।

वर्षा का गीत: हमारे देश में चैत्र बैशाख के महीने में तेज धूप में खेत और घाट सूख जाते हैं और आकाश में बादल का नामोनिशान नहीं रहता। फिर किसान आसमान की ओर देखते हैं और भगवान से पानी की एक बूंद के लिए प्रार्थना करते हैं, इस प्रकार के गीत को वर्षा गीत कहा जाता है। "अल्लाह मेघ दे पानी दे अल्लाह मेघ दे" इस गीत का एक उदाहरण है।



कबिगान: कबिगान बांग्ला लोक संगीत की एक बहुत ही महत्वपूर्ण शैली है। इस शैली में लोककवि प्रतिस्पर्धी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहाँ गायक को कवि होना पड़ता है। वह मौखिक रूप से छंद बनाते हैं और मौके पर ही धुन तैयार करते हैं। कबिगान कलाकारों को "कबियाल" कहा जाता है।

कबिगान मुख्य रूप से कई समूहों के बीच होते हैं। यह एक तरह की प्रतियोगिता है। यहाँ एक समूह प्रश्न गीत गाएगा तथा एक समूह उस गीत का उत्तर में गीत गाएगा। जो टीम अंत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती है वह जीतती है। इस परंपरा के भोला मोइरा एक प्रसिद्ध कवि थे।

गीतों की भूमि बंगाल में इस प्रकार के गीत बहुत दिनों से लोकप्रिय हैं। यह बंगाल की समृद्ध परंपरा का वाहक है।



मेरी पहली पोस्टिंग



श्रीमती प्रिया स्राव
कनिष्ठ अनुवादक

आज भी याद है मुझे वो शाम जब मेरी पहली नौकरी की खबर आयी थी। पूरे घर में खुशी का माहौल था। सभी के आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे। फिर मुझे मालूम हुआ कि मेरी पहली पोस्टिंग मेघों के घर मेघालय में हुई है।

मेघालय जिस राज्य का नाम मैंने सिर्फ किताबों में पढ़ा था, मैं उस राज्य और वहां के लोगों से पूरी तरह से अनभिज्ञ थी। मैंने लोगों और इंटरनेट के जरिए उस राज्य के बारे में जानकारी जुटायी। मुझे पता चला है कि भारत के उत्तर-पूर्व में बसा यह राज्य पहाड़ों और बादलों से घिरा हुआ है। लेकिन वहां के लोगों का रहन-सहन, वेश-भूषा और भाषा हमारे यहां से बिल्कुल भिन्न थी। यह मेरे और मेरे परिवार के लिए चिंता का विषय था। चाहे जो भी बाधा आये नौकरी तो करनी ही थी। फिर क्या था, मैं और मेरी मां निकल गये मेरी मंजिल की ओर थोड़ी से घबराहट और ढेर सारी खुशियों को अपनी बैग में बांधे। पर मुझे क्या पता था कि इस सफर की खुशी थोड़ी ही देर तक थी।

उस वक्त कोरोना महामारी से पूरा भारत जूझ रहा था। सफर के बीच में हमें पता चला कि अगले दिन से पूरे मेघालय राज्य में लॉकडाउन होने वाला है। घबराहट की वजह से मेरे चेहरे की रंगत ही बदल गयी। फिर मैंने खुद को संभाला और मदद के लिए फोन लगाया। मदद पाकर मेरी सांस में सांस आयी। असम से मेघालय का सफर हमने जब किया, वहां की ठंडी हवा मेरे रोम-रोम को पुलकित कर रही थी।

पहाड़ों पर रास्ते और पहाड़ों के ऊपर छोटे-छोटे घर देखकर मैं बहुत खुश हुयी। शिलांग पहुंचने के बाद हमारी पहली परेशानी खाने को लेकर हुयी। वहां का खाना हमारे खाने से बिल्कुल अलग था। उसी शाम एक फोन आया जो हमारी परेशानी को और भी बढ़ा गया। मैं और मेरी मां कोरोना पॉजिटिव हो गये। हमें लेने होटल के बाहर एम्बुलेंस आयी। मैं अपने जीवन में पहली बार एम्बुलेंस में बैठी। रात का समय और अनजान शहर, सुनसान रास्ते हमारी दिलों की धड़कन को बढ़ा रहे थे। हमें वहां एक अस्पताल में दस दिनों के लिए क्वारंटीन कर दिया गया। हम किसी परिचित से सम्पर्क भी नहीं कर पा रहे थे। उस रात हम सो भी नहीं पाये। अगली सुबह वहां के लोगों ने हमें अच्छा महसूस कराया।

दो दिन गुजरने के बाद हमें किसी दूसरे जगह ले जाया गया। वह कोई होस्टल जैसा प्रतीत हो रहा था। वहां के आस-पास का दृश्य मनोरम था। वहां एक कमरे में मेरी मां और मुझे ठहराया गया। हम घंटों बालकनी में बैठकर बाहर की ओर देखते रहते थे। दस दिनों के बाद हमें फिटनेस प्रमाणपत्र देकर वहां से छोड़ा गया।

ऑफिस के सहकर्मियों की मदद से हमें वहां के सरकारी क्वार्टर में रहने की अनुमति मिल गयी। पहली बार क्वार्टर के कैम्पस के खालीपन को देखकर हमें डर लगा। क्वार्टर की हालत भी अच्छी नहीं थी। फिर भी वह अनजान शहर में हमारा पहला आशियाना था। कोरोना का दौर चल रहा था। बाजार बंद थे, हमारे पास न तो सोने के लिए पलंग थे, न ही खाना बनाने की बर्तन और चूल्हा। ऑफिस के सहकर्मियों ने हमें किसी चीज की तकलीफ होने नहीं दी। सभी ने अपने-अपने घर से जरूरत का सामान देकर हमारे क्वार्टर को घर में बदल दिया।

अब बारी आती है मेरी ज्वाइनिंग की। कोरोना के कारण ऑफिस बंद थे। मेरी ज्वाइनिंग की अंतिम तिथि आ रही थी। मुझे किसी तरह ऑफिस ज्वाइन करना था। ऑफिस के एक सर मेरी मदद के लिए आगे आये। उन्होंने मेरी ज्वाइनिंग की प्रक्रिया को आसान बना दिया। उन्होंने ऑफिस के सभी सहकर्मियों को मेरी ज्वाइन से ताल्लुक रखते थे, उन्हें ऑफिस में बुलाकर मेरी ज्वाइनिंग करवाई गयी। ऑफिस खाली था, मैं एक कोने में शांत बैठी थी। सभी सहकर्मियों ने मेरा पूरा सहयोग किया। मुझसे अगर कोई पूछे कि ज्वाइनिंग की प्रक्रिया क्या होती है, मुझे भली-भांति नहीं पाता, क्योंकि सभी ने इतना सहयोग दिया कि कब मैं एक सरकारी कर्मचारी बन गयी मुझे पता ही नहीं चला।

उन दिनों ऑफिस बंद होते थे। यदि किसी कारणवश ऑफिस भी जाना होता तो सप्ताह में एक या दो दिन जाना पड़ता था। हम मां और बेटी हंसी खुशी से वहां अपना समय व्यतीत कर रहे थे। धीरे-धीरे समय बीत गया और कब दो महीने गुजर गये कुछ पता भी नहीं चला। लॉकडाउन हट गया, ट्रेन चलने लगी। अब मेरे जीवन का कठिन समय आ गया जब मेरी मां मुझे उस शहर में अकेला छोड़ घर लौट रही थी। मां की आंखों और बातों से मेरे लिए चिंता साफ झलक रही थी। क्वार्टर में रहने वाले वे तमाम लोग जिनसे मेरी मां परिचित थी, वह सभी को कह रही थी मेरी बच्ची का ख्याल रखना। मां के जाने के बाद वह क्वार्टर जिसे हमने घर बनाया था, वह वापस एक सरकारी क्वार्टर में तब्दील हो गया। खाली घर मुझे काटने को दौड़ता था।

मैं रोज ऑफिस जाने लगी। मेरा वक्त कटता गया। ऑफिस के लोगों से धीरे-धीरे परिचय बढ़ा। परिचय बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ गया कि कुछ सहकर्मियों मेरे अच्छे दोस्त बन गये। उन दोस्तों ने मुझे परिवार की कमी महसूस नहीं होने दी। जब कभी भी मैं किसी मुसीबत में होती तो मेरे दोस्त मुझे मुसीबत से बाहर निकाल लेते। मुझे क्वार्टर से अच्छा ऑफिस जाना तथा अपने दोस्तों के साथ समय व्यतीत करना अच्छा लगने लगा। धीरे-धीरे मेरा उस शहर में एक दोस्तों का ग्रुप बन गया जिनके साथ ऑफिस के क्लब

रूम में इनडोर गेम भी खेला करती थी। कब वह गेम हमारे ऑफिस जाने का मकसद बन गया मुझे पता भी नहीं चला। हमलोग कभी तरह-तरह के पकवान खाने जाते तो कभी अलग-अलग जगह घूमने जाते। जब भी हमें शनिवार और रविवार के दिन छुट्टी मिलती हम सभी मिलकर क्वाटर में मिलजुलकर खाना बनाते और मस्ती करते और खूब हंसी ठिठोली होती।

मेघालय से अच्छी तरह परिचय मेरे वहां के दोस्तों ने करवाया। हमलोग पिकनिक करने चेरापूँजी भी गये थे। वहां हमलोगों ने झील में खूब मस्ती की। शिलांग में व्यू पॉइंट, लैक्कोर पीक, स्प्रेअद ईगल फॉल्स, लेडी हैदरी पार्क और एलिफेंट फॉल्स भी देखा। साथ में हम सभी दावकी, लाईटलुम, मौसिनराम भी घूमे। जब हम लोग बाइक से घूमने जाते, वहां की चारों तरफ की हरियाली और पहाड़ों पर तैरते बादल जैसे नजारे मन को मोह लेते थे। वहां कभी भी बारिश हो जाती थी, तो हमें अपने साथ हमेशा रेन कोट रखना पड़ता था। जापान में होने वाले चेरी ब्लॉसम फेस्टिवल भारत के मेघालय में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। शिलांग में यह वाइस लेक और पोलो ग्राउंड में यह त्योहार लगभग एक महीने मनाया जाता था। इस वक्त शिलांग शहर इस चेरी ब्लॉसम के फूल से भरा होता है जो देखने में काफी खूबसूरत लगता है। मैंने दो बार उस फेस्टिवल को देखा।

कब ढाई साल गुजर गये उस प्रकृति की गोद में, पता ही नहीं चला। मानो ऐसा लगता है कि ये कल की ही बात है जब मैं शिलांग नौकरी करने गई थी। अब मेरी पोस्टिंग मेरे होमटाउन कोलकाता में हो गई है। लेकिन शिलांग ने मुझे बहुत सारी खुशियां और अच्छे दोस्त, प्यार सब कुछ दिया। ये मेरी जिंदगी के सबसे खूबसूरत साल थे, जिसे मैं कभी भी भूल नहीं सकती। मेरी जिंदगी के सबसे अनमोल पलों को यदि मुझे दोबारा जीने को मिले तथा मुझे शिलांग जाने का मौका मिले तो मैं बिना झिझक के उस वक्त को दोबारा जीना चाहूँगी।



हिंदी स्वाभिमान एवं गर्व की भाषा



શ્રી અમરેશ કુમાર, વરિષ્ઠ
લેખાપરીક્ષક

“हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय-हृदय से बातचीत करता है
और हिंदी हृदय की भाषा है।”

- महात्मा गाँधी

भूमिका

हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिंदी दिवस भारत में हर वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। हिंदी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा भी है। यह भाषा विश्व में बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।



इतिहास भारत 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा के द्वारा एकमत से यह निर्णय लिया कि भारत की राजभाषा हिंदी होगी तथा सन् 1953 से प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस के रूप में 14 सितंबर को मनाया जाने लगा।

महत्व हिंदी राजभाषा होने के साथ-साथ यह पूरे भारत में बोली जाने वाली भाषा है। हांलाकि भारत विविधताओं का देश माना जाता है जहाँ सैकड़ों प्रकार के भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी दिवस न केवल भारत में मनाया जाता है, बल्कि पूरे विश्व में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मानने का निर्णय यू.एन.ओ. के द्वारा लिया गया है। हिंदी का प्रचलन सिंगापुर जैसे कुछ राष्ट्रों में भी बढ़ा है।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है- सुमित्रानंदन पंत"

हिंदी का विकास इस बात से भी समझा जा सकता है कि कई हिंदी लिखित किताबें जैसे- गीता, महाभारत का अनुवाद अंग्रेजी में किया जा रहा है।

हमारे संविधान में भी कई अनुच्छेद हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करते हैं।

अनुच्छेद 120: संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक हिन्दी है।

अनुच्छेद 210: विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषाओं में से एक हिन्दी है।

अनुच्छेद 343: केंद्र सरकार के कार्यालय भाषाओं में से एक है।

अनुच्छेद 344: राजभाषा पर कमिटी का गठन।

अनुच्छेद 345: राज्य सरकार का राजभाषा।

अनुच्छेद 346: एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच सम्प्रेषण का माध्यम

अनुच्छेद 349: सर्वोच्च/उच्च न्यायलयों में हिन्दी के प्रयोग के संबंध में।

इन सब संवैधानिक प्रावधानों के अध्ययन के बाद ऐसा प्रतीत होता है हमारे महापुरुषों ने भी हिंदी को विशेष स्थान दिया है।

हिंदी भाषा का उपहास

हिंदी के व्यापकता को देखने के बाद भी हिंदी को हमेशा नजरअंदाज किया जाता है। आज के बच्चे हिंदी लिखना तो दूर, बोलने से भी कतराते हैं। सभी जगह अंग्रेजी का बोलबाला है। दवाइयों के नाम से लेकर साबुन के नाम तक अंग्रेजी में लिखा रहता है। यह कैसी विडंबना है हमारे देश की, जिस देश की राजभाषा हिंदी है उस देश के लोगों का हिंदी में बात करना तथा हिंदी में वस्तुओं का प्रचार करना मुनासिब नहीं समझा जाता है।

हिंदी का कोई कितना भी उपहास क्यों न कर ले, लेकिन हिंदी भाषा की व्यापकता अक्षुण्ण है। भारत बहुभाषी देश है, जहां कोस-कोस पर पानी बदलता है, चार कोस पर वाणी। वहां पर हिंदी पूरे भारत को एक माला में पिरोये हुए है और सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम बना हुआ है। यहां तक कि हमारे स्टार जैसे शाहरूख खान की हिंदी फिल्मों मध्य एशिया तथा अफ्रीकी देशों के साथ-साथ पूरे विश्व में काफी लोकप्रिय है। साउथ फिल्मों का हिंदी रूपांतरण साउथ के भाषाओं से ज्यादा हिन्दी में देखा जाता है। साथ ही ओटीटी प्लेटफार्म में भी हिंदी भाषा में वेब सीरिज लोकप्रिय है। जब हम विदेशों की यात्रा करते हैं तब लोग हमें प्यार से राम राम जी, नमस्ते या कई हिंदी गाने का प्रयोग करते हुए आसानी से मिल जाते हैं।



अतः हमें अपनी मातृभाषा पर संकोच न करके हमें गर्व करने की आवश्यकता है।

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है"

— कमलापति त्रिपाठी

मृग तृष्णा



श्री ओम प्रकाश चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आँखों में सपने लिए
चल दिए शहर को
छोड़ अपना जहाँ
बिताए थे जहाँ बचपन को
खाने को न था दाना
बस था लोगों का ताना
मिट्टी जो थी सबसे प्यारी
छोड़ उसे भी जाना था।
नम आँखों से
गांव मुझसे बिछड़ जाना था।
फरियाद करुं किससे
कंधों पर अब
माँ-बाप के अरमानों का
बोझ उठाना था।
पर शहर की भीड़-भाड़
मुझे न रच बस रही थी।
गांव की माटी
मुझे अब भी
बुला रही थी,
पर लौटना था मुश्किल
अब इस भीड़ में ही
मुझे भी भीड़ बन जाना था।
यंत्रवत जिंदगी
अब मुझे भी
बिताना था
मानव से मशीन
बन जाना था।
संवेदनाएं, जो मुझमें
रच बस रही थी,
कहीं वो दूर खड़ी
मुझे ही चिढ़ा रही थी।

प्रेम अब लालसा में
बदल रही थी,
भूख पेट की नहीं
मन की सता रही थी।
जो मैं सोचूं
ये क्यों हो रहा है,
मिलने को तो है सब कुछ
फिर भी कुछ कमी
खल रही है।
दान करने से भी
मन को न सुख
मिल रहा है,
केवल पोषण अहम का
हो रहा है।
लोगों की मिलती
तारीफें
अब कांटे लग रही हैं,
सुख जो थी रोटी में
अब न छप्पन भोग में
मिल रही है।
मृग तृष्णा में बंधकर
अब तो जीवन चल रही है।



हमारी माँ



श्री सुरजीत घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वो पहला कदम जिसका
हाथ पकड़कर चला था,
लड़खड़ाकर धरती पर गिरने से
जिसने संभाला था,
वो मेरी माँ है
वही तेरी माँ भी है।

लोरी से रात को सुलाने वाली,
डॉट के नींद से जगाने वाली,
चूल्हे में रोटी बनाते हुए,
बहन को अक्षर-ज्ञान दिलाने वाली,
वो मेरी माँ है,
वही तेरी माँ भी है।

पिताजी को दफ्तर भेजने के साथ,
मुझे स्कूल तक छोड़ने के बाद,
बचा हुआ खाना तुरंत खाती,
विश्राम न लेकर जूठे बर्तन धोती,
वो मेरी माँ है,
वही तेरी माँ भी है।

किसी के दुख में दुखी,
किसी के सुख में सुखी,
तकलीफ को सुकून में बदलने वाली,
खुद देवी होकर भी, पूजा करनेवाली
वो मेरी माँ है,
वही तेरी माँ भी है।

जिसकी बाहें थामकर धरती पर आया,
अँधेरे से निकलकर रौशनी पर छाया,
अपनों में कैद, सुनाती आज़ादी का गान,
आंचल के छांव में जिसके जुड़ाता है प्राण,
वो है तेरी माँ
वही है मेरी माँ...

दो पल



श्री शुभजित राय
लेखापरीक्षक

दो पल के ये नज़ारें
छुपते-छिपाते कहीं बातें,
आप से मिलने की ख्वाहिशों में
बीत गई रातें।

यूं तो मैं अकेला ही रह सकता हूँ
आपके बिना,
मगर ये जीना ही क्या जीना
दो पल आपके बिना।

कभी-कभी मन ही मन में
खो जाता हूँ,
प्रभात की किरणों से
खुद को अपने आप से छिपा लेता हूँ।

लाखों की भीड़ में
आप की यादें क्यूँ आए मेरे मन में,
बादल की तरह
जो चाह के भी भुला न सकता हूँ
दो पल आपके बिना,
यूं तो हर लम्हा बिता सकता हूँ
आपके बिना।

मगर ये जीना भी क्या जीना
दो पल आपके बिना।



पत्रकारिता एवं संचार व्यवस्था



श्री रवि पासवान
कनिष्ठ अनुवादक

पत्रकारिता संचार का एक माध्यम है जिससे महादेश या दुनिया में होने वाली घटनाओं को लोगों तक पहुंचाते हैं। मीडिया शब्द का अर्थ लैटिन भाषा के **मीडियम** शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ **माध्यम** है। अगर यह सीधी भाषा में कहें तो मीडिया वह माध्यम है जिससे जनता सरकार से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है। इसका प्रसारण सीधे टीवी, रेडियो, समाचार पत्र या इंटरनेट के माध्यम से होता है। किसी भी सूचना को हमारे समक्ष समाचार, पत्रिका और आर्टिकल, इलेक्ट्रॉनिक न्यूज, ब्लॉग एवं अन्य प्लेटफ़ार्मों के माध्यम से परिचित कराती है। वास्तव में पत्रकारिता साहित्य की तरह समाज में हो रही गतिविधियों, हलचल का दर्पण है। आज के आधुनिक समाज में खास कर दुर्घटनाओं, आपातकाल की स्थिति, आपदा संकट के वक्त सुरक्षा के रूप में सहयोग करती है। प्रांतीय, राज्य, देश-विदेश एवं विधि संबंधित कठिन से कठिन उलझन को सहज सरल तरीके से जनता तक पहुंचाने का कार्य करता है। जनता की आवाज़ को उच्च पदाधिकारी एवं सत्ता के शीर्ष तक पहुंचाता है, इसी कारण विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका के बाद पत्रकारिता/मीडिया समाज के चौथे स्तंभ के रूप में जाना जाता है। विश्व में पत्रकारिता/समाचार पत्रों का प्रारंभ रोम से माना जाता है। लगभग 131 ईसापूर्व दैनिक समाचार पत्र (Acta Durina) एकता डुरीना को कहा जाता है। उस समय पत्थर या धातु के पट्टी होती थी, उस पर उसमें समाचार अंकित कर लोगों को सूचना मिलती थी। मध्यकाल में यूरोपीय व्यापारिक केंद्रों में **सूचना पत्र** निकाले जाने लगे जिसमें कारोबार, क्रय-विक्रय, मुद्रा के मूल्य में उतार-चढ़ाव की जानकारी दी जाती थी। संचार का आदान-प्रदान या किसी विशेष जानकारी का प्रयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय प्राचीन काल से चला आ रहा है। भारतीय ग्रंथ, पुराण, ऐतिहासिक किताबें, गीता, रामायण के माध्यम से देखा जा सकता है। महाभारत के युद्ध में भी **धृतराष्ट्र (अंधे राजा)** को संजय द्वारा पूरे युद्ध का आंखों-देखा हाल सुनाया गया था।

वेदव्यास, पाणिनी, नागार्जुन, पतंजलि द्वारा शोध-औषधि ज्ञान की लिखित जानकारी आज भी देखी जा सकती है। भारत में पत्रकारिता की शुरुआत 18वीं सदी में बंगाल गैजेट के रूप में मानी जाती है जिसे सन् 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा अंग्रेजी में कोलकाता से प्रकाशित किया। उदन्त मार्तण्ड के नाम से हिंदी का पहला समाचार पत्र 30 मई 1826 में पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से

आरंभ किया। सन् 1821 ई. में राजा राम मोहन राय द्वारा संवाद कौमुदी दैनिक अखबार था, जो भारतीय भाषाओं में पहला समाचार पत्र जो बांग्ला भाषा में प्रकाशित हुआ।

इसके अलावा बम्बे समाचार फरदुनजी मर्जबान द्वारा जाम-ए-जहांनुमा पहला उर्दू अखबार दिल्ली से छापा गया। दिगदर्शन पहला मराठी समाचार पत्र था। सन् 1838 में द बांग्बे टाइम्स एंड जर्नल ऑफ कॉमर्स (व्यापार संबंधित समाचार) की शुरुआत हुई, जो बाद में चलकर टाइम्स ऑफ इंडिया बना। जब भारत में समाचार एवं पत्रकारिता का प्रारंभ हुआ भारत अंग्रेजी हुकुमत के अधीन था। एक वर्ग अंग्रेजों के समर्थन में थे तो दूसरा अंग्रेजों द्वारा की जाने वाली अत्याचार एवं दमनकारी नीतियों को उजागर कर रही थी जिसने भारतीयों को एक सूत्र में बांधने, देश प्रेम को जगाने एवं आंदोलनों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। अंग्रेज फ्रांसीसी आक्रमण के भय से लार्ड वेलेज्वली ने समाचार पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम 1799 लागू किया। इस अधिनियम द्वारा समाचार पत्रों पर अंकुश/सेंसर लगा दिया, संपादक का पूरा नाम एवं जानकारी प्रकाशन के पूर्व सरकारी सचिव को अनिवार्य रूप से भेजना होगा। लॉर्ड हैस्टिंग्स की उदारवादी प्रगतिशील नीति के कारण सभी समाचार पत्रों के पूर्व पत्रेक्षण पर रोक वापस ले लिया गया। अनुज्ञप्ति नियम 1823 को गवर्नर-जनरल जॉन एडम्स द्वारा चालु करवाया गया, जिसके अनुसार बिना अनुज्ञप्ति लिए प्रेस की स्थापना या उसका उपयोग दंडनीय अपराध माना जाएगा। मुख्यतः यह कानून भारतीय भाषा वाली समाचार पत्र या समाचार पत्रों के मालिक भारतीय हों, उनके विरुद्ध चलाया गया। इस नियम के कारण ही राजा राम मोहन राय की पत्रिका मिरात-उन-अखबार बंद करना पड़ा। चार्ल्स मेटकॉफ ने पुराने सभी कानूनों को रद्द कर उसके स्थान पर 1835 का प्यारेस अधिनियम या नेटकॉफ अधिनियम 1835 बनाया। इस कारण आसानी से अखबार आदि का प्रकाशन एवं विस्तार हुआ, जो 1856 तक चला। इस तरह समय-समय पर प्रेस के उपर प्रतिबंध और छूट दी जाती थी। इसी क्रम में अनुज्ञप्ति नियम 1856, पंजीकरण अधिनियम 1867, 2000 में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000, आई.टी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 एवं सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने प्रसारण सेवा (विनियम) विधेयक को लागू किया गया है।

स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय मीडिया को ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन बीबीसी की तर्ज पर आज़ाद भारत की मीडिया के रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने का प्रयास था। मीडिया या संचार का विकास तीन चरण में देखा जाता है। पहला चरण उन्नीसवीं सदी में उस वक्त हुआ जब औपनिवेशिक बनाम राष्ट्रवाद का यह दौर 1947 तक चला। अंग्रेजों के नियंत्रण में ही रेडियो प्रसारण हुआ। दूसरा चरण आज़ादी मिलने के साथ-साथ अस्सी के दशक तक रहा। इस लम्बी अवधि में मीडिया का प्रसार-प्रचार और गुणवत्ता में ज़बरदस्त बढ़ोत्तरी हुई। उसके विभिन्न रूप ने भारत को आधुनिक राष्ट्र बनाने में योगदान दिया। इसी दौर में टीवी का आगमन भी हुआ। तृतीय चरण में राजनीति और भू-मण्डलीकरण के साथ-साथ इंटरनेट, कम्प्यूटर का दौर आ



गया। हिंदी में राष्ट्र स्तर पर दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, प्रभात खबर, पंजाब केसरी, नव भारत टाइम्स, अंग्रेजी में टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, हिन्दू, मुंबई मिर, तार साथ ही क्षेत्रीय दैनिक समाचार पत्र मलाला मनोरमा, मातृभूमि, लोकमत, आनंद बजार पत्रिका, सकाल कुछ उदाहरण हैं। वैसे ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में एन.आई.ए, पी.टी.आई, न्यूज एजेंसी, दूरदर्शन, आजतक, इंडिया टूडे, एबीपी न्यूज, एनडी टीवी, एक्स, यूट्यूब आदि माध्यम उपलब्ध हैं।

इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम आधुनिक दुनिया में बढ़ता जा रहा है और यह संचार का महत्वपूर्ण साधन है। इसमें समाचार, मनोरंजन, शिक्षा, व्यापार, संचार आदि के लिए प्रयोग में लाया जाता है।



उपयोगकर्ताओं को दुनिया की विभिन्न विषयों से अवगत करा रहा है। 20 से 30 वर्षों में भारत के भीतर घर-घर तक पहुँचा दिया है, सस्ते इंटरनेट सेवा शहरी एवं ग्राम तक मोबाइल के माध्यम से सुलभ बनाया है। भारत सरकार डिजिटल मीडिया दिशानिर्देश और नीतियां बनाता है। सरदार बल्लबर्बाई पटेल भारत के पहले सूचना और प्रसारण

मंत्री थे। यह मंत्रालय उन महत्वपूर्ण मंत्रालयों में से एक है जो जनता तक पहुंचने में सरकार का प्रतिनिधित्व करती है। इस मंत्रालय को संचार के साधनों जैसे पुस्तिकाएं, पोस्ट, टेलीविजन, रेडियो, प्रेस, सोशल मीडिया, मुद्रित प्रचार जैसे जन संचार के विभिन्न साधनों के माध्यम से सरकार की नीतियां तथा स्कीमों और कार्यक्रमों के बारे में सूचना का प्रसार करने का दायित्व सौंपा गया है। भारत के सुप्रीम कोर्ट ने मीडिया ट्रायल को मान्यता नहीं दी है और सरकार को इस पर कानून बनाने को भी कहा है। समाज के निम्नलिखित महत्वपूर्ण स्थानों में अपना योगदान अदा कर रही है-

1. सामाजिक महत्व:- हमारे समाज में बहुत सारी बुराइयों को मिटाने का कार्य करता है। साथ ही समाज को सही दिशा-निर्देश देना एवं सामाजिक समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान खींचता है। दो माह कोरोना काल के पहले एवं दूसरे लोकडाउन के समय समाज के सभी लोगों तक सही जानकारी पहुँचाने का कार्य किया।

2. सांस्कृतिक महत्व:- अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करना और गौरव जगाने का प्रयास करता है। प्रत्येक देश की मीडिया अपने और दूसरे देश की संस्कृति, खान-पान, पहनावा, लोकनृत्य, पूजा-पाठ की पद्धति को रुबरू करता है।

3. शैक्षिक महत्व: आज छोटे से छोटे शहर देश दुनिया की नई शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, विदेशों में जा कर या नई शिक्षा पद्धति से अवगत कराता है। छात्रों को मिलने वाले छात्रवृत्ति अनुदान और युवाओं को पढ़ाई के माध्यम से आगे बढ़ाने में सहयोग देता है। ज्ञान-विज्ञान तथा जनता को अधिकारों एवं कर्तव्यों की जानकारी देता है।

4. राजनीतिक महत्व:- मीडिया को वॉच डॉग की तरह राजनेताओं की अच्छी और गलत कार्यों को उजागर करना, उनके महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। देश का जनमत तैयार करना, जनता को सही निर्णय लेने में मदद करना, राजनीति के सारे पहलुओं को समझाने में मदद करता है।

5. राष्ट्रीय महत्व:- जनता में राष्ट्रीय योजना जागृत करता है। देश को एक सूत्र में बांध कर रखता है। राष्ट्रीय हितों के लिए कार्यरत रहता है। खास कर युद्ध के माहौल में लाइव टेलिकास्ट एवं रिपोर्टिंग करना बहुत जज़्बे का कार्य है। हाल ही में अफगान युद्ध के दौरान भारतीय पत्रकार दानिश सिद्दीकी की हत्या कर दी गई, वो कांधार के युद्धग्रस्त इलाके को कवर कर रहे थे।

6. अंतरराष्ट्रीय महत्व:- विश्व बंधुत्व की भावना जगाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। पूरे विश्व की घटनाओं को दिखाता है। प्रमुख पर्यटन केंद्रों से अवगत कराता है। सभी लोगों को विश्व में एक परिवार की तरह बांधे रखता है। संचार विश्व के छोटे से छोटे देश के जनता या बेजुबान लोगों की आवाज़ बनना और सार्वजनिक प्रहरी बनने का कार्य करता है। डब्ल्यू.एच.ओ, डब्ल्यू.टी.ओ एवं विश्व स्तर पर हो रहे कार्यों को सहज तरीके से बताता है।



हमें हमारे देश की कई अन्य समस्याओं जैसे बेरोजगारी, शिक्षा, महंगाई आदि मुद्दों को बेबाकी से उठाना चाहिए। इस फिल्ड से जुड़े व्यक्तियों को कार्य करने में बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अभी भी, मीडिया का प्रयोग कुछ लोग अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं, जिस पर कठोरतापूर्वक कार्रवाई की जानी चाहिए।



कश्मीर यात्रा



श्री शुभजीत बनिक
लेखापरीक्षक

मैं बचपन से ही "धरती के स्वर्ग" कश्मीर की अविश्वसनीय सुंदरता के बारे में पढ़ता रहा हूँ जो भारत के उत्तरी भाग में स्थित है। इसलिए मैं हमेशा कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव करने का सपना देखता था। पिछले वर्ष मुझे कश्मीर की प्रकृति की मनमोहक सुंदरता को देखने का अवसर मिला। मैं अपने परिवार के साथ पिछले साल अक्टूबर के महीने में जम्मू-कश्मीर गया था। यहां मैं हमारी कश्मीर यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

हमने अपनी यात्रा कोलकाता रेलवे स्टेशन से शुरू की। हमने जम्मू के लिए ट्रेन पकड़ी और जम्मू पहुंचने में लगभग 45 घंटे लग गए। लंबी यात्रा के बाद हमें थकान महसूस हुई और आखिरकार हम जम्मू पहुंच गए। फिर हम एक स्थानीय कार से कटरा गए। हमने उस रात कटरा के एक होटल में आराम किया। अगले दिन सुबह-सुबह हम माता वैष्णुदेवी के पवित्र मंदिर के दर्शन के लिए गये। हमने कटरा के स्थानीय कार्यालय से यात्रा पर्ची एकत्र की। फिर हम सुबह 5.30 बजे माता वैष्णुदेवी के पवित्र मंदिर

के लिए यात्रा के शुरुआती जगह पर पहुंचे। हमने माता वैष्णुदेवी के पवित्र मंदिर तक पहुंचने के लिए घोड़े किराए पर लिए। पवित्र मंदिर की ओर की यादगार यात्रा बहुत ही मनमोहक थी। कई लोग पहाड़ की चोटी पर स्थित मंदिर की ओर जा रहे थे और 'जय माता दी' के नारे लगा रहे थे। पहाड़ी रास्ते से पवित्र मंदिर तक जाते समय हमने दो बार थोड़ा आराम किया और



आखिरकार हम सुबह 11.30 बजे के आसपास मंदिर पहुंच गए। हमने एक महीने पहले ही भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन किए गए लकड़ी के पुल के माध्यम से पवित्र मंदिर में प्रवेश किया। फिर हमने माता वैष्णुदेवी का आशीर्वाद लिया और मंदिर से 'प्रसाद' लिया। फिर हमने पास के एक रेस्तरां में नाश्ता किया और पैदल लौटने लगे। हम लोग शाम को करीब 5.30 बजे अपने होटल पहुंचे। कुछ देर आराम करने के बाद हमने कटरा के स्थानीय बाजार का दौरा किया। हमने वह रात कटरा में बिताई।

अगली सुबह नाश्ता करने के बाद हमने बस से कटरा से पहलगाम की ओर अपनी यात्रा शुरू की। यह बहुत लंबी यात्रा थी और शाम को लगभग 6 बजे हम पहलगाम पहुँचे। हम उस रात पहलगाम के एक स्थानीय होटल में रुके। अगली सुबह होटल में नाश्ता करने के बाद हम पहलगाम में स्थानीय दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए गए। वहाँ हमने 'अरु घाटी', 'बेताब घाटी' और 'चंदनवारी' का दौरा किया। 'बेताब वैली' फिल्म 'बेताब' की शूटिंग के लिए मशहूर है। 'चंदनवारी' में हमने 'अमरनाथजी यात्रा' का शुरुआती बिंदु देखा। फिर हम अपने होटल लौट आए और हम उस रात पहलगाम में रुके और स्थानीय बाजार का दौरा किया। अगली सुबह नाश्ता करने के बाद हमने 'श्रीनगर' के लिए अपनी यात्रा शुरू की। हम लगभग दोपहर को 3 बजे 'श्रीनगर' पहुँचे। 'श्रीनगर' की ओर जाते हुए हम सेब के बगीचे में गए। हमने कश्मीर की प्रसिद्ध क्रिकेट बैट फैक्ट्रियों का भी दौरा किया। हम श्रीनगर में तीन रात रुके।



श्रीनगर में पहले दिन हम गुलमर्ग गए। श्रीनगर से गुलमर्ग पहुँचने में 2 घंटे लगे। हम गुलमर्ग की भव्य सुंदरता का अनुभव करके रोमांचित थे। गुलमर्ग में हमने 'गंडोला राइडिंग' का आनंद लिया। हम शाम को करीब 7 बजे श्रीनगर स्थित अपने होटल लौटे। अगले दिन सुबह-सुबह हमने 'सोनमर्ग' के लिए अपनी यात्रा शुरू की। श्रीनगर से 'सोनमर्ग' पहुँचने में 4 घंटे लगे। बर्फ से ढके 'सोनमर्ग' को देखना एक यादगार अनुभव था। बर्फ पर सूरज की रोशनी और भी मनमोहक होती है। अगले दिन श्रीनगर में हमने महान 'मुगल गार्डन' का दौरा किया जो विभिन्न प्रकार के खूबसूरत फूलों से भरा हुआ है। वापस लौटते हुए हमने श्रीनगर के केसर के खेत का दौरा किया। केसर के पौधों को देखकर मेरी आँखें मंत्रमुग्ध हो गईं और हमने पास की स्थानीय दुकान से कुछ केसर खरीदे। अगली सुबह नाश्ता करने के बाद हम श्रीनगर से निकले और जम्मू के लिए अपनी यात्रा शुरू की। हम रात करीब 8 बजे जम्मू पहुँचे और जम्मू रेलवे स्टेशन से कोलकाता के लिए ट्रेन पकड़ी।

कोलकाता पहुँचने में 48 घंटे लगे। कश्मीर की सुखद स्मृति लेकर हम कोलकाता लौटे। आखिरकार मुझे एहसास हुआ कि अगर धरती पर किसी जगह को स्वर्ग कहा जाता है तो वह 'कश्मीर' ही है। कश्मीर की मीठी यादें हमेशा मेरे दिल में रहेंगी और मैं वहाँ दोबारा जाना चाहूँगा। मैं कश्मीर में शांति बनाए रखने के लिए कश्मीर के स्थानीय प्राधिकारी, 'भारतीय सेना' और भारत सरकार को हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।



तत्काल टिकट



श्री अमित कुजूर
लेखापरीक्षक

कभी-कभी तो सोचता हूं कि हर रोज हजारों लोग ट्रेनों में क्यों और कहां जाते होंगे, बेवजह बिना मतलब के। क्यों जिस दिन मुझे जाना होता है, लोगों को भी उसी दिन का इंतजार रहता है। जिस दिन मेरा टिकट कन्फर्म नहीं होता है या वेटिंग लिस्ट में रहता है, कन्फर्म टिकट के साथ बैठे सभी यात्रियों को मैं अपना दुश्मन समझ बैठता हूं, सोचता हूं इन्हीं लोगों की वजह से अपना टिकट नहीं हो पाया।

मित्रों, बात कुछ ऐसी है कि मैं अपने रेलवे टिकट को लेकर हमेशा संवेदनशील रहा हूं। मैं जब भी दो या तीन महीने पहले भी टिकट बुकिंग करता हूं, वेटिंग लिस्ट ही पाता हूं और तब से लेकर यात्रा वाले दिन तक घड़ी के सेकेंड कांटे की तरह मेरे अंतःकरण में टिक-टिक-टिक की ध्वनि गुंजते रहता है, कि टिकट कन्फर्म होगा भी या नहीं।

मेरा गांव कोलकाता से 750 कि.मी. दूर हासिमारा, जिला अलीपुरद्वार में पड़ता है। इकलौता ट्रेन कंचनकन्या एक्सप्रेस जो हासिमारा से होकर जाती है, पिछले कई वर्षों से मेरा पसंदीदा ट्रेन रहा है। टिकट मिल पाना लगभग असंभव- सा है। इस ट्रेन में एकमात्र तत्काल टिकट करना ही मेरा हमेशा की तरह अंतिम विकल्प रहता है।

दरअसल साल 2021 में मैं पूजा की छुट्टियों में घर आया हुआ था वह भी प्रीमियम तत्काल के टिकट पर, लेकिन टिकट प्राप्त करना उतना भी आसान नहीं था, तीन-चार दिन की कड़ी मशक्कत के बाद मुझे एक एजेंट के द्वारा यह उपलब्धि हासिल हुई।

अब रही बात वापसी वाले दिन की, साधारणतः मैं रविवार वाले दिन के लिए टिकट का इंतजाम करता हूं, जिसके लिए मुझे शनिवार भोर के समय उठकर हासिमारा स्टेशन के काउंटर पर जाना था। दरअसल गांव में कोई भी नेटवर्क वो चाहे '3 जी' या '4 जी' ही क्यों न हो, उस वक्त बेहद घोंघे की रफ्तार से गतिशील होता था। सुबह को मैं 03 बजे तड़ाके से उठ गया और आधार कार्ड पकड़ कर बाइक निकाला। पिताजी बीमार थे इसलिए मैं सड़क (एन-एच 31सी) पर बाइक ला कर मैंने बाइक स्टार्ट किया।

जी हां, हमें मालूम है कि स्लीपर क्लास तत्काल टिकट के लिए टिकट काउंटर 11 बजे खुलता है परंतु भोर में जाने का कारण यह था कि वहां पहुंचकर मुझे एक रजिस्टर पर अपना मोबाइल नंबर तथा नाम लिखवाना था जो आर.पी.एफ. कर्मियों द्वारा संचालित किया जा रहा था।

आज मैं मोटर बाइक पर सवार होकर हासिमारा जो लगभग 6 कि.मी. दूर था, की तरफ निकल पड़ा। ठंड का महिना था। चारों तरफ ओस और कोहरा भरा हुआ था। एन.एच. 31 सी. उस वक्त सिंगल वे हुआ करता था। दोनों ओर से भर-भर के ट्रकों कतार में चल रही थी।

6 कि.मी. का जो रास्ता था उसमें से 3 कि.मी. का रास्ता बेहद जटिल प्रतीत हो रहा था, वजह यह था कि जहां रास्ते के एक तरफ सुदूर घना जंगल था तो दूसरी तरफ नदी राजमार्ग के समानान्तर बह रही थी। रास्ते में दो-दो श्मशान घाट भी था, जिसके बारे में मैंने बहुत से किस्से सुन रखे थे। स्ट्रीट लाइट तो आप गांव में भूल जाइए। ऊपर से कोहरा के कारण बाइक की लाइटें भी दूर तक नहीं जा रही थी। सड़कें भी बेहद खराब थी, सड़कों की धूल कोहरा के धूँध को मानो और गहरा करने में अपना भरपूर साथ दे रही थी। सामने से आते ट्रकों की हेड लाइटें भी आंखों को सुन्न कर रहा था। जंगल में झींगुर की आवाज़ भी भयावह परिवेश बना रही थी।

जंगल को पार करने के बाद मैं बाइक को थोड़ा कम स्पीड पर चलाने लगा। पर सहसा 5 कुत्तों का झूंड मेरे बाइक के पीछे भौंकते हुए और उछलते हुए मेरा पीछा करने लग गये। यहां तक की पिछले टायर में भी एक कुत्ते ने झपटा मारा। डर के मारे मैंने अपना दोनों पैर उठाया और एक्सेलेटर को बढ़ाया और आगे निकल गया। गनिमत यह थी कि कुत्तों का झूंड केवल आठ कि.मी. तक ही मेरा पीछा किया। फिर चाय का बगान शुरू हुआ जो लगभग 2 कि.मी. तक था। इसके बाद मैं स्टेशन पहुंच गया। मैं खुश था कि मैं पहला व्यक्ति होऊंगा जो नाम लिखवाकर पंक्ति में पहले खड़ा होऊंगा। पर आर.पी.एफ. का रजिस्टर जैसे ही खोला, 6 लोग मुझसे पहले नाम दर्ज करा चुके थे। मैंने 7वें नंबर पर अपना नाम दर्ज कराया। मुझे अब यकिन हो चुका था कि अब मेरा तत्काल टिकट होने से रहा क्योंकि स्टेशन पर एक ही काउंटर था और मैं छः लोगों के बाद था। मेरी खुशी के बादलों को छटते देर नहीं लगी।



मन उदास करके फिर मैं घर के लिए वापस आना शुरू किया। अब जंगल वाले रास्ते में मुझे कुछ ऐसा भयावह दृश्य देखने को मिला जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। मैंने ट्रकों के हेड लाइट से कुछ हाथियों के झूंड को देख लिया। कोहरा और धूल के कारण वह तस्वीर छुप-सी जाती थी फिर पुनः दिखाई पड़ने लगती थी। मैं ट्रकों के कतार के बीच निरंतर उसी दिशा में आगे बढ़ रहा था। शायद वह हाथियों

का झूंड सड़क पार करना चाह रहे थे। गाड़ियों की निरंतरता के कारण सड़क के बगल में ही खड़े थे। तीन-चार मिनट के बाद ही मुझे उस जगह से गुजरना पड़ा जहां हाथियों का पूरा परिवार खड़ा था। यह मंजर मेरे लिए भयावह था। महज 5-6 फीट की दूरी से मैं वहां से गुजर रहा था। शरीर से पसीने छूट रहे थे। बेहद मजबूती के साथ मैंने अपने संयम को बनाए रखा। बड़े-बड़े दांत, विशालकाय शरीर, बेहद भयावह दृश्य था। परंतु हाथियों की तरफ से ऐसी कोई हरकत नहीं हुई। मैंने भगवान को धन्यवाद कहा। तत्पश्चात कुछ देर बाद मैं घर पहुंच गया। फिर दो-तीन घंटे के लिए थोड़ा सो भी लिया।

सुबह मैं 11 बजे तक फिर स्टेशन में पहुंच कर कतार में खड़ा हो चुका था। अपने तत्काल टिकट के लिए। भगवान की दया से मेरा टिकट कंफर्म हो गया और मुझे खिड़की वाली सीट मिल गयी। मैं बेहद खुश हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ कि मैंने कोई बहुत बड़ी जंग जीत ली हो। मानो एवरेस्ट पर फतेह हासिल कर ली हो। घर आकर मैंने मां को सारी कहानी सुनाई। मां नाराज़ हुई। तब से अब तक भारी अंधेरी में जंगल वाली सड़क को मैं टालता रहा हूं। खुशी की बात यह है कि अब तो घर के पास ही जियो का टावर लग चुका है। घर बैठे भी तत्काल/प्रीमियम तत्काल मैं कई बार कर चुका हूं।

“हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र
और जाति की उन्नति “

- रामवृक्ष बेनीपुरी

ऑडिट दिवस की कुछ झलकियां



पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के साथ प्रधान महालेखाकार



महामहिम राज्यपाल महोदय दीप प्रज्वलित करते हुए



ऑडिट दिवस के दौरान राष्ट्रीय गान



ऑडिट दिवस के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम

ऑडिट रन की कुछ झलकियां

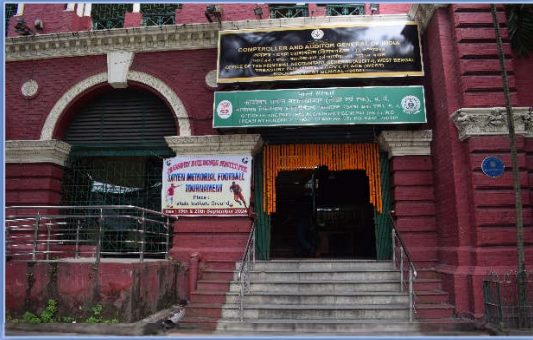


अंतर भा.लेप. एवं ले.वि. क्रिकेट टूर्नामेंट



योग दिवस 2024

हिंदी पखवारा 2024 की कुछ झलकियां







SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I),
पश्चिम बंगाल के आधिकारिक वेबसाइट पर जाने के
लिए कृपया नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें



सोनार बांग्ला 18वां अंक वर्ष - 2024 का पीडीएफ
संस्करण प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए क्यूआर
कोड को स्कैन करें



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2 गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाइट:- www.agwb.cag.gov.in ईमेल पता:- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in